

Yashwant Shikshan Sansthan's

### MIRAJ MAHAYIDYALAYA, MIRAJ

**Criterion – III** 

### 3.2.1 Number of Research Papers Published Per Teacher in the Journals

Notified in U.G.C. Care List during 2023-24



RESEARCH PAPERS PUBLISHED

2023 - 2024

INDEX

Research Papers Published by Faculty: Year 2023-2024

| Name of the Author         | Title of the Research Paper   |
|----------------------------|---|
| Mr. A. A. Bhore            | अल्पसंख्यांक ख्रिस्ती समाज व मानवी हक्क   |
| Mr. A. A. Bhore            | 21 व्या शतकातील मराठी ख्रिस्ती कथेतील   |
|                            | सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ   |
| Mr. A. A. Bhore            | परकीय ख्रिस्ती मिशनरींचे मराठी कोश व  |
|                            | व्याकरण विषयक कार्य एक ऐतिहासिक   |
|                            | आढावा   |
|                            | Theme of Protest and Quest for Identity   |
| Dr. P. A. Patil            | in the short story A Leaf in the Storm  |
|                            | by Lalithambika Antharajanam  |
|                            | Partition Trauma and Nostalgic<br>Yearnings for Homeland as Depicted in   |
| Dr. P. A. Patil            | the Poem <i>I shall return to this Bengal</i>   |
|                            | by Jibanananda Das  |
| D I 0 01: 1                | 21 व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील  |
| Dr. L. S. Shinde           | सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ   |
| M C D W ' 1                | विवाहित आणि अविवाहित महिलांच्या   |
| Mr. S. R. waingade         | सामाजिक स्वातंत्र्याचा अभ्यास   |
| Prof. (Dr.) S. B. Gaikwad, | An Analytical Study of Problems and   |
|                            | Prospects of Pomegranate Farming in   |
|                            | South Maharashtra   |
| Mr. A. B.Paul              | उद्योजकांचे सामाजिक दायित्व धोरणांची  |
| Dr. R. D. Jeur             | महाराष्ट्रातील कामगिरी  |
|                            | Impact of social corporate  |
| Dr. R. D. Jeur             | responsibility CSR on social wellbeing  |
| D 0 D 01: 1                | डॉ.बाबासाहेबँ आंबेडकर यांच्या दलितांच्या  |
|                            | शिक्षणातील सहकारी दलित मित्र शिवराम   |
| Wir. K. N. Dhaie           | कृष्णाजी तीरमारे  |
|                            | Mr. A. A. Bhore Mr. A. A. Bhore Mr. A. A. Bhore  Mr. A. A. Bhore  Dr. P. A. Patil  Dr. P. A. Patil  Dr. L. S. Shinde  Mr. S. R. Waingade  Prof. (Dr.) S. B. Gaikwad, Mr. S.A. Kharat, Mr. S. R. Waingde, Mr. A. B.Patil |

|                              | 3 <del>43-3-3-4-3-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4</del>  |  |
|------------------------------|--|--|
|                              | आंबेडकरोत्तर काळातील दलितांच्या  |  |
| Dr. S. B. Shinde             | शिक्षणातील बाबासाहेब वड्गावक्र यांचे   |  |
|                              | कोल्हापूर जिल्ह्यातील शैक्षणिक योगदान  |  |
|                              | Socio Educational Vision in 21st   |  |
| Mr. A. D. Pachore            | century as Reflected in Chetan   |  |
|                              | Bhagat's novel 'Five point someone'  |  |
| Dr Mrs S P Patil             | Literature Culture and Gender 21st   |  |
| D1. W18. S. 1.1 atti         | century  |  |
| Dr Mrs S P Patil             | Indian Navy and contribution of  |  |
| D1. W18. S. 1.1 atti         | Chhatrapati Shivaji Maharaj  |  |
| Dr. Mrs. S. D. Dotil         | Indian Freedom Movement and Role of  |  |
| DI. WIIS. S. F.Fatii         | Miraj Princely State   |  |
| Dr. R. S. Yalgudre           | Mechanistic study of reaction between  |  |
|                              | 5-sulfosalicylic acid and colloidal  |  |
|                              | MnO2   |  |
|                              | Waugh type Polyoxometalate Enna  |  |
| Dr. P. S. Valgudra           | Molybdomangate IV asAacid Catalyst   |  |
| Dr. R. S. Taiguare           | for Hydrolysis and as an Oxidant for   |  |
|                              | Aspirin: A Kinetic Study   |  |
| Mrs. Shubbangi P. Patil      | Cyanobacteria (BGA) a Boom of  |  |
| wirs. Silubilangi I . I atti | Multiple Resources   |  |
|                              | Study on density functional theory of  |  |
| Dr. Mrs. S. C. Vaday         | MFe2O4( M=CO, Ni, Cu) for electron   |  |
| Di. Wiis. S. C. Tadav        | catalytic hydrogen and oxygen  |  |
|                              | evolution reaction   |  |
|                              | Screening of Blue Green  |  |
|                              | Algae(Cyanobacteria) from different  |  |
| Mrs.Shubhangi P. Patil       | Water Sources and its Biotechnological   |  |
|                              | Applications with reference to Bio   |  |
|                              | sorption of Cr (VI)  |  |
|                              | Dr. Mrs. S. P.Patil Dr. Mrs. S. P.Patil Dr. Mrs. S. P.Patil Dr. R. S. Yalgudre Dr. R. S. Yalgudre Mrs. Shubhangi P. Patil Dr. Mrs. S. C. Yadav |  |

| 22 | Mr. A. B. Patil                              | The Role of Teachers Organization in Implementing National Education Policy 2020   |
|----|--|--|
| 23 | Prof. (Dr.) V.V. Chougule                    | Comparative Functional Genomics Studies for understanding the Hypothetical Proteins in Mycobacterium Tuberculosis Variant Microti 12 |
| 24 | Dr. Mrs. S. P. Patil                         | स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्रीमुक्ती सुधारक<br>पुष्पा भावे  |
| 25 | Dr. Mrs. S. P. Patil                         | स्वराज्य संरक्षक महाराणी येसूबाई   |
| 26 | Dr. Mrs. U. M .Chavan                        | Indian and Western New Political Ideologies  |
| 27 | Dr. Mrs. U. M. Chavan                        | भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य   |
| 28 | Mr. Shinde Balkrishna Anil and Mr.Dolas A.V. | An Overview of Tourism in India 2022   |
| 29 | Dr.Mrs. Shaheen A. Jamadar                   | स्वतंत्र्योत्तर हिंदी लघुकथाओ में दहेज प्रथा   |
| 30 | Dr. Mrs. S.P. Patil                          | भारताच्या शाश्वत विकासातील महिला<br>सबलीकरणाची दिशा: महाराष्ट्र विशेष<br>संदर्भात  |
| 31 | Dr. L.S. Shinde                              | मॉरेशियसमधील मराठी भाषिक संघाचे<br>मराठी भाषेच्या वृद्धीसाठीचे कार्य   |
| 32 | Dr. U.M Chavan                               | भारत आणि शेजारील राष्ट्रे (पाकिस्तान व<br>चीन)   |





Impact Factor-8.632 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# B. Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

September, -2023

ISSUE No - (CDXXVI) 426







Chief Editor Prof. Virag S. Gawande Director

Aadhar Social

Research & Development

Training Institute Amravati

Editor: Dr.Dinesh W.Nichit Principal Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.

**Executive Editor:** Dr.Sanjay J. Kothari Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati



- This Journal is indexed in : Scientific Journal Impact Factor (SJIF) Cosmos Impact Factor (CIF)

For Details Visit To: www.aad

Aadhar Publications

Impact Factor - (SJIF) -8.632

ISSN - 2278-9308

# **B.**Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

September, -2023

ISSUE No - (CDXXVI) 426

## Sciences, Social Sciences, Commerce, Education, Language & Law

### Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

### Dr.Dinesh W.Nichit

Editor

Principal.

Sant Gadge Maharaj Art's Comm, Sci Collage, Walgaon. Dist. Amravati.

### Dr.Sanjay J. Kothari

**Executive-Editors** 

Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati

# **Aadhar International Publication**

For Details Visit To : www.aadharsocial.com © All rights reserved with the authors & publisher



Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXXVI) 426

### अल्पसंख्यांक ख्रिस्ती समाज व मानवी हक्क

प्रा. अविनाश भोरे प्रमुख, मराठी विभाग मिरज महाविद्यालय, मिरज भ्रमणध्वनी क्र. ९८८१४४६३०७

#### प्रस्तावना :-

आपल्या भारत देशाची सांस्कृतिक परंपरा अतिप्राचीन आणि उच्च दर्जाची आहे. भारत हा विविध जाती, धर्म, पंथ यांनी नटलेला देश आहे. विविधतेचे जसे काही फायदे आहेत, तसेच थोडेफार तोटेही आहेत. जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रात सर्वांच्या मुलभूत हक्काची बजावणी करणे, त्यांना न्याय देणे, समान संधी देणे इ. गोष्टींची योग्य अंमलबजावणी करणे कठीण जाते. निरनिराळया लोकांच्या काही घटकांकडे या ना त्या कारणाने दुर्लक्ष होण्याची शक्यता निर्माण होते. अशाच काही घटकांपैकी भारतातील ख्रिस्ती लोकांच्याकडे काही महत्त्वाच्या बाबतीत बरेचसे दुर्लक्ष करण्यात आलेले आहे. आणि यास जवाबदार आहे भारताची विशिष्ट समाजरचना, भारतीय समाजव्यवस्थेत जातीला एक विशिष्ट स्थान आहे आणि जातीभेदामुळेच काही लोक श्रेष्ठ तर काही लोक कनिष्ठ मानले जातात. त्यामुळेच काहींचे मानाने जगण्यास आवश्यक असलेले मुलभूत हक्क सुध्दा हिरावून घेतले जातात. त्यांच्याबाबतीत सर्वच जीवन मुल्यांची पायमल्ली केली जाते. भारतातील समाजाच्या जातीव्यवस्थेमुळे ज्या अनुसूचित जाती-जमाती, भटक्या आणि विमुक्त जाती-जमाती व इतर मागासलेले वर्ग निर्माण झाले. त्यातून काही लोकांनी ख्रिस्ती धर्म स्वीकारलेला आहे. नवीन धर्म स्वीकारल्यामुळे मात्र त्यांची मूळ जात नष्ट झालेली नाही. कोणताही भारतीय मनुष्य धर्मांतरीत जरी झाला तरी ज्या भारतीय संस्कृतीच्या जातीत तो जन्म घेतो तिच जात त्याला पडते. केवळ धर्म बदल्यामुळे त्याच्या मूळ जातीचे रक्त बदलू शकत नाही. पण मागासवर्गीय खिस्ती माणूस एका विशिष्ट प्रकारच्या कोंडीत सापडलेला आहे. या वस्तुस्थितीकडे ब्रिस्तेतर बंधूनी व भारत सरकारने आवश्यक तेवढी दखल घेतलेली नाही. असेच प्रत्ययास येते या पार्श्वभूमीवर भारतीय ख्रिस्ती समाज व मानवी हक्क या दृष्टीने शोध निबंधामध्ये विचार करावयाचा आहे. भारतीय ख्रिस्ती समाज :-

भारतातील अल्यसंख्यांक समाजात ख्रिस्ती समाजाचा समावेश आहे. इंग्रजांच्या आगमनापूर्वीच ख्रिस्ती धर्म भारतात येऊन पोहचला असला तरी वसाहतवादी शक्ती भारतात आपले साम्राज्य प्रस्थापित करू लागल्यावर ख्रिस्ती धर्माचा प्रसार अधिक होऊ लागला. भारतात ख्रिस्ती धर्माचा प्रवेश ख्रिस्त जन्माच्या नंतरच्या पहिल्या-दुस्-या शतकांतच झाला. असे मानण्यात येते. सिरियन चर्चचे अनुयायी हे भारतातील पहिले ख्रिस्ती समजले जातात. भारतात आसे प्रवेश केला. या प्रवेशाची तीन कालखंडात विभागणी करता येईल. प्रथम इ. स. ५२ साली संत थोमा ते अठराव्या शतकाचा आहे. याही काळात अनेकानी ख्रिस्ती धर्म अंगीकारला या दोन्ही कालखंडात ख्रिस्ती झालेले लोक भारतातील सर्व समाजातील व थरातील होते. ख्रिस्ती झां अंगीकारला या दोन्ही कालखंडात ख्रिस्ती झालेले लोक भारतातील सर्व समाजातील व थरातील होते. ख्रिस्ती झांलेल्या लोकांत श्रीमंत, गरीब, स्पृश्य, अस्पृश्य अशा सर्वच प्रकारच्या लोकांचा समावेश होता. ख्रिस्तीकरण झांलेल्या लोकांचा तिसरा कालखंड हा १९ व्या व २० व्या शतकांचा तुच्छ लेखणे, त्यांची अवहेलना करणे, त्यांना परके समजणे निश्चितच उचित ठरणार नाही. ते मानवी होणार नाही. तर ते भारतीय घटनेच्या विरूद्ध आहे. भारतीय समाजात जातिव्यवस्था फारच दृढमूल झाल्यामुळे स्पृश्यांकडून अन्पृश्यांना लोकांची काय दुर्दशा झाली असेल. त्यांचे आजने स्थान अस्पृश्यांतील अस्पृश्य व बहिष्कृतांतील बहिष्कृतांचे आहे.

अस्पृश्यांतून ख्रिस्ती झालेल्या बांधवांना विविध सवलतीपासून वगळण्यात आलेले आहे. हा त्यांच्यावर होणारा अन्याय आहे. धर्मस्वातंत्र्याची ग्वाही देणाऱ्या भारत देशात केवळ धर्मातरामुळे ख्रिस्ती बांधवांना सर्वच सवलतीपासून वंचित ठेवणे हे सुसंस्कृतीचे लक्षण मानायचं काय ? न्याय, स्वातंत्र्य समता व बंधुत्त्व ही मुलभूत तत्त्वे मानणाऱ्या व त्यांचा सतत उदो-उदो करणाऱ्या भारताच्या घटनेला तरी न्याय देणे शक्य होणार आहे काय ? ख्रिस्तेतर मागासवर्गीयांना मात्र निश्चितच न्याय देण्यात आलेला आहे. ख्रिस्ती बांधवांच्या संदर्भात घडत आहे ते मानवतेची

ISSN: 2278-9308 September, 2023

#### संदर्भ :-

- उपेक्षित ख्रिस्ती समाज, प्रगत पदवीधर संघटना, मार्ग प्रकाशन, पुणे, पहिली आवृत्ती: एप्रिल १९७९
- श्री स्ति आचार्य: काल आज आणि उद्या, आचार्य स.ना. सूर्यवंशी,
   दी मराठी थिऑलॉजिकल टेक्स वुक किमटी पुणे, पहिली आवृत्ती: १९८९
- अल्पसंख्यांक बाद एक धोका, मुझफ्फर हुसेन,
   चंद्रकला प्रकाशन पुणे, पहिली आवृत्ती: २००८
- ४) मानवी हक्क आणि सामाजिक न्याय, प्रा. पी. के. कुलकर्णी, डायमंड पब्लिकेशन्स, पुणे, पहिली आवृत्ती: २०१३
- परिवर्तनासाठी धर्म, फादर फ्रान्सिस दिब्रिटो,डिंपल पब्लिकेशन, ठाणे, पहिली आवृत्ती: १९९०





188N 2849 688x IMPACT FACTOR 7.867

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

Smt. Akkatai Ramgonda Patil Kanya

Mahavidyalaya, Ichalkaranji

Tal-Hatkanangale, Dist-Kolhapur, Maharashtra-416115
Affiliated to Shivaji University, Kolhapur
Reaccredited by NAAC with 'B+ Grade (2.57 CGPA)

ONE DAY NATIONAL MULTILINGUAL SEMINAR

'Socio-Cultural Context in 21<sup>st</sup> Century English, Hindi and Marathi Literature'

Saturday, 30<sup>th</sup> September, 2023

### ORGANISED BY

Departments of Marathi, Hindi, English and IQAC

### Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor
Prof. (Dr.) Trishala Kadam

### Editors

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)
Mr. Sudhakar Indi (Hindi)
Mr. Dipak Sarnobat (English)
Minaj Naikawadi

# Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal ISSN 2349-638x Impact Factor 7.367 Website:-www.aiirjournal.com

### Theme of Special Issue

## Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature

(Special Issue No.128)

### **Chief Editor**

Dr. Pramod P. Tandale

### **Executive Editor**

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

### **Editors**

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)
Mr. Sudhakar Indi (Hindi)
Mr. Dipak Sarnobat (English)
Minaj Naikawadi

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD - DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc.; Without prior permission.

# Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

ISSN 2349-638x

Special Issue No.128

Sept. 2023

### Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

### **Section Editors:**

- 1) Dr. Vitthal Naik (Hindi)
- 2) Mrs. Rameshwari Kudale (English)
- 3) Mr. Sandip Patil (English)
- 4) Mrs. Sunita Powar (English)
- 5) Dr. Priyanka Kumbhar (Marathi)
- 6) Mrs. Pratibha Pailwan (Marathi)

| Special Issue Thome: Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature (Special Issue No.128) ISSN 2349-638x Impact Factor 7.367 |                               |  | Sept. 202 |
|---|-------------------------------|--|-----------|
| Sr.No.  | Author Name                   | Research Paper / Article Name  | Page No   |
| 106   | प्रा. प्रदिप प्रकाश कदम       | एकविसाट्या शतकातील स्त्रीमनाचे पदर उलघडणारे<br>देवबाभळी संगीत नाटक : एक चिकित्सा                     | 400       |
| 107   | प्रा.डॉ.पांडुरंग जगन्नाथ ऐवळे | 'एकटी ' काव्यसंग्रहातील सामाजिक व सांस्कृतिक<br>संदर्भ   | 403       |
| 108   | डॉ संभाजी धोंडीराम कदम        | राव कादंबरीतील सामानिक संदर्भ  | 407       |
| 109   | प्रा. निलेश नामदेव कांबळे     | २१ व्या शतकातील दिलत मराठी कादंबरीतील<br>सामाजिकता व सांस्कृतिक संदर्भ                               | 410       |
| 110   | प्रा. उदय बाळासो शिंदे        | २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतून येणारे धनगर<br>समाजतील स्त्री चित्रण                                | 412       |
| 111   | डॉ.तुळशीराम उकिरडे            | दलित कवितेतील सामाजिकता  | 414       |
| 112   | डॉ. मांतेश हिरेमठ             | समकालीन कवितेतील बदलते सामाजिक व<br>सांस्कृतिक संदर्भ  | 418       |
| 113   | प्रा.डॉ.बाबासाहेब नाईक        | 21 वे <mark>शतकातील स्त्रियांच्या स</mark> मस्या (रोहिणी<br>कुलकर्णी यांच्या कादंब-यांच्या आधारे)    | 422       |
| 114   | डॉ.कु.कोकिळा हनुमंत चांगण     | २१ व्या शतकातील स्त्रीलिखित <mark>मराठी कथे</mark> तील काही<br>सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ           | 425       |
| 115   | डॉ.लक्ष्मण शिंदे              | २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील सामाजिक -<br>सांस्कृतिक संदर्भ                                      | 428       |
| 116   | प्रा.डॉ.सविता अशोक व्हटकर     | २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील शेतकऱ्यांच्या<br>जीवनातील सामाजिक संदर्भ (बारोमासच्या<br>अनुषंगाने) | 433       |
| 117   | डॉ प्रियांका कुंभार           | व्यक्तिचित्रणात्मक ललितगद्यः 'लोकपरंपरचे<br>शिल्पकार'  | 437       |
| 118   | डॉ.वैशाली श्रीकांत गुंजेकर    | २१ व्या शतकातील ग्रामीण कादंबरी  | 441       |
| 119   | श्रीमती प्रतिभा भारत पैलवान   | 'सीतायन' या लिलत संग्रहातील सामाजिक व<br>सांस्कृतिक संदर्भ   | 445       |
| 120   | श्री.रघुनाथ चंदर गवळी         | आदिवासी कवितांमधील सामाजिक समस्यांचे चित्रण  | 448       |
| 121   | प्रा.डॉ.देसाई अजित यल्लाप्पा  | एकविसाव्या शतकातील शिक्षणव्यवस्थेचे वेगळे रूप<br>दाखीवणारी कादंबरी म्हणजे निशाणी डावा अंगठा          | 452       |
| 122   | प्रा. अविनाश भोरे             | २१ व्या शतकातील मराठी खिस्ती कथेतील सामाजिक<br>व सांस्कृतिक संदर्भ                                   | 455       |

## २९ व्या शतकातील मराठी ग्रिम्सी कथेतील सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ

प्रा. अविनाश भारे प्रमुख, मराठी विभाग मिर्न महाविद्यालय, मिर्

#### प्रस्तावना:-

... स्वातंत्र्यपूर्व ते स्वातंत्र्योत्तर काळामध्ये अनेक ख्रिस्ती लेखकांनी कथा, कादंबरी, कविना, चरित्रे, आत्मवीन लितलेखन, संशोधन, व्याकरण, कोशनिमित्ती असे वैविध्यपूर्ण लेखन केले. मराठी ख्रिस्ती साहित्य आणि मराठी माणा यांज भावबंध अतूट आहे. या अतूट भावबंधातून ख्रिस्ती कथाकारांनी मराठी कथा वाड्.मय समृद्ध केले आहे. कथेच्या माध्यमातः अनेक खिस्ती कथालेखकांनी जीवनातील अनेक स्थित्यंतरे आपल्या कथांमधून चित्रित केलेली आहेत. २००० नेतरका कालखंडापासून मराठी खिस्ती कथेने नव्या जाणिवा, नवे संघर्ष प्रकर्षाने दाखिवले त्यातून समाजमनात नवी जागृती निर्माण होव लागली. मानवी जीवनाचे सखोल व्यापक दर्शन ख्रिस्ती कथा लेखकांनी आपल्या कथांमधून दाखविण्याचा प्रयत्न केलेला दिसन येतो. ही कथा २१ व्या शतकाच्या दृष्टीने सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भात कशी वैशिष्ट्यपूर्ण आहे. याचा ऊहापोह क्व करावयाचा आहे. त्यासाठी काही उद्दिष्टे समोर ठेऊन प्रस्तुत विषयविवेचन करणे अपेक्षित आहे.

उद्दिष्टे:- प्रस्तुत शोधनिबंधाची उद्दिष्टे पुढीलप्रमाणे आहेत.

- १) २१व्या शतकातील खिस्ती समाज जीवनाचे बदलते संदर्भ पाहाणे.
- २) खिस्ती समाज जीवनाचे धार्मिक चित्रण पाहाणे.
- ३) खिस्ती व्यक्ती आणि समाज यांच्या संघर्षाचे चित्रण पाहाणे.
- ४) खिस्ती व्यक्ती आणि समाज यांच्यातील सांस्कृतिक संबंध तपासणे.
- ५) ख्रिस्ती व्यक्ती आणि समाज यांची विचारधारा लक्षात घेणे.

मराठी खिस्ती कथेतील सामाजिक व सांस्कृतिकसंदर्भ खिस्ती कथेमध्ये कशी आलेली आहेत. हे तपासण्यासाठी दिलेल्या उद्दिष्टांचा विचार होणे क्रमप्राप्त आहे. यासाठी प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी वापरलेली संशोधन पद्धती खालील प्रमाणे आहे. संशोधन पद्धती:-

प्रस्तुत अभ्यास विषयासाठी माहितीचे संकलन, नमुना निवड आणि चिकित्सक परीक्षण ही अभ्यासपद्धती वापरलेलो आहे. या पद्धतीचा अवलंब करून अचूक तथ्य आणि निरीक्षणापर्यंत पोहचण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोधनिबंधामध्ये केलेला आहे.

### मराठी ख़िस्ती कथेतील समाज जीवनाचे बदलते संदर्भ:-

साहित्य आणि समाज यांचा परस्परसंबंध असतो. कोणत्याही कलाकृतीवर तत्कालीन काळातील समाज आणि संस्कृती यांचा उसा उमटत असतो. २१व्या शतकामध्ये जागतिकरणामुळे सर्व मानवी जीवन बदलून जात आहे<mark>. नव्या पिढीला</mark> नव्या जाणिवा नवी जीवनदृष्टी प्राप्त होत आहे. कथा वाड्.मयात नव्या वाटा कथा लेखकास मिळाल्या. समस्या नवे संघर्ष प्रकर्षाने साकारले गेले. त्यातूनच् समाज मनात नवी जागृती निर्माण होऊ लागली. मानवी जीवनाचे व्यापक व सखोल दर्शन खिस्ती मराठी कथांमधून झालेले दिसून येते. अनेक खिस्ती लेखकांनी मराठी कथेचे दालन समृद्ध केले आहे. त्या लेखकांमध्ये चारूदत्त रुकडीकरांचे नाव अगत्याने घ्यावे लागेल. रुकडीकरांनी आपली कथा बीज 'बायबल' मधून वेचली, तशी ती सभोवताली वावरणाऱ्या व्यक्तीतून आणि सामाजिक परिस्थितीतूनही घेतली. 'प्रेरणा' नावाचा त्यांचा कथासंग्रह 2000 मध्ये प्रकाशित झाला. त्यांच्या कथांमध्ये माणसातील चांगुलपणावर प्रकाश टाकला आहे. वरकरणी वाईट <mark>वागणारा माणूस</mark>ही त्याच्यातील चांगुलपणाला स्पर्श केला तर पश्चाताप करून सरळमार्गी होतो. अशी बायबलच्या विचाराची धारणा रुकडीकरांच्या कथेमध्ये प्रतिबिंबित होते, 'विस्कटलेला संसार', 'बरब्बा', 'परिवर्तन'या कथांमध्ये खिस्ती विचारधारेतील पश्चात्तापाचे परिणाम चित्रित झालेले पाहावयास मिळतात. थोडक्यात, रुकडीकरांच्या कथा व्यापक धार्मिक आणि सामाजिक आशयाच्या झालेल्या आहेत. अनुभवाची व्यापकता हे त्यांच्या कथेचे बलस्थान आहे. येशू खिस्तावरील अढळ श्रद्धा ही त्यांच्या लेखनामागील प्रमुख

डॉ. उषादेवी कोल्हटकर यांच्या '**फुलांना घर नसतं**' (२००१) या कथासंग्रहामधून आधुनिकीकरणाच्या आणि जागतिकीकरणाच्या विळख्यात अडकलेला समाज आणि त्याचे भावविश्व प्रकट झाले आहे. स्वातंत्र्य आणि अम<mark>र्याद स्वातंत्र्य</mark> यांमध्ये एक सीमा नसेल तर त्याचे परिणाम काय होतात हे 'श्वास'या कथेत निवेदकाने दाखवून दिले आहे. तसेच घटस्फोटीत

जीवनावर आधारित असणाऱ्या या कथा त्यांची व्यथा-वेदना व्यक्त करतात. त्यांच्या जीवनातील संघर्ष दाख्वताना त्यांना कथात्मक स्वरुप देऊन त्या वाचनीय व मनोरंजक झाल्या आहेत. तसेच त्यातील संदेश वाचकांपर्यंत पांहोचिवण्यात लेकिका पूर्णपणे यशस्वी झाल्या आहेत. या कथांमध्ये भेटणारी प्रत्येक व्यक्तीची जीवनाकडे पाहाण्याची स्वतंत्र्य हुन्दी आहे.

सारा, तामार, मरीया, इत्यादी स्वियांच्यासत्यकथांतृन त्या काळाची संस्कृती, स्वीचे स्वातंत्र्य, व्यक्तिमत्त्व शंची पहिलो मिळते. देवाविषयीचे कुतृहल, देवाची ओढ, त्याची प्रिती, विश्वास यांना स्त्रियांनी दिलेला प्रतिसाद यांचे वर्णन म्हणने त्यांचा आत्मविश्वास या अठरा कथांमधून दाखविला आहे. स्वियांच्या जिकाळ्याचे विषय, समस्या, भावना, या सारख्याच अगतात मानासिक, सामाजिक अवहेलनेमुळे तीव वेदना होतात. बायबलमधील या कथांतृन वेगवेगळ्या स्त्रिया, वेगळ्या परिस्थिति व स्वरुपात वाचकांना भेटतात, त्यांची व्यक्तिमत्त्वे जाणून घेण्याच्या दृष्टीने बायबलचा अभ्यास करणाऱ्या वाचकांना अप्रकृति व स्त्रियात स्वरुपात वाचकांना अप्रवृत्ति स्वरूपात वाचकांना स्वरुपात वाचकांना अप्रवृत्ति स्वरुपात स्व

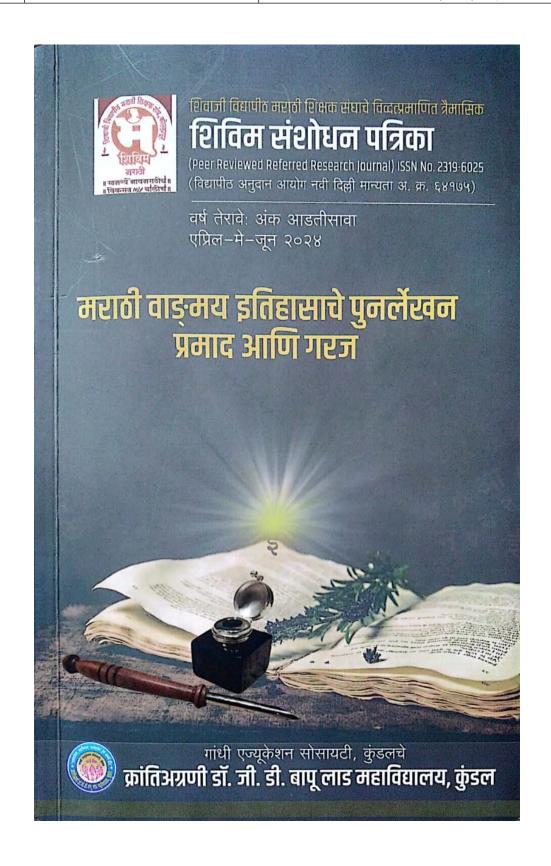
प्रा. डॉ. सुभाष पाटील यांचा 'चर्च भोवतालच्या कथा' (२०२१) मराठी खिस्ती कथा साहित्यातील महत्वाचा कथा साह आहे, खिस्ती समाजजीवन व संस्कृतीचे विविधांगी चित्रण त्यांनी केले आहे. खिस्ती जीवनात नाताळ ताऱ्याचे महत्त्व विज्ञह करणारी कल्पना वेगळीच आहे. तर 'एकच व्यथा' ही कथा नाताळाचा सण संपत्यानंतर लेखकाच्या मनातील निराशा प्रकट करते. खिस्ती लोकात नाताळ हा तसा एकमेव उत्सव. तो जवळ येऊ लागला की, मनाची घालमेल सुरू होते. सणाची सजावट करणे सुरू होते. कॅरोल पाट्यां, नाटकांच्या तालमी, खाद्यपदार्थ अशा कितीतरी अंगाने खिस्ती समाज ढवळून निष्तां, नाताळानिमित्त मंदिरात आणलेल्या सजावट वस्तूंच्यामार्फत लेखकाने स्वतःच्या मनातील व्यथा कथन केली आहे. 'कोनशिलेख घाँडा' या रूपक कथेमध्ये अनेक खिस्ती धार्मिक मनाची स्थित्यंतरे दाखविणारी आहे. चर्चमध्ये धार्मिक निष्ठेने जाणारे लोक कोणत्याही अडचर्णीना बळी पडत नाहीत. ते सहनशील, संयमी असतात. ईश्वराच्या भक्तीमध्ये स्वतःला धन्य मानतात. असे लोक धर्माचे खरे आधार असतात. हे लेखकाला कथेद्वारे सुचवायचे आहे. 'देवळातले पश्पक्षी' ही कंपाऊंडमधील खिस्ती रहिवाशांचे मनोवेधक दर्शन घडविणारी कथा आहे. 'निर्माल्य स्वीकार' नावाच्या कथेतील मायकल येशूच्या शिकवणुकोत्त स्वतःमधील गुन्हेगारीवृत्तीमधून बाहेर पडतो. व स्वतःचे परिवर्तन घडवून आणतो आणि नव्या उमेदीने जीवन जगतो. खिस्ती विचाराचा प्रभाव व्यक्त करणारी अशी कथा खिस्ती समाजाची जीवनपद्धती स्पष्ट करते.

निष्कर्ष :- २१ व्या शतकातील मराठी खिस्ती कथाकारांनी समाजातील परिवर्तनाचा वेध घेण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. याचा अभ्यास करताना काही निष्कर्ष समोर येतात ते खालीलप्रमाणे.

- २१ व्या शतकातील मराठी ख्रिस्तीकथालेखकांनी आपल्या कथांचा आशय सभोवती घडणाऱ्या सामाजिक परिस्थिती वव्यक्तींमधून घेतलेला आहे.
- २००० नंतर जीवनव्यवहार, विचारप्रणाली यांमध्ये जे बदल झाले ते खिस्तीकथाकारांच्या कथेत आलेले आहेत.परिवर्तनाच्या बदलाचा वेध घेत खिस्तीसमाजाचे जीवनवास्तव मांडण्याचा प्रयत्न कथालेखकांनी केलेला आहे.
- ३) समाज सुधारणे बरोबर मानवी प्रतिष्ठा हे खिस्ती धर्माचे मूल्य कथाकारांनी कथांमधून जोपासले आहे.
- ४) खिस्तीकथालेखकांचे अनुभवविश्व, निष्ठा ही मराठी भाषेच्या मूळ प्रवाहांशी जोडणारी आहे. त्यांच्या कथांचा विषयिखसी समाज, धर्म यांच्या निगडीत असला तरी अभिव्यक्ती मराठी आहे. खिस्तीधर्माचे संस्कार आणि मराठी संस्कृती यातून संस्कारीत झालेली भाषाशैली कथांमधून दिसून येते.
- ५) खिस्तीकथाकार आपल्या कथांमधून आधुनिक समाजातील जीवनाचे विविध पैलू उलगडण्याच प्रयत्न करतात.
- ६) वास्तवदर्शी जीवन दर्शन, प्रबोधनाची प्रेरणा, संवेदनशीलता ख्रिस्तीजीवनसंस्कृतीचे मर्मउलगडण्याचा प्रयत्न कथाकार करतात.
- ७) हिंदू आणि खिस्तीसंस्कृतीचे एकत्रीकरणही खिस्तीकथाकारांची बलस्थाने आहेत हे त्यांच्या कथा लेखनातून दिसून येते.

#### संदर्भ:-

- १) सुनील आढाव, धर्म खिस्ताचा, विचार साहित्याचा!', दिलीपराज प्रकाशन पुणे, प्रथमावृत्ती २००३
- २) 'ललित'कथा विशेषांक, ऑगस्ट २०१३
- ३) डॉ. सुभाष पाटील, 'मराठी खिस्ती साहित्य : उगम आणि विकास', चेतक बुक्स, पुणे, आवृत्ती पहिली, २०<mark>१६</mark>
- ४)संपादक,डॉ. गजानन हेरोळे, नवदोत्तर मराठी कथा: रंग आणि अंतरंग, गोवा प्रकाशन, औरंगाबाद, प्रथमा<mark>वृत्ती,२०१८</mark>
- ५) कामिल पारखे, 'क्रुसाभोवतालचा मराठी समाज', चेतक बुक्स प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती २०२१





शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघाचे विद्यत्प्रमाणित त्रैमासिक

# शिविम संशोधन पत्रिका

(Peer Reviewed Referred Research Journal) ISSN No. 2319-6025 (विद्यापीठ अनुदान आयोग नवी दिल्ली मान्यता अ. क्र. ६४९७५) वर्ष तेरावे: अंक अडतीसावा एप्रिल-मे-जून २०२४

# मराठी वाङ्मय इतिहासाचे पुनर्लेखन : प्रमाद आणि गरज

| Notice billet   | 1031   |
|---|--|
| <b>॰</b> संपाद  |  |
| प्रा. (डॉ.) नंद   | कुमार मोरे   |
| • संपादक व  | मंडळ ●   |
| प्रा. (डॉ.) जयवंत दळवी  | डॉ. सुभाष पाटील                                    |
| डॉ. देवानंद सोनटक्के  | डॉ. बळवंत मगदूम                                    |
| ———● अतिथी सं   | पादक •   |
| प्रा. (डॉ.) धनंजय होनमाने                                       | डॉ. नवनाथ गुंड                                     |
| प्रा. (डॉ.) सुरेश शिंदे प्रा. (डॉ.) सं                          | भाजी कदम 🛮 डॉ. संपत पार्लेकर                       |
| ——— प्रकाश  | <u>क</u> •   |
| डॉ. भरत   |  |
| अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ मरा<br>द्वारकाधीश,साईनगरी, नागठाणे, त | ठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर<br>त. जि. सातारा– ४१५ ५१९ |
| ———• <u>मु</u> द्रव   | ō •  |

ही संशोधन पत्रिका प्रकाशक डॉ. भरत जाधव यांनी शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर यासाठी लक्ष्मी प्रिंटींग प्रेस, कुंडल येथे छापून दूरकाधीश, साईनगरी, नागठाजे, ता. जि. सातारा ४९५ ५९६ येथे प्रकाशित केली, या पत्रिकेत प्रकट झालेल्या मतांशी संपादक, प्रकाशक, सङ्गागार व मुद्रक सहमत असतीलय असे नाही

लक्ष्मी प्रिंटींग प्रेस, कुंडल ता. पलूस, जि. सांगली- ४१६३०९

# अनुक्रमणिका

| विलत साहित्य इतिहासाच्या<br>पुनर्लेखनाची आवश्यकता                                | श्री. विलास सखाराम सुर्वे      | १५३ |
|--|--------------------------------|-----|
| परकीय खिस्ती मिशनरीचे मेराठी काश<br>स्थाकरण विषयक कार्य: एक ऐतिहासिक आढावा       | प्रा. अविनाश भोरे              | १५९ |
| प्रतिसरकार : स्वातंत्र्य लढ्यातील एक<br>हर्जधीत सोनेरी पान                       | डॉ. प्रविणकुमार भरतकुमार लुपणे | १६६ |
| कुसुमावती देशपांडे यांची मराठी कावंबरीच्या<br>इतिहासलेखनामागची भूमिका आणि स्वरूप | डॉ. सुभाष बसगौंडा पाटील        | १७२ |
| महिला क्रांतिकारकांचे स्वातंत्र्य लढ्यातील<br>योगदान : पुनर्लेखनाची गरज          | प्रा. डॉ. मानसी जगदाळे         | १८२ |
| अनुवादित साहित्याच्या इतिहासाचे<br>पुनर्लेखन                                     | डॉ. प्रियांका कुंभार           | १८७ |
| मराठी वाङ्मयेतिहासातील नाट्यविषयक<br>नोदीच्या मर्यादा आणि नव्या शक्यता           | डॉ. बळवंत मारुती मगदुम         | 388 |
| प्रवासवर्णन वाङ्मयप्रकारातील दुर्लीक्षत<br>प्रवासलेखिका                          | डॉ. वैशाली श्रीकांत गुंजेकर    | २०० |
| मराठी साहित्य समीक्षेचा इतिहास   | डॉ. कैलास सोनू महाले           | २०९ |
| मराठी भाषांतरित साहित्याचा इतिहास<br>(चामा महार या कादंबरीच्या अनुषंगाने)        | डॉ. शर्मिला बाळासाहेब घाटगे    | २१९ |
| सांगली जिल्ह्यातील निवडक कवींच्या<br>साहित्यकृतींचा अभ्यास (२०११ ते २०२२)        | प्रा. (डॉ.) सविता अशोक माळी    | २२५ |
| प्राचीन मराठी साहित्यातील वंचित<br>संत-रोहिदास                                   | डॉ. विठ्ठल नामदेव रोटे         | २३५ |
| वाङ्मयेतिहासाचे पुनर्लेखन :<br>डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे साहित्य                | प्राचार्य,झॅ.शिवलिंग मेनकुदळे  | २४० |
| वाङ्मयेतिहासाचे पुनर्लेखन आणि<br>मराठी-कानडी अनुबंध                              | प्रा. गौतम गणपती काटकर         | २४६ |
| सत्यशोधकीय साहित्य व<br>वाङ्मयेतिहासाचे पुनर्लेखन                                | डॉ. अरूण शिंदे                 | २५५ |
| तमाशातील वगनाट्याचे लेखन आणि<br>त्याच्या मर्यादा                                 | डॉ. संपतराव रामचंद्र पार्लेकर  | २७० |
| सुफी संत जीवनदृष्टी आणि<br>मध्ययुगीन मराठी                                       | प्रा. डॉ. सुभाष वाघमारे        | २७६ |
| मराठी भाषांतरित कादंबरीचा इतिहास   | डॉ. आशालता नारायण खोत          | २८७ |
| वंचितांचे ग्रामीण साहित्य  | नर्मदा रामा कुराडे             | २९३ |

<sup>——</sup> ISSN No.2319-6025 🛊 मराठी वाङ्मय इतिहासाचे पुनर्लेखन 👼 अठरा 🕶

वर्षानंतर शक्य आहे. ह्या देशात धर्मप्रसार करता यावा म्हणून भाषाविषयाकडे त्यांनी लक्ष दिले हे इथे जरी खरे असले तरी भाषेचा भाषा म्हणून अभ्यास करण्याची दृष्टी मराठी भाषा अभ्यासकांना मिळाली हे सत्य आहे.

- 2) युरोपियन ख्रिस्ती लोकांना मराठी भाषा अवगत व्हावी व भारतीय ख्रिस्ती लोकांना युरोपियन भाषांचे ज्ञान व्हावे यासाठी मराठी कोश व व्याकरण या संबंधीच्या ग्रंथाची निर्मिती झालेली दिसून येते. भाषेचे कोश आणि व्याकरण ह्या दोन्ही निर्मिती इंग्रजांच्या काळात होऊन मराठीचा पद्धतशीर अभ्यास होण्यास प्रारंभ झाला.
- ३) बायबलचे पहिले मराठी भाषांतर हा मराठी भाषेतील बोलीभाषांच्या अभ्यासाचा प्रारंभ बिंदूमानावा लागेल. मराठी भाषेचा भाषा म्हणून अभ्यास करण्याची वृष्टी मराठी भाषा अभ्यासकांमध्ये नव्हती. वाङ्मयाचा अभ्यास म्हणजे भाषेचा अभ्यास असे सरसकटपणे मानले जात होते. ख्रिस्ती धर्माच्या संपर्कामुळे मराठी भाषा अभ्यासकांना ही दृष्टी हळू-हळू येत गेली.
- ४) सर्वसामांन्य लोकांना ख्रिस्तीधर्म सांगायचा, तर त्या लोकांची भराठी भाषा तिचे बारकावे आत्मसात करायला हवेत म्हणजे धर्मप्रसार व धर्मकार्यासाठी मराठी भाषेचा अभ्यास करणे आवश्यक ठरले. त्यातून मराठी भाषेच्याकोश पद्धतीस सुरवात होताना दिसते.
- ५) मराठी भाषेच्या व्याकरणाचा ढाचा, मांडणी, व्यवस्था लक्षात घेऊन मराठी भाषेच्या व्याकरणाच्या अभ्यासाला नवी दृष्टी लाभली. संदर्भ:-
- १) परकीय ख्रिस्ती मिशनरींचे मराठी भाषाविषयक कार्य डॉ. अनुपमा उजगरे, परमित्र पब्लिकेशन्स, ठाणे प्रथमावृत्ती: फेब्रुवारी, २००८.
- २) ख्रिस्ती मराठी वाङ्मय डॉ. गंगाधर मोरजे, प्रकाशक, अहमदनगर कॉलेज, अहमदनगर, प्रथमावृती: जून १९८४
- ३) महाराष्ट्रातील सांस्कृतिक परिवर्तन आणि ख्रिस्ती धर्मीय-डॉ. गंगाधर मोरजे, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई प्रथमावृती: में १९९२
- 8)युरोपियनांचा मराठीचा अभ्यास व सेवा श्रीनिवास पिंगे, प्रकाशक- श्री. म. पिंगे, औरंगाबाद, प्रथमावृती: १९६०



## परकीय ख्रिस्ती मिशनरींचे मराठी कोश व्याकरण विषयक कार्य : एक ऐत्याहासिक आढावा

**प्रा. अविनाश भोरे** मिरज महाविद्यालय, मिरज

प्रास्ताविक:-

हिंदस्थानच्या चालीरीतीचा अभ्यास करून माहितीपूर्ण ग्रंथ अनेक विद्वानांनी लिहिले. परंतु हिंदुस्थानात राहून इथल्या भाषांचा अभ्यास करून इथल्या भाषांमध्ये ग्रंथ लिहिणारे, पहिले परकीय ख्रिस्ती मिशनरी होत. ब्रिटिशांनी दिडशे वर्षे हिंदुस्थानावर सत्ता चालवली. त्याआधीपासून मिशनरींचे कार्य इथे चालू होते. धर्मविषयक कार्याबरोबरच भाषाविषयक कार्य त्यांनी मोठ्याप्रमाणावर केले. या कार्याकडे पूर्वग्रहद्षित मनाने न बघता वस्तुनिष्ठपणे बघणे आवश्यक आहे. हिंदस्थानला मायावादाकडून इहवादाकडे नेण्यात, सामाजिक स्वातंत्र्याच्या विचाराबरोबर वैज्ञानिक दृष्टीचा आणि शिक्षणाबरोबर औद्योगिक आणि व्यावसायिक शिक्षण देण्याचा नवा विचार देण्यात त्यांचा फार मोठा वाटा आहे. धर्मावरची निष्ठा मिशनरींना त्यांच्या कार्यासाठी उद्युक्त करत गेली. या देशात धर्मप्रसार करता यावा म्हणून मिशनरींनी भाषाविषयाकडे लक्ष दिले. इथल्या भाषा आत्मसात करता याव्यात म्हणून कोशाची आणि व्याकरणाची निर्मिती केली. युरोपियनांना मराठी शिकता यावे ह्याकडे त्यांनी लक्ष दिले. पण भारतीयांच्या शिक्षणाचा विचार करताना ज्ञानाची कवाडे वर्षानुवर्षे ज्यांच्यासाठी बंद होती अशा वर्गाचा विचार प्रथम केला तो देखील मिशनरींनीच. या शोधनिबंधामध्ये परकीय मिशनरींच्या मराठी भाषाविषयक सांस्कृतिक संदर्भ पाहताना मराठी कोश निर्मितीचे कार्य महत्त्वाचे ठरते. स्थानिक भाषा शिकण्यासाठी साहयभूत होतील असे त्या भाषांचे व्याकरण शिकवणारे ग्रंथ व शब्दकोश उपलब्ध नव्हते. त्यामुळे मिशनरींच्या धर्मप्रसाराची सुरवात कोशनिर्मितीने आणि व्याकरण निर्मितीने झाली. त्यांचा या भाषिक कार्याचा आढावा येथे घायचा आहे.

उद्दिष्ट्ये:-

प्रस्तुत शोधनिबंधाची उद्दिष्टये खालील प्रमाणे आहेत.

१) बायबलच्या मराठी भाषांतराने मराठीच्या भाषिक स्तरावर झालेला परिणाम.

👥 ISSN No.2319-6025 👸 मराठी वाङ्मय इतिहासाचे पुनर्लेखन 🧂 १५९ 🗨

| by Lalithambika Antharajanam | 4 | Dr. P. A. Patil | Theme of Protest and Quest for Identity in the short story <i>A Leaf in the Storm</i> by Lalithambika Antharajanam |
|------------------------------|---|-----------------|--|
|------------------------------|---|-----------------|--|

Impact Factor-8.632 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# B. Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

September, -2023
ISSUE No - (CDXXVI) 426







**Chief Editor** Prof. Virag S. Gawande Director

Aadhar Social

Research & Development

Training Institute Amravati

Editor: Dr.Dinesh W.Nichit Principal Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.

**Executive Editor:** Dr.Sanjay J. Kothari Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm.Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati



This Journal is indexed in : Scientific Journal Impact Factor (SJIF) Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To: www.aad

Aadhar Publications

Impact Factor - (SJIF) -8.632

ISSN - 2278-9308

# **B.**Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

September, -2023

ISSUE No - (CDXXVI) 426

Sciences, Social Sciences, Commerce, **Education, Language & Law** 

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr.Dinesh W.Nichit

Editor

Principal.

Sant Gadge Maharaj Art's Comm, Sci Collage, Walgaon. Dist. Amravati.

Dr.Sanjay J. Kothari

**Executive-Editors** 

Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati

# **Aadhar International Publication**

For Details Visit To : www.aadharsocial.com © All rights reserved with the authors & publisher

|     | 2023   |    |
|-----|--|----|
| 92  | महाराष्ट्र का लोकसंगीत प्रा. डॉ. जगन्नाथ के. इंगोले  | 19 |
|     | 'ताम्रपट' आणि 'झाडाझडती' कादंबरीतील संवादरूप   | 20 |
| 95  | र्जन धर्मीय संस्कृतीचा अञ्चल के कि   | 21 |
| 100 | जैन धर्मीय संस्कृतीचा अभ्यास – ऐतिहासिक वारसा <b>डॉ.अब्दुलसमद बादशाह शेख</b><br>ग्रामीण पर्यटनाचे सामाजिक परिमाण   | 22 |
| 104 | 41. 341/11 4184b   | 23 |
| 107 | राजर्षी शाहु महाराज आणि स्त्री मुक्ती प्रा.डॉ.हिराचंद चोखाजी वेस्कडे   | 43 |
| 111 | बीड तालुक्यातील साक्षरता एक भौगोलीक अभ्यास<br>प्रा. डॉ. आसाराम चव्हाण  | 24 |
|     | राष्ट्रीय ग्रंथालय संकल्पनात्मक अध्ययन: विशेष संदर्भ भारताचे राष्ट्रीय ग्रंथालय  | 25 |
| 115 | श्री. सखाराम बी. हारकळ, श्री. शुभम ग. गडलवाड, डॉ. विशाखा रणवीर   |    |
| 123 | जागतिकीकरण आणि नव्वदोत्तर वैदर्भीय कादंबरी श्री. तेजस सुरेशराव डेहनकर  | 26 |
|     | महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाद्वारा प्रवाशांना देण्यात येणाऱ्या सोयी –  | 27 |
| 128 | सुविधांचे विश्लेषणात्मक अध्ययन स्वप्नील वि. मानकर  |    |
| 133 | सायबर गुन्हा आणि सुरक्षितता एक अध्ययन प्रा.डॉ. सुभाष एन. सातव  | 28 |
| 136 | निवडक आदिवासी स्वकथनांचे भावविश्व <b>डॉ. गणेश दिगंबर सावजी</b>   | 29 |
| 139 | भारताचे बहुसंलग्नतेचे धोरण आणि क्वाड <b>डॉ. शार्दुल मा. सेलुकर</b>   | 30 |
| 145 | सीमालढा आणि साहित्यिकांचे योगदान डॉ. पांडुरंग गावडे  | 31 |
| 149 | बौध्द शिक्षा पध्दती की विशेषताए : एक अध्ययन  | 32 |
| 153 | The Role of Nature in Romantic Literature Siddiqui Saman Zafar,  | 33 |
| 155 | Theme of Protest and Quest for Identity in the short storyA Leaf in the Storm by Lalithambika Antharajanam  Dr. Prakash Anna Patil   | 34 |
| 159 | Sexuality and Desire in Tess of the D'Urbervilles  Dr. Prakash Anna Patil  Sexuality and Desire in Tess of the D'Urbervilles  Dr. G. B. Shelkikar  | 35 |
| 161 | An Analytical Study of the impact of innovative management practices of Medium Scale Industries on the motivation of the employees in Ahmednagar District. Sunil dagadu Shinde, .Dr. Yogesh K. Agrawal | 36 |
| 172 | अल्पसंख्यांक ख्रिस्ती समाज व मानवी हक्क प्रा. अविनाश भोरे  | 37 |
| 176 | स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी लघुकथाओं में दहेज प्रथा Dr. Shaheen Ajaj Jamadar  | 38 |

### Theme of Protest and Quest for Identity in the short story A Leaf in the Storm by Lalithambika Antharajanam Dr. Prakash Anna Patil

Head, Department of English Miraj Mahavidyalaya, Miraj. Dist. Sangli (Maharashtra) Affiliated to Shivaji University. Kolhapur Email: prakashpatil.3451@gmail.c

Abstract: During the partition of India and Pakistan violence against women was one of the serious and heart-rending problems. It is said that during the Partition more than 75000 to 100000 women were kidnapped and raped. The rapes on women by the hooligans during this period were more tragic and horrifying to humanity. More than 25000 to 29000 Hindu and Sikh women and 12000 to 15000 Muslim women were abducted, raped and some of the women were forced into marriages. Some of the women were forced for religious conversion and killed on both the sides of the border. Women were treated like commodities that could be bought and sold for a handful of money during the Partition times. There was deep impact of Partition on women. It reduced women to the lowly status of commodities, slaves, animals and even to prostitutes. It is also said the massacre of the Partition to a great extent reminds us the holocaust of Jews by the Nazi dictator. The present paper is an humble attempt to highlight the trauma of Partition and its effect on social life. The unfortunate Partition trauma primely affected to women in worst form, which is realistically depicted by LalithambikaAntharajanam in her popular short story A Leaf in the Storm based on Partition trauma.

Keywords: Partition, catastrophe, exploitation, conversion, abduction, hooligans

Introduction: In August 1947, the British Colonizers left India and the sub-continent i.e. Hindustan was divided into two independent nations: Hindu majority India and Muslim majority Pakistan. Despite education, laws and scientific development, life has never been safe and contented for women in the whole human history. Even in Modern times man's attitude, his mentality and his hegemonic approach towards women is not improved and it is remained stereotyped. Systematic and well planned violence against women started in March 1947 in Rawalpindi district where Sikh women were targeted by Muslim hooligans. In the history of Asian subcontinent, Partition of India - Pakistan is always remembered as the most catastrophic tragic event whose roots deeply rooted in both the nations till today. The formation of the new nations led to the migration of the population, one of the largest in the history of the subcontinent. Almost twenty millions of the people forsaken their ancestral home, immovable property and hearth on this disastrous period. Women were primarily the worst sufferers of the Partition tragedy as violence is usually initiated by men and it is concluded on women as its worst sufferers. It is the community of women that they were mercilessly raped, widowed; their children and husbands were killed in the name of religion through the agency of hatred and fundamentalist communal forces. Hindu, Sikh and Muslim communities also had taken revenge as a reason for their attacks to prove their sovereignty of religion. The large scale abduction and rape of girls seemed to have been a part of systematic 'ethnic cleaning' in the Gurgaon region on the outskirts of Delhi. Most humiliating incident for humanity was that there was a nude procession of Muslim women was organized near the Golden temple in Amritsar. Even in the villages around Delhi, police and army soldiers too actively participated in the rape of Muslim women. The women have confronted another type of the ordeal that they were exchanged by their own families. To get safe passage and save members of the family or village, young girls were forfeited and traded to the opposite camp to cross safely the border. Obviously women were the worst and unfortunate sufferers of the partition. Many abducted women were sold into prostitution and some in very rare instances were married to their abductors. Some women voluntarily killed themselves as well as their female children by throwing themselves into wells. Even some women, who survived, could not live with their dark and dismal realities committed suicides. Bodh Prakash in an article, "The Woman Protagonist in Partition Literature" while taking review of Partition literature rightly observes that:

Short Stories by Krishna Chander, Manto, Krishna Sobti, Ahmad NadeemQasimiand

otherHindi and Urdu writers described horrific scenes of inhumanity. Apart from



### Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXXVI) 426

Conclusion: Through her noble act, steadfastness and great sacrifices finally the protagonist Jyoti emerges as the new women of the modern age. Now she is more mature and bold enough to take great decisions. The young teenager revolutionary girl has now grown into a fully courageous one to take necessary decisions in the face of a hostile world. Though there were different ordeals, calamities and obstacles faced by Jyoti in her life, she emerged as a 'Xena' of devastating Partition catastrophe. Her protests against orthodoxy, extreme Communalism mould her character as a courageous lady. Ultimately her quest for identity and moral principles guide her for the right path. It is broadly witnessed thatat the time of Partition women were prime sufferers but they were totally and deliberately neglected, nobody tried to understand their feelings, their anguish and their terrible plight. Actually in both the community woman deserve very revered position in different role, but it was very strange and humiliating thing for human being that this woman was highly disregarded and humiliated at the time of Partition. As a weaker sex she became the victim of gendered politics such as Jyoti. To some extent Jyoti reminds us that of Thomas Hardy's unfortunate tragic character of Tess of D'Urbervilles. References:

BhallaAlok (ed.) Partition of IndiaNew Delhi: Manohar . 2012.Print

Bodh, Prakash. "The Woman Protagonist in Partition Literature", Translating Partition (eds.) Ravikant, Saint K, TarunNew Delhi; Katha Mela. 2001. Print

Chakraverty, Lalima. Gender and Culture in the Works of Indian Subcontinent's select Women Novelists. New Delhi; Atlantic Publishers and distributors (P) Ltd. 2012. Print.

Chindhade, Shirish (ed.) PartitionLiterature, Kolhapur: Mehta Book Sellers. 2019. Print.

Deshmukh, Ajay.S. MappingFeminineAngst Partition Narratives. Jaipur: Aadi Publications.

Roy, Pinaki and Sarkar, AshimKumar. The Broken Pens The (Indian) Partition in Literature and Films. Aadi Publications. 2016. Print.

Singh, Anita. Inder. The Origins of the Partition of India 1936-1947. Bombay: Oxford University

### Dr. P. A. Patil

Partition Trauma and Nostalgic Yearnings for Homeland as Depicted in the Poem *I shall return to this Bengal* by Jibanananda Das

### Partition Trauma and Nostalgic Yearnings for Homeland as Depicted in the Poem, 'I Shall Return to This Bengal' by Jibanananda Das

Dr. Prakash Anna Patil Head, Department of English MirajMahavidyalaya, Miraj. Dist. Sangli (Maharashtra)

#### Abstract:

The present paper aims at to highlight partition trauma terribly experienced and undergone by the great Bengali poet Jibanananda Das. The poem selected for the present research paper I Shall Return to This Bengal, broadly reflect his nostalgic feelings about his hometown Burisal. His down lane memories of Bansal, its ravishing natural beauty so closely associated with him that he yearning for rebirth not as a human being but different kinds of birds on the riverside. He wishes to take rebirth in an old Bengal Barisal, not as a human being, but birds such as a myna or a fishing kite, or a dawn crow or may be as duck. At the same time the present poem reflects the poet's loneliness, his feeling of displacement, appropriately and quest for identity in new culture. Das 'nostalgic description of his hometown and scenery of the nature in the present poem sometimes reminds as British Romantic poets like William Wordsworth and John Keats. The poet very solemnly affirms that the borders are manimade for their meanness and there no such power in the universe which could separate an individual by forming boundaries.

Keywords: Partition, Nostalgic, Yearning, Displacement, Loneliness, Border, Boundaries

#### Introduction:

Jibanananda Das was born on 17th Feb. 1899 at Barisal town, which is now in South Central Bangladesh. He died on 32nd October 1954. After Rabindranath Tagore, Jibanananda emerged as the practitioner of a new kind of modernity in Bengali poetry. Das started writing and publishing in his early 20s. Many of his poems have been published posthumously by the initiative of his brother Ashokananda Das, sister Sucharita and nephew Amitananda Das. Through his poetry, Jibanananda broke the traditional circular. Das's singularity lies in his ability to perceive beauty in the anacknowledged and small objects of nature Like great urdu writer Sadat HasanManto the last few years of his life were marked by dire financial distress and icute unhappiness. Even Manto also after the partition could not cope up in Pakistan, in the contrary he suffered from loneliness and isolation. In the Similar way Das' last lays of his hie were not only haunted by financial anxiety but also by the trauma and iomiliation caused to him due to the partition of the country

| Dr. Sangeeta Pande 97  |
|--|
| 13. Impact of Trends in Law Education Pratima Rajendra Kumbhare 08   |
| 14. Study of Economic Empowerment of Women in India Geeta S. Shere 69  |
| 15. The Quest for Identity and Existence in Chika Unigwe's 'On Black Sisters' Street'  |
| Neha V. Wader 09   |
| 16. Save Soil Adv. Madhavi D. Ankaikhope 10  |
| 17. Partition Trauma and Nostalgic Yearnings for Homeland as Depicted in the Poem, 'I Shall Return to This Bengal' by Jibanananda Das  Dr. Prakash Anna Paul |
| Dr. Prakash Arma Panil 10  |
| 18. Negotiating Gender Issues in Safi Atta's 'Everything Good Will Come'<br>Neha V, Wader 11   |
| National Education Policy-2020 In Higher Education .     Dr. Raghvendra Hulakund   |
| 20. Role of Ivory Carvings in Indian Folk Art Dr. Mrs. Madhura Rajesh Karande 11   |
| 21. Status of Women in Indian Society  Manisha Yogesh Kale 13  |
| 22. Conceptual Framework of Money Market Research: Understanding the<br>Dynamics and Implications  |
| D. S. Hadakar and Dr. Avinash Mahadev 13   |
| 23. Service Quality of Human Resources and Performance of Primary Health<br>Centres  |
| Dr. Bharat V. Patil and Mr. Sanjay J. Kasabe 14  |

of Rupsa River steer a dinghy. At the same time very nostalgically, he temembers that white egrets swimming through red clouds. Thus, here Das very successfully created pictorial beauty of Barisal's heavenly nature. Finally, he expresses his wish that he will be part of these white egrets' crowds. His wish to be a bird indicate that he doesn't cant to be in the capacity of borders, drawn by human beings for their selfish motives, on the contrary being a bird he will freely enjoy the beauty of Nature and there will be no more barriers of boundaries. That is why finally he expresses his wish that he will be a part of these white egret's crowd

### Conclusion:

The poet denies partition of the land on the basis of religion, in which he witnesses segregation of man from man. He solemnly believes that one cannot be myide the beauty and glory of the nature. He thinks that nature is unified so he consciously neglects the man-made mechanical division of partition. To some extent the poem also reflects poet's loneliness and quest for identity in newly labeled realm is a man, but it will be part of percel of nature. It also projects the poet's sanctity for nature, which evokes him to be much emotional and nostalgic of his own town Barrisal, Like Romantic poet Wordsworth and Das also manipulated extraordinary conflication of beauty of Nature. The poet wanted to be one with it. At the same time liburarianda Das vehemently represent his inner protest to political force which emised for disastrous partition.

### References:

- Alam, F. Jibananda Das: Selected Poems with an Introduction. Chronology and Glossary 1999. The University Press Limited, Dhaka, Print.
- SukritaP.Kumar, Narrating Partition, 2004, Indialog New Delhi, Print.
- Bhalla, Alok, Partition Dialogues: Memories of a Lost Home, 2006. Oxford Haiversity Press. New Delhi Print.
- Beniwal, Anup. Representing Partition: History, Violence and Narration. Shaktr Book House, Delhi 2005, Print,
- Singly, Anitalnder, The Origins of the Partition of India 1936-1947 Oxford

| 6 | Dr. L. S. Shinde | 21 व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील<br>सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ |
|---|------------------|---|



Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

### Smt. Akkatai Ramgonda Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji

Tal-Hatkanangale, Dist- Kolhapur, Maharashtra- 416115 Affiliated to Shivaji University, Kolhapur Reaccredited by NAAC with 'B+ Grade (2.57 CGPA)

ONE DAY NATIONAL MULTILINGUAL SEMINAR on

'Socio-Cultural Context in 21<sup>st</sup> Century English, Hindi and Marathi Literature'

Saturday, 30<sup>th</sup> September, 2023

### **ORGANISED BY**

Departments of Marathi, Hindi, English and IQAC

### Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

### **Executive Editor**

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

### Editors

Prof. (Dr.) Subhas<mark>h Jadhay (Mar</mark>athi) Mr. Sudhakar I<mark>ndi (Hindi)</mark> Mr. Dipak Sarnobat <mark>(English)</mark> Minaj Naikawadi

# Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal ISSN 2349-638x Impact Factor 7.367 Website :- www.aiirjournal.com

### Theme of Special Issue

### Socio-Cultural Context in 21<sup>st</sup> Century English, Hindi and Marathi Literature

(Special Issue No.128)

### **Chief Editor**

Dr. Pramod P. Tandale

### **Executive Editor**

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

### **Editors**

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)

Mr. Sudhakar Indi (Hindi)

Mr. Dipak Sarnobat (English)

Minaj Naikawadi

| I | Special Issue Theme: Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature | Sept. 2023 |
|---|---|------------|
| l | (Special Issue No.128) ISSN 2349-638x Impact Factor 7.367   | Sept. 2023 |

| Sr.No. | Author Name                            | Research Paper / Article Name  | Page No. |
|--------|--|--|----------|
| 106    | प्रा. प्रदिप प्रकाश कदम                | एकविसाव्या शतकातील स्त्रीमनाचे पदर उलघडणारे<br>'देवबाभळी' संगीत नाटक : एक चिकित्सा                   | 400      |
| 107    | प्रा.डॉ.पांडुरंग जगन्नाथ ऐवळे          | 'एकटी ' काव्यसंग्रहातील सामाजिक व सांस्कृतिक<br>संदर्भ   | 403      |
| 108    | डॉ संभाजी धोंडीराम कदम                 | राव कादंबरीतील सामाजिक संदर्भ  | 407      |
| 109    | प्रा. निलेश नामदेव कांबळे              | २१ व्या शतकातील दलित मराठी कादंबरीतील<br>सामाजिकता व सांस्कृतिक संदर्भ                               | 410      |
| 110    | प्रा. उदय बाळासो शिंदे                 | २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतून येणारे धनगर<br>समाजतील स्त्री चित्रण                                | 412      |
| 111    | डॉ.तुळशीराम उकिरडे                     | दिलत कवितेतील सामाजिकता  | 414      |
| 112    | डॉ. मांतेश हिरेमठ                      | समकालीन कवितेतील बदलते सामाजिक व<br>सांस्कृतिक संदर्भ  | 418      |
| 113    | प्रा.डॉ.बाबासाहेब नाईक                 | 21 वे शतकातील स्त्रियांच्या समस्या (रोहिणी<br>कुलकर्णी यांच्या कादंब-यांच्या आधारे)                  | 422      |
| 114    | डॉ.कु.कोकिळा हनुमंत <mark>चांगण</mark> | २१ व्या शतकातील स्त्रीलिखित मराठी कथेतील काही<br>सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ                         | 425      |
| 115    | डॉ.लक्ष्मण शिंदे                       | २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील सामाजिक -<br>सांस्कृतिक संदर्भ                                      | 428      |
| 116    | प्रा.डॉ.सविता अशोक व्हटकर              | २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील शेतकऱ्यांच्या<br>जीवनातील सामाजिक संदर्भ (बारोमासच्या<br>अनुषंगाने) | 433      |
| 117    | डॉ प्रियांका कुंभार                    | व्यक्तिचित्रणात्मक लिलितगद्यः 'लोकपरंपरचे<br>शिल्पकार'   | 437      |
| 118    | डॉ.वैशाली श्रीकांत गुंजेकर 🕠           | २१ व्या शतकातील ग्रामीण कादंबरी  | 441      |
| 119    | श्रीमती प्रतिभा भारत पैलवान            | 'सीतायन' या लित संग्रहातील सामाजिक व<br>सांस्कृतिक संदर्भ  | 445      |
| 120    | श्री.रघुनाथ चंदर गवळी                  | आदिवासी कवितांमधील सामाजिक समस्यांचे चित्रण  | 448      |
| 121    | प्रा.डॉ.देसाई अजित यल्लाप्पा           | एकविसाव्या शतकातील शिक्षणव्यवस्थेचे वेगळे रूप<br>दाखीवणारी कादंबरी म्हणजे निशाणी डावा अंगठा          | 452      |
| 122    | प्रा. अविनाश भोरे                      | २१ व्या शतकातील मराठी खिस्ती कथेतील सामाजिक<br>व सांस्कृतिक संदर्भ                                   | 455      |

### २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील सामाजिक - सांस्कृतिक संदर्भ

डॉ.लक्ष्मण शिंदे

मराठी विभाग, मिरज महाविद्यालय, मिरज

सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ आणि साहित्याचा खूप जवळचा संबंध असतो.कादंबरी हा वाङ्मयप्रकार तर समाजजीवनाचा विस्तृत पट मांडणारा असतो. अर्थात कादंबरी आणि सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भयांच्यात केवळ बिंब — प्रतिबिंबवादी संबंध शोधायचा आहे, असे नाही.परंतु कादंबरीचा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भाशी असलेला अनेक पातळ्यावरील आंतरिक संबंध दाखवन देता येईल.

हाटप्पा २१ व्या शतकाच्या आगमणाच्या पार्श्वभूमीवर मानला आहे. सांस्कृतिक पर्यावरण एखाद्या क्षणी अचानक बदलते असे येथे म्हणावयाचे नाही. २१ व्या शतकातील सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ काही निवडकमराठी कादंबऱ्यांच्या आधारे दाखवता येतो.

### १.गरीब, बेकार तरुणाचे जीवन दर्शवणारी अडगळ'-संभाजी भगत

प्रस्तुत काळातील शहरी जीवनाचे चित्र आपण स्पष्ट केले आहे. शहरात विषमता पराकोटीला पोहोचली आहे. शहरांचे अस्ताव्यस्त वाढणे, बकालीकरण हे सांस्कृतिक वास्तव बनले आहे. त्याचप्रमाणे आपण सद्य स्थितीतील बेरोजगारीची स्थितीही पहिली आहे. त्यातून येणारी मानसिक निराशा भयावह असते. प्रस्तुत काळात सर्वसामान्य कुटुंबात वाढणार्या तरुणांची होणारी धूसमटही स्पष्ट केली आहे. या सांस्कृतिक पर्यावरणांचे प्रतिबिंब संभाजी भगत यांच्या 'अडगळ'मध्ये अत्यंत स्पष्टपणे डोकावताना दिसते. त्यांनी 'अडगळ' मधून अत्यंत अल्प शब्दात प्रस्तुत काळातील सामान्य तरुणांची मानसिकता प्रभावीपणे मांडली आहे. 'अडगळ' २००८ च्या 'सूजन' दिवाळी अंकात प्रसिद्ध झाली आहे.!'अडगळ'मध्ये बी.ए. होऊन बेरोजगार असलेल्या एका परिस्थितीशरण तरुणांचे आत्मवृत्त आले आहे.त्यातूनच आपल्यापुढे २१ व्या शतकातील झोपडपट्टीतील जीवनाचे सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण उभे राहते. सारे निवेदन स्वगताच्या पद्धतीचे आहे. काठांनाकाला आवश्यक असाच तो प्रकार वाटतो. बागडेबुवा त्याच बाप हरहुन्तरी माणूस होता. तो पूर्वी गुंड होता. रेल्वेच्या बगण लुटायचा. मग रेल्वेत मजूर म्हणून नोकरीला लागला. पण दारू पिऊन त्याने साहेबाला मारले तेव्हा तेव्हा नोकरी गेली. मग मुंबईत आला परेरा वादी या बग्त धाडस करून अतिक्रमण करून झोपडी बांधली.

जिथे पूर्वी शेती होती. गर्द झाडी होती. शंकराचं मंदिर होतं. विहीर होती. निळसर पाण्याचं तळं होतं हळूहळू प्रदूषण वाढून सार्या बाबी संपल्यातिथे चाळीस वर्षात परेरा बाग नावाची ३०० झोपड्यांची झोपडपट्टी झाली आहे. बापानं एवढी मोठी जागा घेतली होती. त्या जागेवर अनेक गरीब, अडचणीत असणार्यांना बापानं झोपडीसाठी जागा दिली. त्यामुळे नायकाला किंमत आहे. बापानं दिलेल्या जागेत अनेकांनी पक्की घरे बांधली आहेत. ही संपूर्ण झोपडपट्टी बापानं कायदेशीर केली. रात्रभर कंपनीत फितर म्हणून काम करायचं. दिवसभर बी.एम.सी.त खेटे मारून सरकारी नळ वस्तीत आणला. लाइटची सोय झाली.

अशा बापाला तंबाखूमुळे कॅन्सर झाला. शेवटची दोन वर्षे अंथरुणाला खिळून होता. आईने त्याची खूप सेवा केली. त्याची आई हिंदू सांस्कृतीच्या प्रभावाखालची आहे. तिला वाटते 'मांगच्या जन्मात काही तरी पाप घडलं असंल तिच्या नवर्याच्या हातून.....'2तिने तिच्या पारंपरिक संस्कारानुसार मृत्यनंतरही सारे विधी व्यवस्थित पूर्ण केले. पांढर्या कपाळानं जगणं तिला नकोसं वाटतं.

नायकाला एकूण तीन बहिणी <mark>तिघीही त्याच्यापेक्षा मोठ्या, त्यातील दोघीची लग्ने</mark> झाली नाहीत. या कादंबरीच्या कथानकामध्येच प्रस्तुत काळातील सांस्कृतिक पर्यावरण दिसते. वरवर पाहता दिसले नाही तरी झोपडपट्टीचे सर्व संदर्भ कथानकात आहेत.

लग्न होऊन गेलेल्या थोरच्या बहिणीचे नावही नायक घेत नाही. आपले मन हलके करण्यासाठी सारे सांगण्यासारखी ती होती. असे तो म्हणतो. परंतु तिच्यापुढे वडील लवकर वारले. अशी आईची समजूत असते. एका समंजस सोशिक 'स्त्रीला' पिरिस्थिति शरण कसे यावे लागते? हे त्याच्या या बहिणीच्या कथानकातून कळते. पाठच्या बहिणींना सांभाळण्यासाठी तिची सातवीतून शाळा सोडली. ' एक चांगली गृहिणी म्हणून जगायचे सगळे गुण तिच्यात होते. ' 3 तिचे लग्न झाले. नवर्याला दारूचे व्यसन होते. त्याच्या चुलत्याने त्याला गावाकडची जमीन, मुंबईतली जागा काही दिले नाही. लग्नानंतर त्याच्याकडे टॅक्सी होती. टॅक्सी विकली. हळूहळू बिल्डिंगितली खोली विकली. झोपडपट्टीत राहायला गेले. एक मुलगी दोन मुले झाली. बहिणी भांड्यांचे कामे करायची. तिने कथीही माहेरी तक्रार केली नाही. तो मटका खेळू लागला. घरीच बस्न दारू पिऊ लागला. ती सकाळ

केतकीला कळते. ती त्याचा फायदा घेऊन आपला माल जाहिरात करून बाजारात आणते. त्यामुळे लवकरच मालाला खप वाढत जातो. त्यामध्ये दुकानदार विक्रेत्यांना विविध सवलती जाहीर केल्याने तेही गि-हाईकांना केतकीच्या कंपनीचाच माल देत असतात.

`सनशाईन' कंपनीच्या मालाची प्रसिद्धी खूपच असते. परंतु मालाला मागणी असली तरी कंपनीच्या चुकीच्या धोरणामुळे 'सनशाईन' चे उत्पादन थांबलेले असते. त्यामुळे मागणी असूनही पुरवठा नसल्यामुळे अविनाश हतबल होतो. तो विरिष्ठांना वेळोवेळी कल्पना देतो. पण उत्पादनात काहीच फरक पडत नाही. तर पत्नीच्या कंपनीचा माल बाजारात दिसायला लागलेला असतो. त्यामुळे अविनाशच्या नोकरीवर गदा येण्याची शक्यता असते. शेवटी केतकीच्या 'एव्हर फ्रेश' ने मार्केट काबीज केल्याची बातमी अविनाशच्या मालकाला कळते. त्यामुळे साहजिकच त्याचे विरिष्ठ अविनाशला जबाबदार धरतात. अविनाशन पूर्वी 'सनशाईन' च्या उत्पादनबद्दल लेखी सूचना दिलेल्या नसल्याने अविनाश कोंडीत सापडतो. त्यामुळे सर्व जबाबदारी अविनाशवर ढकलण्यात येते. कंपनीचे अधिकारी पुन्हा उत्पन्न वाढवतात पण केतकीच्या 'एव्हरफ्रेश'ने मार्केट काबिज केल्यामुळे 'सनशाईन'चा खप कमी होत जातो.

तिने मोठ्या कौशल्याने विविध योजना वापरुन 'एव्हरफ्रेश' चा खप वाढवलेला असतो. अविनाशच्या 'सनशाईन' ला मागणी नसल्याने तो हतबल होतो. दोघांचे कौटुंबिक नातेही कलुषीत होत जाते. दोघामधला बाहेरचा संघर्ष घरात पोहचतो. स्पर्धेच्या युगात दोघांनाही कौटुंबिक नात्याचा विसर पडतो. त्यामुळे एके दिवशी अविनाश केतकीने जाहिरातीसंबंधी केलेल्या योजना चोरतो. त्याच योजना अमलात आणतो. त्यामुळे स्पर्धक कंपनीने जशाच्या ताशा योजना रावविल्याचे पाहून केतकीला कंपनीचे विरिष्ठ जाब विचारतात. त्यामुळे केतकी चिडते. पुन्हा मार्केटिंगचे कौशल्य वापरुन 'एव्हरफ्रेश' ला पुन्हा मार्केट मिळवून देण्यात यशस्वी होते.

पतीने पत्नीच्या योजना वापरल्या असल्या तरी त्याच्या `सनशाईन' कंपनीचा खप वाढत नाही. त्यामुळे अविनाशवर त्याचा ठपका ठेवण्यात येतो. मार्केटिंग मॅनेजर म्हणून अपयशी ठरल्याचे कारण सांगून त्याची बदली स्टोअर डिपार्टमेंट मध्ये करण्यात येते. कंपनीच्या विरुष्ठांच्या ध्येयधोरणामुळे त्याचा हा अपमान झालेला असतो. अविनाश अपयशी ठरतो तर केतकी प्रमोशन पात्र ठरते. घरी अविनाश पुरुषी वर्चस्व दाखवून केतकीला राजीनामा देण्यास सांगतो. उलट केतकी त्यालाच राजीनामा देण्यास सांगते.एखाद्या पदावरून बदली होते किंवा पोष्ट काढून घेतली जाते ही राजीनामा मागण्याची पूर्व सूचना असते. असे ती व्यवहारिकपणे अविनाशला सांगते.

#### संदर्भ:-

- भगत संभाजी, अडगळ, सुजन दिवाळी २००८ संपा. वी.ना. जाधव
- 2. तत्रैव,पृक्रं९६-९७.
- 3. तत्रैव,पुक्रं,१०३.
- तत्रैव,पु९१.
- ग्राफिटी वॉल, कविता महाजन राजहंस प्रकापुणे ., प्र .आ. २००९ प्.१९
- मुलाखतकार स्नेहा अवसरीकर, अंतर्नाद, जुलै, २००७ संपा. भान काळे.
- महाजन कविता,ब्र,राजहंस प्रकापुणे,२००५.,पृ क्र४९.
- तत्रैव,उनिपु क्र.१०६.
- 9. तत्रैव,उनिप्.क्र. १५०.
- 10. तत्रैव,उनिपृ.क्र.२००.
- 11. तत्रैव,उनि.पृ.क्र.२०१
- 12. तत्रैव,उनि.पु.क्र .२५१
- 13. तत्रैव,उनिप्.क्र.३२८.
- 14. तत्रैव,उनिपू.३९३.



ISBN 978-81-965950-1-2

....

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

SMT. AKKATAI RAMGONDA PATIL KANYA MAHAVIDYALAYA, ICHALKARANJI

INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE
RESEARCH (ICSSR)
SPONSORED
ONE DAY NATIONAL SEMINAR

SCHEMES IN 21st

ON





2023

Chief - Editor Prof. Dr. Trishala Kadam I/C Principal

| 84. | महिला सक्षमीकरणाच्या योजना (विशेष संदर्भ<br>अनुसूचीत जाती)   | Smt. Sarika Malage                            |        |
|-----|--|---|--------|
| 85. | परिला संधानिकरणातील टारूबंटी चळवळीचे महत्व   | Mr. Sachin Tipkurle                           | 373.37 |
| 86. | एन.सी.सी. आणि एन. एस. एस. विद्यार्थ्यांच्यामधील<br>भावनिक बुद्धिमत्तेचा अभ्यास   | Smt. Pramila Surve                            | 379.38 |
| 87. | मानवी हक्क आणि महिला सबलीकरण   | Dr. Minakshi Minache<br>Dr. Rajashree Malekar | 383-38 |
| 88. | सोलापूर मधील महिला बिडी कामगार चळवळ आणि<br>कॉम्रेड मिनाक्षीताई साने  | Smt. Pallavi Mirajkar                         | 388-39 |
| 89. | भारतातील महिला सक्षमीकरणाची वाटचाल   | Mr. Kiran Kanade                              | 392-30 |
| 90. | विवाहित आणि अविवाहीत महिलांच्यातील सामाजीक<br>स्वातंत्र्याचा अभ्यास  | Mr. Sanjaykumar Waingade                      | 399-4  |
| 91. | 73 व्या घटना दुरुस्तीने अनुसूचित जातीतील महिला<br>सरपंचांचे महिला सक्षमीकरणाचा अभ्यास संदर्भ<br>करवीर तालुका (1997-2020)   | Mr. Sunil Kheme                               | 403-4  |
| 92. | साहित्यातून आलेले स्त्री भूमिकांने नित्या  | 2.  | 406-4  |
| 93. | महिला सबलीकरण आणि आउधाणने होराम  | Dr. Ashalata Khot                             | +      |
| 94. | शासकाय आणि खाजगी नो <del>ळगी क पण्य</del>  | Mr. Shahid Mulla                              | 410-4  |
|     | महिलाच्यातील मनिसिक आजोगगाना अवस्तर  | Mr. Parvat Kamble                             | 413-4  |
| 95. | TO CALL SIGNED THE WILLIAM THE CALL THE |   | 418-4  |
| 96. |  | Smt. Laxmi Koli                               | -      |
| 97. |  | Smt. Ranjana Paval                            | 423-4  |
| 98. | महिला सक्षमीकरणामधील ग्रामसभांचे योगदान  | Smt. Rohini Kambire                           | 427-4  |
|     | रनारा त्रानसमाच यागदान   | Dr. Megha Patil                               | 432-4  |
|     | p==  | O - Z dell                                    | 436-4  |

A MESTA

# विवाहित आणि अविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्याचा अभ्यास

क्षी. तंजयकुमार वाईगडे क्षी. तंजयकुमार वाईगडे तहाँ<sup>द्यक</sup> प्राध्यपक विभागप्रमुख त्राव्यक्षास्त्र विभाग प्रावस्थास्त्र विभाग क्षर्ज महाविद्यालय, मिरज क्षितः sanjaywaingade.6@gmail.com कृषेतः sanjayvaingade.

सारांश : अविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्याचा तुलनात्मक विवाहित माहला हा या संशोधनाचा हेतू होता. अभ्याप अविवाहित महिलांच्यातील विवाहित विकार मामाजिक स्वातंत्र्याचा अभ्यास करण्यासाठी <sub>मांगली</sub> शहरातील विवाहित २५ महिला व अविवाहित २५ महिला असे एकूण ५० महिलांचा नम्ता हा सहेतुक नमुना निवड पद्धतीने निवडले. <sub>प्रस्तुत अभ्यासाकरिता</sub> एल. आय. भूषण (१९८७) गंनी विकसित केलेले Women Social Freedom ही बाचणी वापरली आहे. प्रस्तुत संशोधनात मळालेल्या माहितीचे विश्लेषण केले असता मिळालेले निष्कर्ष हे विवाहित महिलांच्या पेक्षा अविवाहित महिलांच्या मध्ये सामाजिक स्वातंत्र्य उच्च दर्जाचे असल्याचे दिसून येते.

शोध संज्ञाः सामाजिक स्वातंत्र्य, विवाहित -अविवाहित महिला

प्रस्तावना : सामाजिक स्वातंत्र्य :

सामाजिक स्वातंत्र्य म्हणजे सामाजिक क्षी परंपरा धार्मिक विधीतून स्वातंत्र्य मिळवणारी महिलांची इच्छा जी त्यांना खालच्या पातळीवरील अर्थिक स्वातंत्र्य, राजकीय हक्क, जातीच्या वंधनातून स्वसंबंधित स्वातंत्र्य, सनातनी विचारांपासून स्वातंत्र्य, जीवन जोडीदाराच्या निवडीसाठी स्वतःचे पर्याय, निर्णयात सहभाग देते. वनवणे इ. सामाजिक स्वातंत्र्य म्हणजे सामाजिक निषद्ध, परंपरागत विधी आणि स्त्रियांवर पारंपारिक भूमिका आणि निर्वंध लादणाऱ्या

स्वातंत्र्य म्हणजे सामाजिक रूढी परंपरा धार्मिक विधीतून स्वातंत्र्य मिळवणारी महिलांची इच्छा जी त्यांना खालच्या पातळीवरील आर्थिक स्वातंत्र्य, राजकीय हक्क, जातीच्या वंधनातून स्वसंवंधित स्वातंत्र्य, सनातनी विचारांपासून स्वातंत्र्य, जीवन जोडीदाराच्या निवडीसाठी स्वत:चे पर्याय, निर्णयात सहभाग देते. बनवणे इ. सामाजिक स्वातंत्र्य म्हणजे सामाजिक निपिद्ध, परंपरागत विधी आणि स्त्रियांवर पारंपारिक भूमिका आणि निर्वध लादणाऱ्या भूमिकांपासून मुक्त होण्याची इच्छा. जगभरातील महिलांना संधी, कौशल्य, ज्ञान, मालमत्ता आणि मूलभूत मानवी हक्क जसे की हवेपासून स्वातंत्र्य आणि भीतीपासून स्वातंत्र्य मिळत नाही. स्त्रिया लोकसंख्येच्या पन्नास टक्के आहेत, अधिकृत श्रमशक्तीच्या तीस टक्के आहेत, सर्व कामाच्या तासांपैकी साठ टक्के काम करतात, जगाच्या उत्पन्नाच्या दहा टक्के मिळवतात, परंतु जागतिक मालमत्तेच्या एक टक्क्यांपेक्षाही कमी मालकी असतात. सर्व राजकीय व्यवस्था विचारसरणी किंवा स्वरूपाची पर्वा न करता, बहुतेकदा स्त्रियांची औपचारिक राजकीय स्थिती नाकारतात.

ि हमिहिलेने स्वतःच्या पायावर उभं राहणं, काहीतरी ती तिच्या इच्छेनुसार करणं म्हणजे तिचा "महिलांना त्यांच्या खरं स्वातंत्र्य आहे." आयुष्यातील निर्णय घेऊ दिले पाहिजेत, नवीन गोष्टी करण्याचे प्रोत्साहन तिला दिले पाहिजे, तिला संधी करण्याची आणि सामाजिक क्षेत्रात तरच महिला वैयक्तिक प्रगती करू शकेल. महिलांच्या सामाजिक स्वातंत्र्याची संकल्पना एक खरा विश्वकोशीय अभ्यास ज्यात टागोरांच्या सर्वोत्कृष्ट स्त्रीचा समावेश आहे: मी पूजली जाणारी देवी नाही, किंवा उदासीनतेने पतंगाप्रमाणे वाजूला सारून टाकण्याची सामान्य दयाळू वस्तू नाही. धोक्याच्या आणि धाडसाच्या मार्गात मला तुमच्या पाठीशी ठेवण्याची तुमची इच्छा असेल, तर तुम्ही मला तुमच्या जीवनातील महान कर्तव्ये वाटून घेण्याची परवानगी दिलीत तर तुम्हाला माझे खरे स्वरूप कळेल. स्त्री ही ईश्वराची महान मृष्टी आहे, परोपकार, सचोटी, जुळवून घेण्याची क्षमता आणि सिहण्णुतेचे सामर्थ्य असलेले बहुआयामी व्यक्तिमत्त्व आहे, सध्याच्या काळातील स्त्रियांचे जीवन जुन्या काळापेक्षा खूप वेगळे आहे. महिला हा आपल्या समाजाचा महत्त्वाचा घटक आहे. महिलांना मातृदेवतेचे वर्णन दिले गेले आहे आणि त्यांना शक्तीचे उगमस्थान मानले जाते. स्त्री जीवन निर्माण करते, त्याचे पालनपोपण करते, रक्षण करते आणि वळकट करते. समाजातील स्त्रियांच्या भूमिकेवर सतत प्रश्नचिन्ह उपस्थित केले जाते आणि शतकानुशतके, स्त्रियांनी मुख्यतः पुरुपप्रधान जगात त्यांचे स्थान शोधण्यासाठी संघर्ष केला आहे.

सामाजिक स्वातंत्र्य म्हणजे पालक आणि पती यांच्या नियंत्रण किंवा हस्तक्षेपापासून स्वातंत्र्य, परंपरागत भूमिका आणि मुली/श्वियांवर वंधने लादणाऱ्या रूढी आणि संस्कारांपासून स्वातंत्र्य. भारतातील महिलांमध्ये स्वातंत्र्याची तीव्र इच्छा असते. आपल्या संविधानात महिलांना समान अधिकार दिले आहेत. मात्र, श्विया आजही पूर्वीप्रमाणेच गुलाम आहेत, हे दु:खद वास्तव आहे. स्वीमुक्तीवद्दल वोलणे आनंददायी आहे; परंतु, सर्व कायदे असतानाही त्यांना खरे स्वातंत्र्य कोणीही दिलेले नाही.

# साहित्याचा आढावा :

Nivedita & Rani, P. (२०१७) यांनी A Comparative Study of Women Social Freedom in Relation to Self Confidence of University Students in Sirsa District या शीर्पकावर संशोधन केले आहे. या संशोधनासाठी त्यांनी ग्रामीण १०० व शहरी १०० असे एकूण २०० विद्यार्थ्याच्या वर संशोधन करण्यासाठी एल. आय. भूषण यांची women social freedom वाचणी वापरली आहे. तसेच प्राप्त माहितीचे विश्लेषण करण्यासाठी मध्यमान प्रमाण विचलन व महसंवंध या संख्याशास्त्रीय साधनांचा वापर केला आहे व माहितीचे विश्लेषण केले असता ग्रामीण व शहरी विद्यार्थ्यांच्या मध्ये आलेला गुणांक हा लक्षनीयतेच्या ०.०५ पातळीवर सार्थ असल्याचे दिसून येते म्हणजेच त्यांनी सुरुवातीला मांडलेली

सिद्धांत कल्पना या फलित आणि स्वीकारलेली नाही.

#### हेतू :

विवाहित आणि अविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्याचा तुलनात्मक अभ्यास करणे

#### उद्दिष्टे :

विवाहित आणि अविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्य अभ्यासणे.

#### गृहीतके :

विवाहित आणि अविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्यांवावत फरक दिसून येत नाही.

### परिवर्तके (Variables) :

- c) स्वतंत्र परिवर्तक (IV) : विवाहित आणि अविवाहित महिला
- d) परतंत्र परिवर्तक (DV) : सामाजिक स्वातंत्र्य

### संशोधन कार्यपद्धती:

#### अ) नमुना:

विवाहित आणि अविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्याचा अभ्यास करण्यासाठी सांगली शहरातील विवाहित २५ महिला व अविवाहित २५ महिला असे एकूण ५० महिलांचा नमुना हा सहेतुक नमुना निवड पद्धतीने निवडले या सर्व महिला २५ ते ३५ या वयोगटातील आहेत.

### ब) मानसशास्त्रीय साधने :

प्रस्तुत अभ्यासाकरिता एल. आय. भूषण (१९८७) यांनी विकसित केलेले Women social freedom ही चाचणी वापरली आहे. चाचणीमध्ये एकूण २४ विधाने असून प्रत्येक विधानास दोन पर्याय आहेत. या चाचणीचे विश्वसनीयता ०.७९ इतकी आहे.

# क) संख्याशास्त्रीय साधने :

प्रस्तुत संशोधनात प्राप्त माहितीचे विश्लेषण करण्यासाठी माध्यमान, प्रमाण विचलन व टी-मूल्य या संख्याशास्त्रीय साधनाचा वापर केला आहे. क<sup>िते आणि</sup> जविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्यावावत मध्यमान, प्रमाण विचलन व टी मूल्य <sub>विवीहित</sub> आणि अविवाहित महिलांच्यातील सामाजिक स्वातंत्र्यावावत मध्यमान, प्रमाण विचलन व टी मूल्य

| बर्क<br>(Factor)                                      | नमुना<br>(Sample) | मध्यमान<br>(Mean) |       | भेदमूक्ती प्रमाण<br>संख्या (df) | टी - मूल्य<br>(t-value) | सार्थता पातळी<br>(Significant<br>level) |
|---|-------------------|-------------------|-------|---------------------------------|-------------------------|---|
| 1   | २५                | १३.०४             | २.१६६ | ४८                              | 2.92                    | 0.04*                                   |
| <sub>विवाहित</sub> महिला<br><sub>गविवाहित</sub> महिला | २५                | १४.१६             | ३.२१५ | -                               | ,,                      | 0.0 (                                   |

विवाहित २५ महिलांचा मध्यमान १३.०४ व व्रमाण विवलन २.१६६ इतका आहे तसेच अविवाहित २५ महिलांचा मध्यमान १४.१६ व अविवाहित २५ महिलांचा मध्यमान १४.१६ व प्रमाण विवलन ३.२१५ इतका असून या दोन्ही प्रमाण विवलन ३.२१५ इतका असून या दोन्ही अस्मृहातील भेद मुक्ती प्रमाण संख्या ४८ इतकी आहे सम्हातील भेद मुक्ती समहातील टी मूल्ये १.७१ इतका अस्न हे लक्षनीयतेच्या ०.०५ पातळीवर सार्थ असल्याचे दिसून येते. म्हणजेच विवाहित असल्याचे दिसून येते. महणजेच विवाहित महिलांच्या पक्षा अविवाहित महिलांच्या मध्ये सामाजिक स्वातंच्य उच्च दर्जाचे असल्याचे दिसून येते. म्हणून सुरुवातीला मांडलेले सिद्धांत कल्पना वरील फलितांनी स्वीकारलेली नाही.

निष्कर्ष

विवाहित महिलांच्या पेक्षा अविवाहित महिलांच्या मध्ये सामाजिक स्वातंत्र्य उच्च दर्जाचे असल्याचे दिसून येते.

#### मर्यादा :

- मदर संशोधन हे सांगली शहरातील विवाहित २५ महिला व अविवाहित २५ महिलांच्या पुरतेच मर्यादित आहे.
- सदर संशोधनासाठी मर्यादित संख्याशास्त्रीय साधनांचा वापर केला आहे.
- यापेक्षा मोठा नमुना घेतल्यास वेगळे निष्कर्ष येण्याची शक्यता आहे.

## संदर्भसूची :

Ghosh, S. M. (२०१६). A study on Social Freedom among the women, International Journal and of Advanced Education and Research, August, 1(8), 23-26

Kaur, N. & Kaur, N. (2015).Social Freedom among Adolescent Girl Students of Chandigarh, Indian Journal of Educational Studies: An Interdisciplinary Journal, 2(1), 69-73

Nivedita & Rani, P. (2017). A Comparative Study of Women Social Freedom in Relation to Self Confidence of University Students in Sirsa District, International Journal of Research in Economics and Social Sciences, May, 7(5), 14-19

Sharma, S. (2016). Some variables of social freedom among the women living in Kampur district of Assam, International Journal of Applied Sciences, April, 2(5)

Singh, N. K. (2017). A Study on Social Freedom of Female Teachers, International Journal of Advance Research, 3(3), 753-756

| 8 | Prof. (Dr.) S. B. Gaikwad,<br>Mr. S.A. Kharat,<br>Mr. S. R. Waingde,<br>Mr. A. B.Patil | An Analytical Study of Problems and<br>Prospects of Pomegranate Farming in South<br>Maharashtra |
|---|--|---|
|---|--|---|

Interdisciplinaary Journal Registration No. 3341/2010

Vol. No. 31 December -2023 ISSN 2277-4858 Impact Factor (IIFS) 7.125

# THE KONKAN GEOGRAPHER

Interdiciplinary Peer Reviewed Refereed National Research Journal

**Half Yearly** 



CO-EDITOR
Dr. S. A. Thakur

CHIEF EDITOR
Dr. R. B. Patil

KONKAN GEOGRAPHERS ASSOCIATION OF INDIA SINDHUDURG - MAHARASHTRA - 416602



#### Journal Volume No. 31/Dec., 2023 THE KONKAN GEOGRAPHER

ISSN 2277-4858, Impact Factor IIFS 7.125
National Interdisciplinary Peer Reviewed Referred Research Journal of the KONKAN GEOGRAPHERS' ASSOCIATION OF INDIA

## INDEX

| S.N. | Title of the Research Paper  | Author   | P. No. |
|------|--|--|--------|
| 1    | Traditional Environmental Wisdom, Belief System and<br>Perception about Environment Conservation in Bishnoi<br>community                     | Kirpa Ram<br>Prof. Vijay Kumar Baraik  | 01     |
| 2    | Traditional Methods of Water Conservation in Rajasthan   | Alok Chauhan   | 05     |
| 3    | Depletion of Ground Water A Challenge to Sustainable<br>Development in Haryana   | Neeraj<br>Sarita Devi  | 13     |
| 4    | HSC Vocational Courses : Remedy on unemployment in<br>Sindhudurg District  | Dr. Maruti I. Kumbhar  | 22     |
| 5    | The Geological and Physiographic study of Nilwande Left<br>Bank Canal Command Area for Application of<br>Gravitational Pipeline Canal System | Dr. Anil A. Landge   | 29     |
| 6    | Application of Remote Sensing and Gis in Agriculture   | Dr. Kamlesh R Kamble   | 34     |
| 7    | Analysis of Education Status in the Villages Ghaderni,<br>Parsha and Baror, Kullu District (Himachal Pradesh)                                | Dev Karan  | 39     |
| 8    | An Overview of Tourism in India 2022   | Mr. Balkrishna Shinde,<br>Mr. Anieket Dolas                                    | 45     |
| 9    | Karnataka is The Major Tourist Destination: A<br>Geographical Analysis   | Dr. Prakash B. Holer   | 52     |
| 10   | An Analytical Study of Problems and Prospects of<br>Pomegranate Farming in South Maharashtra   | Prof. S. B. Gaikwad<br>Prof. S. A. Kharat<br>Prof. Waingade, Prof. A. B. Patil | 62     |
| 11   | Impact of Urban Growth on Land Use Changes A Case<br>Study of the Rajpur Sonarpur Municipality of West Bengal                                | Soma Naskar<br>Dr. Subhasis Mondal   | 69     |
| 12   | Economic Impact of Tourism on Residents of Devgad Town in Sindhudurg District  | Dr. Prakash J. Hajare  | 77     |
| 13   | रामगढ़ जिलाँ में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या वृद्धि के<br>बदलते प्रतिरूप': एक भौगोलिक अध्ययन  | डॉ. हेमलाल कुमार मेहता   | 82     |
| 14   | नवीन शैक्षणिक धोरण 2020 मध्ये ग्रंथालयाची भूमिका   | डॉ. विद्या शरद मोदी  | 89     |
| 15   | दुग्ध व्यवसाय - एक शेतीवर आधारित उद्योग  | डॉ. बाजीराव इंगवले   | 96     |



#### THE KONKAN GEOGRAPHER

Vol. No. 31 Nov/Dec. 2023 ISSN No. 2277-4858 Impact Factor (IIFS) 7.125 (Interdisciplinary Peer Review Refreed Research Journal)

### An Analytical Study of Problems and Prospects of Pomegranate Farming in South Maharashtra

Prof.(Dr.) S.B. Gaikwad<sup>1</sup>, Prof. S.A. Kharat<sup>2</sup>, Prof. Waingade<sup>3</sup> & Prof. A.B. Patil<sup>4</sup>
 Professor in Geography, 2. Asst. Prof. in Geography, 3. Asst. Prof. in Psychology and
 Asst. Prof. in Statistics, Miraj Mahavidyalaya, Miraj, Dist.- Sangli (M.S.)

Paper Received on 12-11-2023 Edited & Accepted on 30-12-2023

#### Introduction:

Maharashtra state is one of the leading state in the production of fruit farming in India. Each geographical region having famous for their separate fruit identity i.e. Khandesh for Banana, Konkan for Mango, Cashewnut and Coconut, Western Maharashtra for Grapes, Marathwada for Sweet lemon, Custard apple, Guava and Vidarbha for Orenge. Now a days the area of eastern part of Sangli district, whole Solapur district, southern and eastern part of Satara district are having practices the Pomegranate fruit crop. This crop growing in low irrigation, dry climate, rocky ground with low maintenance, it has also growing in very low budget (Aher & Rahane 2016). Psychologically the farmers are turned to taking the Pomegranate crop instead of traditional crop (Phule, 2002). Hence, the area under Pomegranate fruit crop is growing from 2011 in south Maharashtra. Topography and climate of South Maharashtra is fruitful for Pomegranate Farming.

#### Study Area:

South Maharashtra is selected for the present investigation. Satara, Sangli and Solapur districts are mostly famous for the Pomegranate fruit crop. Therefore here these districts are considered as a south Maharashtra. Topographically this region is divided into three parts i.e. Hilly area, River basin area and Arid means dry area where the annu average rainfall is below 50 cm with average temperature 35° c which is favorable Pomegranate crop cultivation.

#### **Objective:**

-To study the analysis of problems and prospects of Pomegranate farming in South Maharashtra

#### **Database and Methodology:**

Mostly the related information and statistics are collected through the field survey with taking an interview, observations and schedule (questionnaire).

The collected information and statistics are divided in to various types of problems.

Page | 62

THE KONKAN GEOGRAPHER VI 31

67

Deep black soil found along the river banks where certain rainfall is situated predominantly in North Phaltan, Walwa, Miraj and Tasgaon tahsils; medium deep soil observed in places with moderate slopes and supplementary drainage systems with little rainfall; reddish brown soil on hill slope and undulating area; red lateritic soil on ghat tops in the western section of the Shirala tahsil that experiences heavy rains and coarse shallow soil found mostly in Jat and Atpadi tahsils. The depth of the soils ranged from a few metres along the rivers of Warna, Morna, Agrani, Yerala, Man, and Bor to between ten and thirty metres along the river Krishna.

The lack or absence of some infrastructural facilities for pomegranate such as particular market centers, processing industries, export centers, cold storages, packaging houses, specific rail & air transport, etc. are observed in the study area. The pomegranate cultivation of the study area is highly susceptible to climate (specifically high rainfall, humidity, severe droughts), diseases and pests; and due to this the production and rates are highly fluctuates. It directly impacts on growers and indirectly on countries economy.

#### References:

- Aher, Y. L. & Rahane S. (2016): A review of Pomegranate Cultivation, *International Research Journal of Engineering & Technology*, Vol. III, Issue IV, Pp.2083-2088.
- Bidave, G.R. & etal. (2021): Socio-Economic, Communicational & Psychological characteristics of Pomegranate Growers from western Maharashtra, The Farma Innovation Journal-2021, SP-10 (9), Pp.283-287
- Jadhav, S. B. (2023): Pomegranate Cultivation in Sangli district: A Geo-economical Study, unpublished Ph.D. thesis submitted to Shivaji University, Kolhapur
- Phule, B. R. (2002). Pomegranate Cultivation in Solapur District: A Geo-Economical Analysis, unpublished *Ph.D. thesis* submitted to Shivaji University, Kolhapur.

73

ISSN: 2394 5303

Impact Factor

Printing Area® Peer-Reviewed International Journal Issue-108, Vol-03

December 2023

01



Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages December 2023, Issue-108, Vol-03

# **Editor** Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci., B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist, Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.



harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com nal & Reference Book Publisher & Distributors / www.vi

#### Editors Message...

In globalised era Higher Education Plays very crucial role in Development of Nation, as it empowers the individuals with necessary competence for achieving important personal, social and higher level of professional goals. Its importance depicted by words of first Prime Minister Jawaharlal Nehru "A university stands for humanism, for tolerance, for reason, for the adventure of the ideas and for the search of truth. It stands for onward march of human race towards even higher objectives. If the universities discharge their duties adequately, then it well with the nation and the people". India's higher education system is the world's third largest in terms of students, next to China and the United States. Policies and approach adopted by Indian government after implementation of economic reforms are not favorable to the higher education. Since the reforms period there has been a continuously decline in the budgetary allocations made by the government to fund higher education in India. Present paper aims to find out new trends in higher education in India. Paper also discusses various challenges in the field higher education in India.

India has the largest higher educational system with respect to the number of institutions. After the independence of the country, the state and central governments have given great attention to the development of higher education. As a result, the system of higher education in India has seen an impressive growth in terms of a number of universities and colleges. The share of the unaided private sector has increased significantly since 2001 in terms of the number of institutions and enrollment. Indian higher education System comprises three stages under graduate level, post graduate level and doctorate level. The Ministry of Human Resource Development (MHRD) is highest body of Governance which is responsible for supervising the higher education system through UGC. Higher education in India has expanded rapidly over the past two decades. This growth has been mainly driven by private sector initiatives. India's Higher Education sector has witnessed a tremendous increase in the number of Universities/ University level Institutions & Colleges since independence Indian higher education presently includes 892 universities out of which 48 central universalities, 394 state universities, 125 deemed universities and 325 private universities. Apart from the above universities, other institutions are granted the permission to autonomously award degrees. However, they do not affiliate colleges and are not officially called 'universities' but 'autonomous organizations' or "autonomous institutes". They fall under the administrative control of the Department of Higher Education. These organizations include Indian institute of Technology, Indian Institutes of Management, National Institute of Technology and All India Institute of Medical Sciences.

Dr. Bapug Gholap

| ISSN: 2394  | 5303 | Impact<br>Factor | Printing Area®                          | December 2023    | 07 |
|-------------|------|------------------|---|------------------|----|
| 13314. 2337 | 3303 | 0.001 (77777)    | Dana Dandannad Indonesiakan al Januaral | Tague 100 Vol 02 | 07 |

| 9.001(IIJIF) Peer-Reviewed International Journal Issue-108, Vol-03                                       | U7     |
|--|--------|
| 14) GREEN ECONOMY –ISSUES AND CHALLENGES IN INDIA  |        |
| Dr. Rajni Kant Trivedi, Jodhpur (Rajasthan)  | 83     |
| 15) Social Media and Rural Development   | •••••• |
| Dr. Rashmi Yadav, Makronia Bujurg, Sagar   | 88     |
|  |        |
| 16) साहित्याचे भाषिक स्वरूप  |        |
| डॉ. अतुल पाटील, जळगाव  | 92     |
|  | •••••  |
| डॉ. ज्योती सुरेश सूर्यवंशी, धुळे   | 95     |
|  |        |
| 18) भारतीय राजकारण आणि जमातवाद   |        |
| प्रा. डॉ. अरुण मुकुंदराव शेळके, अकोला  | 98     |
| 10) 30 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 -  |        |
| 19) उद्योजकांचे सामाजिक दायित्व (CSR) धोरणाची महाराष्ट्रातील कामगिरी<br>डॉ. राजेंद्र धानाप्पा जेऊर, मिरज | 101    |
| 91. (1918) 41911-41910, 1910-1   |        |
| 20) नातेसंबंधातील हिंसाचार : समाजशास्त्रीय अभ्यास  |        |
| ्रप्राचार्य डॉ. कल्याण मोरे, वलवाडी, ता. जि. धुळे  | 105    |
|  |        |
| 21) शेखावाटी की सन्त परम्परा : सीकर के विशेष सन्दर्भ में   | Llaao  |
| _ पवन कुमार भंवरिया, जयपुर   | 110    |
| े<br>22) भीष्म साहनी की साम्प्रदायिकता के संदर्भ में संवेदना और दृष्टि                                   |        |
| सरवैया चेतनकुमार जे, राजकोट  | 117    |
|  |        |
| 23) जनवादी हिंदी कविता   |        |
| डॉ. सुनीता सिंह, मंधना कानपुर  | 122    |
| 24) 'जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई' नाटक में व्यक्त समस्याएँ   |        |
| शेख हुसैन मैनोद्यीन, हाळी, जि. लातुर   | 126    |
|  |        |
| 25) एनईपी २०२०, उच्च शिक्षा और भारतीय समाज   |        |
| डॉ. अरुणिमा पाण्डेय, धनौरी, हरिद्वार, (उत्तराखण्ड)   | 137    |
| 26) उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के बीच रचनात्मकता और व्यक्तित्व  | •••••• |
| रविन्द्र, डॉ आर.बी. हुल्लोली, चैन्नई   | 143    |
| (17), (1 -11), (2), (1), (1)   |        |
|  |        |

ISSN: 2394 5303

# 19

# उद्योजकांचे सामाजिक दायित्व (CSR) <u>थोरणाची महाराष्ट्रातील कामगिरी</u>

डॉ. राजेंद्र धानाप्पा जेऊर सहाय्यक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), मिरज महाविद्यालय, मिरज

#### गोषवरा :

समाजाचे आपण काहीतरी देणे लागतो या नैतिक जाणिवेतून देशातील विशिष्ट उद्योजकांनी आपल्या वार्षिक नफ्यातील २ टक्के भाग समाजोपयोगी प्रकल्पांवर खर्च करावा आणि समाजाच्या रूणातून अंशत: मुक्त होऊन राष्ट्रअभारणीच्या कार्यास हातभार लावावा या उदात्त हेतूने १ एप्रिल, २०१४ पासून केंद्र सरकारने कंपनी कायदा— २०१३ मधील कलम १३५ (परिशिष्ट ण) च्या माध्यमातून 'उद्योजकांचे सामाजिक दायित्व' (CSR) धोरण लागू करून देशातील उद्योजकांना / कंपन्यांना समाज व राष्ट्रसेवेची संधी उपलब्ध करून दिली आहे. महाराष्ट्र हे देशातील औद्योगिकदृष्ट्या प्रगत राज्य असल्याने महाराष्ट्रातील उद्योजकांना ही संधी इतर राज्यांपेक्षा तुलनेने जास्त आहे. देशाच्या एकूण सीएसआर निधीमधील एकट्या महाराष्ट्राचा वाटा २०१४–१५ मध्ये १४.३६ टक्के तर २०२१—२२ मध्ये तो २०.१६ टक्के इतका होता. महाराष्ट्रात २०२०-२१ या आर्थिक वर्षामध्ये प्राप्त सीएसआर निधीच्या ४८,१८ टक्के भाग शिक्षण, विकलांग सक्षमता, उपजीविका (रोजगार प्राप्ती) इ.गोष्टींशी निगडीत प्रकल्पांवर खर्च झालेला दिसतो. त्यानंतर आरोग्य सुविधा, भूक निर्मूलन, गरिबी आणि कुपोषण कमी करणे, स्वच्छता व सुरक्षित पिण्याचे पाणी इ.गोष्टींशी निगडीत प्रकल्पांवर ३८.७१ टक्के निधी खर्च झालेला दिसतो. याशिवाय पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन, पशु विकास, संसाधनांचे संवर्धन, ग्रामीण विकास प्रकल्प, लिंग समानता, महिला सक्षमीकरण, वृद्धाश्रम, विषमता कमी करणे यासाठीही निधी खर्च

झाला आहे. त्यामुळे शिक्षण आणि आरोग्याच्या सोयी वाढत आहेत, शिवाय भविष्यात ग्रामीण भागात उद्योग येतील व रोजगार संधी वाढतील, त्यामुळे उत्पन्न वाढून राहणीमान वाढेल. ग्रामीण भागातून शहरी भागाकडे होणारे स्थलांतर कमी होईल व शहरीकरणाच्या समस्या कमी होतील. प्रदूषणाची समस्या कमी होईल. मानवी विकास निर्देशांकात वाढ होईल. २०३० पर्यंत UNO ने ठरविलेली जी १७ सहस्त्रक विकास ध्येय्य (MDGs) आहेत ते साध्य करावयाचे आहेत त्या कामी शासनाला हातभार लागेल. श्रेष्ठ आणि समृद्ध भारताचे जे ध्येय गाठावयाचे आहे त्यासही मदतच होईल.

**नमुना शब्द** : सामाजिक उत्तरदायित्व, सामाजिक ऋण, विकलांग सक्षमता, उपजीविका, भूक निर्मूलन, मानवी विकास निर्देशांक, सहस्त्रक विकास ध्येय्य.

#### प्रास्ताविक :

उद्योजकांचे सामाजिक दायित्व (CSR) ही एक उदात्त नैतिक संकल्पना आहे. ज्या समाजामुळे आपला उद्योग भरभराटीस आला, मोठ्या प्रमाणात नफा मिळाला, आपण श्रीमंत उद्योगपती झालो, त्या समाजाचे आपण काहीतरी देणे लागतो या नैतिक जाणिवेतून विशेषत: टाटा, बिर्ला, रिलायन्स, बजाज इ. अनेक भारतीय कंपन्यांनी आपल्या नफ्यातून समाज उपयोगी कार्ये करून खारीचा वाटा उचलण्याचा प्रयत्न केला आहे व त्याची काही उदाहरणे देखील आहेत. परंतु केंद्र सरकारने देशातील विशिष्ट कंपन्यांना सामाजिक बांधीलकीची जाणीव करून देऊन त्यांच्याकडून सामाजिक विकासाच्या दृष्टीने काहीतरी भरीव हातभार लागावा आणि एकंदरीत देशाच्या विकासात त्यांचा सहभाग निर्माण व्हावा या हेतूने कंपन्यांचे सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) धोरण निश्चित केले आणि त्याचा समावेश भारतीय कंपनी कायदा-२०१३ मधील कलम १३५ मध्ये केला व १ एप्रिल २०१४ पासून ते धोरण लागू करण्यात आले आहे. त्या नुसार १) ज्या कंपन्यांची गंगाजळी ५०० को. रु. किंवा त्यापेक्षा जास्त आहे २) ज्या कंपन्यांचे वार्षिक उलाढाल १००० को. रु. किंवा त्यापेक्षा जास्त आहे ३) ज्या कंपन्यांचा वार्षिक नफा ५ कोटी रु. किंवा त्यापेक्षा जास्त आहे. या तिन्ही पैकी कोणतीही एक अट पूर्ण करणार्या कंपन्यांना हे धोरण

| सिंधुदुर्ग              | २.९१   |   |  |   | १.३३  | 35  |
|-------------------------|--|---|--|---|---|---|
|                         | 44.9.3   | 50  | ₹0   | वासिम   | 9.69  | 38  |
| नाशिक                   | <b>७४.९२</b>   | ų   | 38   | नागपूर  | 30.92   | 9   |
| अहमदनगर                 | 30,66  | 4   | 32   | भंडास   | ×.8€  | ЗХ  |
| जळगाव                   | 8.34   | 23  | 33   | चंद्रपूर  | 4.78  | २१  |
| धुळे                    | <b>6.33</b>  | 3.6   | 38   | गोंदिया   | 0.88  | 34  |
| <b>नं</b> दुरबार        | २३.२७  | 20  | 34   | वर्धा   | 8.88  | 20  |
| संभाजीनगर<br>(औरंगाबाद) | 98.₹€  | ξ   | 36   | गडचिरोली  | ₹.३२  | १५  |
| सामाजिक उत्तर           | दायित्व निधी   | द्वारे झालेल  | ा खर्च (परंत्  | जिल्ह्यांच्या नावाचा  | उल्लेख नसलेला-  | -) २०२७.४   |
|                         | जळगाव<br>धुळे<br>नंतुःबार<br>संभाजीनगर<br>(औरंगाबाद) | जळगाव ४.३५<br>घुळे ७.२१<br>नंदुबार २३.२७<br>संभाजीनगर ७३.४६<br>(औरंगाबाद) | जळगाब ४.३५ २३<br>घुळे ७.२१ १८<br>नंदुबार २३.२७ १०<br>संभाजीनगर ७३.४६ ६ | जळगाव ४.३५ २३ ३३<br>धुळे ७.२१ १८ ३४<br>नंजुला २३.२७ १० ३५<br>संभावीमगर ७३.४६ ६ ३६ | जळगाव ४.३५ २३ ३३ घंड्रपू<br>घुळे ७.२१ १८ ३४ गॉदिया<br>नंतुलार २३.२७ १० ३५ वर्षा<br>१७३४६ ६ ३६ गडियोली | जळगाव ४.६५ २३ ३३ चंद्रपूर ६.२४<br>घुळे ७.२१ १८ ३४ गॉदिया ०.४४<br>नंजुबार २३.२७ १० ३५ वर्षा ६.६९<br>संभाजीनगर ७३.४६ ६ ३६ गडचिरोली ९.३२ |

### महाराष्ट्रातील महसुली विभागवार सामाजिक उत्तरदायित्व निधीचा विनियोग:

महाराष्ट्रात एकूण सहा महसुली / प्रशासकीय विभाग आहेत. सामाजिक उत्तरदायित्व निधीचा विभागवार आढावा घेतल्यास असे दिसून येते की, मुंबई (कोकण) विभागात सर्वात जास्त म्हणजे ४६.६२ टक्के सीएसआर निधी खर्च झालेला दिसतो, त्या खालोखाल पुणे विभागाचा क्रमांक लागतो. पुणे (पश्चिम महाराष्ट्र) विभागात ३१. १५ टक्के सीएसआर निधी खर्च झालेला दिसतो. नाशिक (उत्तर महाराष्ट्र) विभागात ६.६२ टक्के सीएसआर निधी खर्च झालेला दिसतो. मुंबई पुणे व नाशिक या तीन विभागात मिळून ८७.७१ टक्के तर उर्वरित औरंगाबाद (संभाजीनगर—मराठवाडा), अमरावती व नागपूर (विदर्भ) या तीन विभागात मिळून १२.२६ टक्के सीएसआर निधी खर्च झाल्याचे निदर्शनात येते.

### तक्ता क्रमांक -४ महाराष्ट्रातील महसुली विभागवार सामाजिक उत्तरदायित्व निधीचा विनियोग: २०२०-२१ (रु. कोटी.)

| प्रशासकीय विभाग व<br>मुख्यालयाचे ठिकाण | जिल्ह्यांची<br>संख्या | जिल्ह्यांची नावे   | सामाजिक उत्तरदायित्व<br>निधीद्वारे झालेला खर्च<br>(रु. कोटी.) |
|--|-----------------------|--|---|
| पुणे<br>(पश्चिम महाराष्ट्र)            | ાધ                    | पुणे, सोलापूर, सातास. कोल्हापूर, सांगली  | ४४६.९७  |
| मुंबई<br>(कोकण)                        | 010                   | मुंबई, मुंबई उपनगरे,ठाणे, पालघर, रायगड,<br>रत्नागिरी, सिंधुर्श                 | ६६९.१२  |
| नाशिक<br>(उत्तर महाराष्ट्र )           | هاه                   | नाशिक, अहमदनगर, जळगाव, धुळे, नंदुरबार  | १४२.४१  |
| सां भाजीनगर् औरंगाबाद)<br>(मराठवाडा)   | 06                    | सांभाजीनगर(औरंगाबाद), जालना, बीड,<br>हिंगोली, उस्मानाबाद, लातूर, नांदेड, परभणी | 98.88   |
| अमरावती<br>(विदर्भ)                    | ૦૫                    | अमरावती, यवतमाळ, अकोला, बुलढाणा,<br>वाशिम                                      | £8.99   |
| नागपूर<br>(विदर्भ)                     | ०६                    | नागपू, चंद्रपू, भंडारा, गडचिरोली, गोंदिया,<br>वर्धा                            | 11.98   |
| सामाजिक उत्तरदायित्व वि                | नेधीद्वारे झाले       | ।<br>ला खर्च (परंतु जिल्ह्यांच्या नावाचा उल्लेख नसलेला-)                       | २०२७,४६   |
|  | सा                    | माजिक उत्तरदायित्व निधीद्वारे झालेला एकूण खर्च                                 | ३४६२.१५   |

मराठवाडा त्या खालोखाल उत्तर महाराष्ट्रात उद्योगांची संख्या कमी आहे असल्याने सीएसआर निधी कमी उपलब्ध झाला आहे व कमी खर्च झाला आहे. यामुळे सामाजिक उत्तरदायित्व निधीच्या खर्चा बाबतही प्रादेशिक विषमता दिसून येते.

#### सूचना:

सीएसआर निधीचा सकारात्मक वापर होऊन समाजाचे हित साध्य झाले पाहिजे, सामाजिक विषमता कमी झाली पाहिजे आणि कंपन्यांनाही असे वाटले पाहिजे की खरोखरच आपला निधी सत्कर्मी लागला आहेय त्यासाठी काही सूचना केल्या आहेत.

- १. सीएसआर प्रकल्प हे प्रामुख्याने पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन आणि ग्रामीण विकासावर भर देणारे असले पाहिजेत. कारण आजही ग्रामीण महाराष्ट्रातील आरोग्य, शिक्षण, पिण्याचे पानी, स्वच्छता गृहे, सांडपाण्याची व्यवस्था, रस्ते, खेळ याबाबतीत शहरी भागापेक्षा फारच मागे आहेत.
- २. सीएसआर धोरणाच्या कक्षेत येणाऱ्या कंपन्यांना निधी खर्च करण्याबाबत संबंधित जिल्हा किंवा विभाग ही भौगोलिक क्षेत्राची मर्यादा असू नये, संपूर्ण राज्य हे त्यांचे कार्यक्षेत्र असले पाहिजे.
- ३. विकसित जिल्ह्यातील सीएसआर निधी अविकसित भागाकडे वळविला पाहिजे. सीएसआर प्रकल्प राबविताना तुलनात्मक दृष्ट्या मागास असलेल्या विदर्भ, मराठवाडा व उत्तर महाराष्ट्रातील दुर्गम जिल्ह्यांना
- ३. शहरी भागासाठी सीएसआर निधी खर्च करताना झोपडपट्टी क्षेत्र विकासासाठी प्राधान्य द्यावे.
- ४. सीएसआर प्रकल्प प्रभावीपणे राबविण्यासाठी महाराष्ट्र सरकारनेही गुजरात आणि गोवा राज्याच्या धर्तीवर रवतंत्र 'सीएसआर प्राविकरणाची' स्थापना करावी.
- ५. सीएसआर प्राधिकरण हे पूर्णत: राजकारण आणि राजकीय प्रभावापासून मुक्त असावे व प्राधिकरणाच्या संचालक मंडळात सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरण, शासकीय, खेळ, कला, साहित्य, कृषी, अशा विविध क्षेत्रातील तज्ञ व्यक्तींचा समावेश असावा.
- ४. सीएसआर प्रकल्प हे फक्त आणि फक्त कंपनी कायदा: २०१३ मधील परिशिष्ट ७ मध्ये समाविष्ट केलेल्या यादीतीलच असले पाहिजेत.

समारोप :

Peer Reviewed ISSN Approved | Impact Factor: 7.17

# INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

International Peer Reviewed & Refereed Journals, Open Access Journal E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.17 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier (DOI), UGC Approved Journal NO: 43602(19)

Publisher and managed by: IJ Publication

Website: www.ijrar.org | E-mail: editor@ijrar.org



IJRAR | www.ijrar.org

| 10 | Dr. R. D. Jeur | Impact of social corporate responsibility CSR on social wellbeing |
|----|----------------|---|
|----|----------------|---|



# INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND **ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG**

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Ref No: IJRAR/Vol 10 Issue 4/877

Dr. Rajendra Dhanappa Jeur

Publication Date 2023-12-21 07:21:58

Subject: Publication of paper at International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR).

Dear Author,

With Greetings we are informing you that your paper has been successfully published in the International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR) - IJRAR (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138). Thank you very much for your patience and cooperation during the submission of paper to final publication Process. It gives me immense pleasure to send the certificate of publication in our Journal. Following are the details regarding the published paper.

About IJRAR : UGC and ISSN Approved - International Peer Reviewed Journal, Refereed

Journal, Indexed Journal, Impact Factor: 7.17, E-ISSN 2348-1269, P- ISSN

2349-5138

UGC Approval: UGC Approved Journal No: 43602

Registration ID: IJRAR 279858 Paper ID : IJRAR23D2877

Title of Paper : IMPACT OF CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY (CSR) ON

SOCIAL WELLBEING

Impact Factor : 7.17 (Calculate by Google Scholar) | License by Creative Common 3.0

DOI

Published in : Volume 10 | Issue 4 | December 2023

Publication Date: 2023-12-21 07:21:58

Page No : 159-166

Published URL: http://www.ijrar.org/viewfull.php?&p id=IJRAR23D2877

: Dr. Rajendra Dhanappa Jeur

Thank you very much for publishing your article in IJRAR. We would appreciate if you continue your

support and keep sharing your knowledge by writing for our journal IJRAR.

R.B. Joshi

Editor In Chief

International Journal of Research and Analytical Reviews - IJRAR (E-ISSN 2348-1269, P-ISSN 2349-5138)

















E-ISSN 2348-1269 P- ISSN 2349-5138 **JRAR** 

(A) (A)

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Monthly, Indexing in all Major Database & Metadata, Citation Generator

Manage By: IJPUBLICATION Website: www.ijrar.org | Email ID: editor@ijrar.org



# Impact of Corporate Social Responsibility (CSR) on Social Wellbeing

**Dr. Rajendra Dhanappa Jeur**, Assistant Prof. (Economics), Miraj Mahavidyaaya, Miraj Dist. Sangli

#### Abstract:

Government of India has given an opportunity to some specific eligible corporates from 1 April, 2014 to work for social well-being through the policy of Corporate Social Responsibility (CSR). In this research paper researcher has tried to illuminate the performance of CSR policy during 2014-15 to 2021-22. It is observed that in the post NEP era, non-PSUs are positively participating in social activities through CSR policy. In the Indian Economy, as compared to other states Maharashtra, Karnataka, Gujrat, Tamil Nādu and Andhra Pradesh are industrially forward states where CSR fund is raised more and spent more on social activities. Bihar, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Rajasthan, West Bengal are demographically big states but industrially underdeveloped; these states dropped behind to raise CSR fund and lagged behind in activities towards social welfare. Unfortunately, it seems that CSR policy widens regional social imbalance in the country which in unexpected. Through the amendments in CSR policy, negative picture should be converted into positive and it is possible. Proper training to CSR executives in corporates and transparent strategy of implementation will definitely help to the country to achieve 17 MDGs by 2030 and sustainable development. On the other side, corporates in India will enjoy the opportunity to participate in social service and nation building task through CSR policy. Even though much improvement is desired in CSR strategies in India in the near future.

• Key Words: Corporate Social Responsibility, Voluntary Commitment, Sustainable Development, Millennium Development Goals, Social Welfare.

#### • Introduction:

India is the first country in the World to have mandated Corporate Social Responsibility (CSR) for certain corporate entities as demarcated in the Company Act-2013. CSR is a form of self-regulation that reflects a business's accountability and commitment to contributing the welfare of society through various socially and environmentally useful productive activities. Basically, it represents the relationship between businesses and the society. The concept of CSR is not new for India. The Indian corporates like Tata, Reliance (Ambani), Birla, Bajaj, Dalmia and so many others whose founder were more a nation-builders than businessmen seeking profits were very involved in trying to tackle many social problems even before the term CSR formally entered the vocabulary of management texts. Central public sector undertakings (CPSU) had been carrying out CSR activities under DPE guidelines since 2010. Under these guideline, every profit CPSU was mandated to spend certain percentage of profit after tax on CSR. At present Central and State public undertaking are covered under the CSR act.

#### Conclusion:

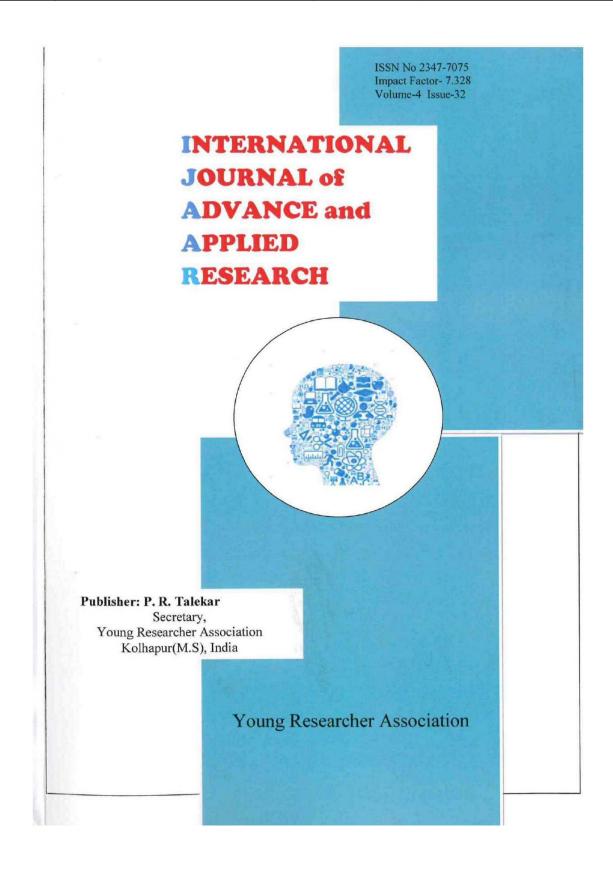
The notion of inclusive growth is widely accepted as a mission for development from 11<sup>th</sup> five-year plan. In line with this national endeavor, Central Government has given an opportunity to the corporate world in India to work for social welfare through the CSR policy from 1 April, 2014. In the post NEP era, non-PSUs are positively participating in social activities through CSR policy. Comparatively, it is observed that Maharashtra, Karnataka, Gujrat, Tamil Nādu and Andhra Pradesh are the chief states where CSR fund is raised more and spent more on social activities. Bihar, Uttar Pradesh, Madya Pradesh, West Bengal are demographically big states but industrially underdeveloped; these states dropped behind to raise CSR fund and lagged behind in activities towards social welfare. Unfortunately, it seems that CSR policy widens regional imbalance in the country which in unexpected. Through the modifications in CSR policy, negative picture should be converted into positive and it is possible. In the Post-liberalization NGOs are becoming associates of corporates with regard to the CSR activities; corporates should take benefit of this opportunity. Together with proper training to CSR executives in corporates and transparent implementation strategy will definitely help to the country to achieve 17 MDGs by 2030 and sustainable development. On the other side, corporates in India will enjoy the opportunity to participate in social service and nation building task through CSR policy. Even though much improvement is desired in CSR strategies in India in the near future.

#### • References:

- 1. Jorge A. Arevalo and Deepa Arvind. (Aug., 2011). Corporate Social Responsibility Practices in India: Approach, Drivers, and Barriers, *Corporate Governance International Journal of Business in Society*. DOI: 10.1108/14720701111159244
- 2. Gupta and Arora. (2014). Study of Corporate Social Responsibilities in the Central Public Sector Enterprises of India. Available at http://www.academia.edu/6138096
- 3. Rangan, V. K., Chase, L. & Karim, S. (2015). 'The Truth About CSR'. Harvard Business Review.
- 4. Behringer K.& Szegedi K. (August, 2016). The Role of CSR in Achieving Sustainable Development-Theoretical Approach, *European Scientific Journal*, Vol.12, No.22, p.10-22. DOI:10.19044/ESJ. 2016.V12N22P10
- 5. Pavlo Brin, and Mohamad N. Nehme. (September, 2019). Corporate Social Responsibility: Analysis of Theories and Models." *Eureka: Social and Humanities*, no.5, pp. 22-30, doi:10.21303/2504-5571.2019.001007.
- 6. Dr. Madhu Bala. (2020). Empirical Investigation of Current Status of Corporate Social Responsibility in Indian Organizations, *National Research Journal of Social Sciences*), Vol.-5, Issue-2, pp.44-53.
- 7. Pinki and Aryan. (January, 2023). Present Position of Corporate Social Responsibility (CSR) in India: A Descriptive Study, *Asian Journal of Economics, Finance and Management*, Issue 1, Volume 9, Page 1-12
- 8. Dey Sanjeeb K and Dash A. P. (July, 2020). CSR Practices by Indian Companies: A Review of Literature, *International Journal for Research in Engineering Application & Management(IJREAM)*, Vol.-04, Issue-02, DOI: 10-18231/2454&9150-2018-0260
- Report of High Level Committee on CSR Policies (Sept., 2015). Ministry of Corporate Affairs, Government of India
- 10. https://www.csr.gov.in/content/csr/global/master/home/ExploreCsrData/mis-reports/psu-nonpsu-wise.html
- 11.https://www.csr.gov.in/content/csr/global/master/home/ExploreCsrData/mis-reports/state-wise-report.html
- 12.https://www.csr.gov.in/content/csr/global/master/home/ExploreCsrData/mis-reports/development-sector-wise.html

Dr. S. B. Shinde, Mr. R. N. Dhale

# डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या दलितांच्या शिक्षणातील सहकारी दलित मित्र शिवराम कृष्णाजी तीरमारे



| 52 | डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या दलितांच्या शिक्षणातील सहकारी "दलितमित्र शिवराम कृष्णाजी तिरमा<br>डॉ.श्रीधर भाऊसाहेब शिंदे, प्रा.रविंद्र नामदेव |              |
|----|---|--------------|
| 53 | दलित अस्मिता का जीवंत दस्तावेज : 'डंक'<br>डॉ. श्रीकांत पा   | टील 243-244  |
| 54 | व्यक्तित्व विकास में शिक्षा और आत्मविश्वास की भूमिका<br>Dr. Divya Si  | ngh 245-247  |
| 55 | पंजाबराव देशमुख यांचे प्राथमिक शिक्षण विषयक विचार.<br>पंढरीनाथ पोपट शे  | 248-251      |
| 56 | कालिदास की कृतियों में प्रकृति प्रेम<br>मधुबाला   | मीना 252-255 |
| 57 | सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जयप्रकाश नारायण की भूमिका<br>डॉ. सुधीर कुमार   | 256-258      |



# International Journal of Advance and Applied Research

www.ijaar.co.in

ISSN - 2347-7075 Peer Reviewed Vol.4 No.32

Impact Factor - 7.328 **Bi-Monthly** Sept-Oct 2023



# डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या दलितांच्या शिक्षणातील सहकारी "दलितमित्र शिवराम कृष्णाजी तिरमारे"

डॉ. श्रीधर भाऊसाहेब शिंदे।, प्रा.रविंद्र नामदेव ढाले2

¹सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, मिरज महाविद्यालय, मिरज 2मिरज महाविद्यालय,मिरज

Corresponding Author- डॉ. श्रीघर भाऊसाहेब शिंदे

E-mail: shridharshinde2022@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.10016409

प्रास्ताविक:-

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी मुंबई येथे १९४५ साली पीपल्स एज्युकेशन सोसायटीची स्थापना केली १. त्यामुळे या संस्थेच्या शाळा महाविद्यालया मधून दलित मुलांच्या बरोबर दलितेतर मुले-मुली मुद्धा शिकू लागली. १९२०च्या दरम्यान दलितांना शिक्षण घेणे दुरापास्त असणाऱ्या समाजाच्या शिक्षणासाठी १९४५ मध्ये स्वतंत्र संस्था काढून आधुनिक भारताच्या परिवर्तनाची फार मोठी स्वप्ने रंगवून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी ही स्वप्ने प्रत्यक्षात उतरविल्याचे दिसते. फक्त शिक्षणाचा विचार मांडूनच ते गप्प बसले नाहीत, तर शक्य त्या संधीचा फायदा घेऊन मागासवर्गीयांना शिक्षणाचे द्वार मुक्त करणारे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे स्वातंत्र्योत्तर भारताच्या निर्मितीचे प्रेरणास्थान ठरतात.

डॉ. बावासाहेब आंबेडकर हे १९३५च्या घटनात्मक सुधारणे नंतर मुंबई विधानसभेवर सदस्य म्हणून नियुक्त झाले. यामुळे राजकारण, घटनानिर्मिती व इतर अनेक कामात गुंतल्यामुळे वैचारिक व विहित कार्य साध्य करण्यासाठी त्यांना सुशिक्षित व समाजपरिवर्तनाची जाणीव असणाऱ्या सहकाऱ्यांची गरज होती. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे एक असे असामान्य व्यक्तिमत्व होते की त्यांच्या कार्यामध्ये मदत करणाऱ्या निष्ठावान सहकाऱ्यांची शृंखलाच तयार केली. त्यांच्यावर निष्ठा ठेवणारे आणि सक्रिय मदत करून त्यांचे कार्य पुढील टप्प्यात पोहोचविणारे अनेक सहकारी समर्थपणे त्यांच्या मदतीस आले. त्यामुळेच त्यांनी अल्पावधीत फार मोठी गरुडझेप मागासवर्गीयांच्या शैक्षणिक प्रगतीमध्ये घेतली..

डॉ. बासाहेब आंबेडकरांच्या महापरिनिर्वाणानंतर मात्र औरंगाबाद, नाशिक, महाड, मुंबई येथे शैक्षणिक काम जोमात चालले. त्याचबरोबर कमी अधिक प्रमाणात कोल्हापुर, सांगली आणि सातारा या पश्चिम महाराष्ट्रातील जिल्ह्यातही त्यांच्या सहकाऱ्यांनी आणि नंतरच्या दलित नेत्यांनी शैक्षणिक काम केले. या तीन जिल्ह्यात खासकरून छत्रपती शाहू महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटील यांच्या शैक्षणिक कामामुळे डॉ. आंबेडकरांनी हयात असताना कोणतीही शिक्षणसंस्था काढली नाही. याचा परिणाम म्हणून नंतरच्या ही त्यांच्या सहकाऱ्यांनी स्वतंत्र अशा दलितांच्या शैक्षणिक संस्था उभ्या केल्या नाहीत.

संशोधन पद्धती:-

इतिहास हे सामाजिक शास्त्र आहे. त्यामुळे सामाजिक शास्त्रात वापरल्या जाणाऱ्या पद्धतीचाच वापर या संशोधन पेपर साठी केला आहे.यामध्ये खासकरून प्रश्नावली आणि मुलाखत तंत्रांचा वापर केला आहे. दलितमित्र शिवराम कृष्णाजी तीरमारे यांचा जीवन परिचय

सांगली जिल्ह्यातील दलितमित्र शिवराम कृष्णाजी तीरमारे यांनी छत्रपती शाहू महाराज आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या विचारांनी, कार्य कर्तृत्वानी प्रभावीत होऊन आपणही त्यांच्या वाटेने जावे, गोर-गरीव मागासवर्गीय लोकांसाठी सुरू केलेला शिक्षणाचा यज्ञ तो पुढे तसाच तेवत ठेवण्याचे काम सांगली जिल्ह्यामध्ये तीरमारे यांनी केले. 'शिवराम कृष्णाजी तिरमारे' यांना 'तिरमारे गुरुजी' आणि 'अण्णा' या नावाने सर्वजण ओळखत होते. शिवराम कृष्णाजी तिरमारे यांचा जन्म दुधोंडी (ता. पलूस, जिल्हा सांगली) येथे २४ एप्रिल १८९३ रोजी झाला. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण दुधोंडी येथेच झाले.

पैलवानचा खुराक देणारी व्यक्ती पहाण्यासाठी हांडे पाटील तालीमचे पाहुणे वसतीगृहाला भेट देण्यासाठी आले होते. बापट वसतिगृहाला मान्यवरांची भेट:-

राजकारणाशी कोणताही संबंध नसलेले गुरूजी सर्व लोकांशी सारखेच वागत होते. त्यामुळे त्यांच्याशी सर्व पक्षीय लोकांचे पटत होते. वसतीगृहाला देशातील आणि राज्यातील मान्यवरांनी भेट देवून वसतीगृहाचे कौतुक केले. त्यामध्ये म. गांधी, विनोबा भावे वसंतदादा पाटील, राजारामबापू पाटील, ज्येष्ठ साहित्यिक शंकरराव खरात, सुशिलकुमार शिंदे, रत्नाकर वाघ अशा अनेक मान्यवरांनी वसतिगृहाला भेट दिली. गुरूजींच्या शेवटच्या काळात संस्थेमध्ये संघर्षाला सुरूवात झाली. दरम्यान मागासवर्गीय लोकांच्या राहण्याचा मोठा प्रश्न निर्माण झाला. तो प्रश्न सोडविण्यासाठी ४८ मागासवर्गीय लोकांची सोसायटी गुरूजींनी स्थापन केली व आज त्या जागेवरती या सर्व लोकांची घरे दिमाखात उभी आहेत. ते म्हणजे आजचे शास्त्रीनगर. शासनाकडून जागा घेऊन गृहनिर्माण करणारे गुरुजी ही तत्कालीन महाराष्ट्रातील पहिली व्यक्ती असावी.

गुरुजींचे निधन:-

या वसतीगृहातील विद्यार्थी आरवाडे हायस्कूल, सिटी हायस्कूल, सांगली हायस्कूल येथे शाळेसाठी जात. तेव्हा शाळेत त्यांची प्रगती पाहण्यासाठी स्वतः गुरूजी पालक म्हणून जात होते.. विद्यार्थ्यांचे निकाल अत्यंत चांगले असायचे कारण गुरूजी प्रत्येक विद्यार्थ्यांकडे वैयक्तिक लक्ष देत होते. २६ एप्रिल १९७८ रोजी गुरुजींचे निधन झाले प्रिमाची वार्ता तत्कालीन मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटील यांना समजली व सकाळच्या ७.०० च्या वातम्यामधून संपूर्ण महाराष्ट्रात तिरमारे गुरूजींच्या निधनाची वार्ता पसरली.

गुरूजींच्या निधना वेळी संस्थेचे चेअरमन राजाराम भोसले होते तर सचिव म्हणून य. दा. कांबळे काम पाहत होते. गुरूजी सारखे काम नंतरच्या व्यवस्थापकीय मंडळातील सदस्यांनी केले नाही. त्यामुळे संस्थेला उतरती कळा लागली. आणि १९९६ साली विद्यार्थ्यांअभावी शासनाने वसतीगृहाचे अनुदान बंद केले ते अद्याप वंद आहे. पण गुरूजींची वसतीगृहावरची निष्ठा लक्षात घेवून त्यांचा मुलगा बजरंग आणि त्यांची नात स्मिता तिरमारे यांनीही संस्था वाचविण्याचा अटोकाट प्रयक्ष केला.

गुरूजींची नात स्मिता तिरमारे सध्या कार्यरत:-

आज तिरमारे गुरूजींची नात स्मिता तिरमारे संस्थेच्या सेक्रेटरी आहेत. त्यांनी २००८ साली पुन्हा

डॉ. श्रीधर भाऊसाहेब शिंदे, प्रा.रविंद्र नामदेव ढाले

आपल्या सहकान्यांच्या मदतीने गेलेली जमीन परत पेटली आणि बंद पडलेले वसतीगृह सुरू केले. संघर्ष कितीही असला तरी पुन्हा फेर जुळणी करून वसतीगृह पूर्वपदावर आणण्याचा संकल्प स्मिता तिरमारे यांनी केला आहे. त्यांना अनेकांची साथ आहे. त्यामध्ये बाजीराव गोंधळी, प्रा. रविंद्र ढाले व इतर खंवीर साथ देत आहेत.

#### समारोप:-

डाॅ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या प्रेरणेमुळे दिलत, मागासवर्गीय मुलांचे वासतीग्रह सुरु करावे, यासाठी स्वताच्या पत्नीचा त्याग केला, कुटुंबाची वाताहत झाली तरीही ज्ञान दानाचे हे पवित्र काम गुरुजींनी अखंड सुरु ठेवले. त्यांच्या वसतिगृहात शिकलेली मुले आज मोठ्या हुद्द्यावर आहेत. ही प्रेरणा समाजासाठी फार महत्वाची होती.

#### निष्कर्ष:

- डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या प्रेरणेमुळे दलित, मागासवर्गीय मुलांचे वासतीग्रह सुरु करावे ही भावना तीरमारे गुरुजींच्या मनात निर्माण झाली.
- ही प्रेरणा इतकी प्रबळ होती की गुरुजींनी पत्नीचे ४० तोळे सोन्याचे दागिने वसतिगृहाच्या इमारतीसाठी विकले, परिणामी गुरुजी कुटुंबच्या रोषाला बळी पडले.
- राजे पटवर्धन, छ.शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सहकार्यामुळे तीरमारे गुरुजी हे काम
- उदंड लोकप्रेमामुळे आणि शाश्वत कार्यामुळे तीरमारे गुरुजींना महाराष्ट्र शासनाने "दिलतिमित्र" या लोकप्रीय उपाधीने गौरविले.
- सध्या गुरुजींनी सुरु कलेले बापट वसतिगृह अत्यंत अडचणीचा सामना करीत शहरातील इतर वासतीगृहाप्रमाणे टिकवून ठेवण्याचे काम गुरुजींचा मुलगा बजरंग आणि नात स्मिता तीरमारे हे करीत आहेत.

#### संदर्भ:-

- स्मिता तीरमारे (शिवराम कृष्णाजी तीरमारे यांचे नात) यांची प्रत्यक्ष मुलाखत, सांगली, २०/०१/२०२०
- 2. बापट वसतिगृहाचे दप्तर, सांगली
- 3. कित्ता
- 4. कित्ता

| 12 | Dr. S. B. Shinde | आंबेडकरोत्तर काळातील दलितांच्या<br>शिक्षणातील बाबासाहेब वडगावकर यां<br>कोल्हापूर जिल्ह्यातील शैक्षणिक योगद |
|----|------------------|--|
|    |                  | काल्हापूर ।जल्ह्याताल शक्षाणक यागव   |

Education and Society (शिक्षण आणि समाज)

Special Issue UGC CARE Listed Journal ISSN 2278-6864

# Education and Society

The Quarterly dedicated to Education through Social Development and Social Development through Education

**July 2023** 

(Special Issue-1/ Volume-IV)



**INDIAN INSTITUTE OF EDUCATION** 

128/2, J. P. Naik Path, Kothrud, Pune - 411 038

| ४२. आंबेडकरोत्तर काळातील दलितांच्या शिक्षणातील बाबासाहेब वडगावकर यांचे कोल्हापूर<br>जिल्ह्यातील शैक्षणिक योगदान              |     |
|--|-----|
| डॉ. श्रीधर भाऊसाहेब शिंदे  | 222 |
| ४३. दलित आत्मकथनातील स्त्री संवेदना  |     |
| प्रा. डॉ. जयकुमार चंदनिशिवे  | 227 |
| ४४. नाट्यकलेचा उद्गम आणि ऐतिहासिक संदर्भ   |     |
| सौ. वंदना आदगोंडा पाटील  | 230 |
| ४५. सांगली शहराचे नागरीकरणात पटवर्धन संस्थानचे योगदान  |     |
| सौ. सुनिता पारमित धम्मिकर्ती, डॉ. आर. एन. कांबळे   | 235 |
| ४६. भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील स्थानिक नेत्यांची भूमिका महाराष्ट्राचे शिल्पकार सांगलीचे<br>भाग्यविधाते श्री वसंत दादा पाटील |     |
| कु. सुचेता भूपाल कांबळे  | 240 |
| ४७. कुरुंदवाड (सिनियर) संस्थानचे सुधारणावादी राज्यकर्ते: राजे चिंतामणराव पटवर्धन   |     |
| (१८७६- १९०८)   |     |
| डॉ. दत्तात्रय रामचंद्र डुबल  | 244 |
| ४८. कागल तालुका व सीमा भागातील दुलंक्षित स्त्रिया: विशेष संदर्भ १९४२ ची चलेजाव   |     |
| चळवळ (स्थानिक इतिहासाच्या अनुषंगाने)   |     |
| डॉ. संतोष अभिमन्यू जेठीथोर   | 250 |
| ४९. खाद्यसंस्कृती इतिहास लेखनप्रकाराची तांडओळख; मराठेकालीन खाद्यसंस्कृतीची कांही   |     |
| उदाहरणे  |     |
| प्रा. सचिन सुभाष बोलाईकर   | 252 |
| ५०. हास्य व्यंग्य उपन्यास " पुत्तल का पुष्पवटुक " में ग्रामीण बोध  |     |
| डॉ. कविता अजीतसिंह सुल्ह्यान   | 260 |
| ५१. आधुनिक हिन्दी कहानी में वृध्द विमर्श   |     |
| प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर   | 264 |

# आंबेडकरोत्तर काळातील दलितांच्या शिक्षणातील बाबासाहेब वडगावकर यांचे कोल्हापुर जिल्ह्यातील शैक्षणिक योगदान

डॉ. श्रीधर भाऊसाहेब शिंटे मिरज महाविद्यालय, मिरज

प्रसायना

शिक्षण हे समाज परिवर्तनाचे महत्वाचे साधन आहे. ऐतिहासिक दृष्टीकोनातून एखाद्या समाजाचा शैक्षणिक विकास समजून घेणे म्हणजेच पर्यायाने त्या समाजामधील सामाजिक बदल समजून घेणे होय. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी मुंबई येथे १९४५ साली पीपल्स एज्युकेशन सोसायटीची स्थापना केली१. त्यामुळे या संस्थेच्या शाळा महाविद्यालया मधून दलित मुलांच्या बरोबर दलितेतर मुले-मुली सुद्धा शिक् लागली. १९२०च्या दरम्यान दलितांना शिक्षण घेणे दुरापास्त असणाऱ्या समाजाच्या शिक्षणासाठी १९४५ मध्ये स्वतंत्र संस्था काढ्न आधुनिक भारताच्या परिवर्तनाची फार मोठी स्वप्ने रंगवून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी ही स्वप्ने प्रत्यक्षात उतरविल्याचे दिसते. फक्त शिक्षणाचा विचार मांडूनच ते गप्प बसले नाहीत, तर शक्य त्या संधीचा फायदा घेऊन मागासवर्गीयांना शिक्षणाचे द्वार मुक्त करणारे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे स्वातंत्र्योत्तर भारताच्या निर्मितीचे प्रेरणास्थान ठरतात, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे १९३५च्या घटनात्मक सुधारणे नंतर मुंबई विधानसभेवर सदस्य म्हणून नियुक्त झाले. यामुळे राजकारण, घटनानिर्मिती व इतर अनेक कामात गुंतल्यामुळे वैचारिक व विहित कार्य साध्य करण्यासाठी त्यांना सुशिक्षित व समाजपरिवर्तनाची जाणीव असणाऱ्या सहकाऱ्यांची गरज होती. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे एक असे असामान्य व्यक्तिमत्व होते की त्यांच्या कार्यामध्ये मदत करणाऱ्या निष्ठावान सहकाऱ्यांची शृंखलाच तयार केली. त्यांच्यावर निष्ठा ठेवणारे आणि सक्रिय मदत करून त्यांचे कार्य पढील टप्प्यात पोहोचविणारे अनेक सहकारी समर्थपणे त्यांच्या मदतीस आले. त्यामुळेच त्यांनी अल्पावधीत फार मोठी गरुडझेप मागासवर्गीयांच्या शैक्षणिक प्रगतीमध्ये घेतली.. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या महापरिनिर्वाणानंतर मात्र औरंगाबाद, नाशिक, महाड, मुंबई येथे शैक्षणिक काम जोमात चालले. त्याचबरोबर कमी अधिक प्रमाणात कोल्हापूर, सांगली आणि सातारा या पश्चिम महाराष्ट्रातील जिल्ह्यातही त्यांच्या सहकाऱ्यांनी आणि नंतरच्या दलित नेत्यांनी शैक्षणिक काम केले. या तीन जिल्ह्यात खासकरून छत्रपती शाह् महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटील यांच्या शैक्षणिक कामामुळे डॉ. आंबेडकरांनी हयात असताना कोणतीरी शिक्षणसंस्था काढली नाही. याचा परिणाम म्हणून नंतरच्या ही त्यांच्या सहकाऱ्यांनी स्वतंत्र अशा दलितांच्या शैक्षणिक संस्था उभ्या केल्या नाहीत.

#### संशोधनाचा हेत:

कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये मात्र मा. ई. कुरणे, मधुकर शिर्के, नानासाहेब माने, जयवंतराव आवळे, रंगराव मांडरे, बाबासाहेब वडगावकर इ. आंबेडकरोत्तर दुसऱ्या फळीतील नेत्यांनी स्वताच्या अशा शैक्षणिक संस्था उभ्या करण्याचा प्रयत्न केला. आणि तो यशस्वीही करून दाखविला २ त्यामध्ये बाबासाहेब वडगावकर यांनी सामाजिक, राजकीय, धार्मिक कामाबरोबर रचनात्मक असे शैक्षणिक काग कोल्हापूर मध्ये केले. त्यांच्या शैक्षणिक कामाचा अभ्यास कारणे हा या संशोधनाचा हेतु आहे.

संशोधन पद्धती:

शासनाच्या कार्यक्रमाशिवाय अनेकविध पुरोगामी कार्यक्रमांची रेलचेल आहे. विद्यार्थी विज्ञाननिष्ठ बनावा, शब्दप्रामाण्यापेक्षा बुद्धीप्रामाण्यावर भर देणारा विद्यार्थी या शाळेतून तयार व्हावा. उच्च दर्जाची संस्कृती निर्माण करणारी ही तालीम आहे. या शाळारूपी तालीमीतून बाहेर पडणारा विद्यार्थी संविधानाला मानणारा असावा. समाजाच्या नैतिक मूल्यांच्या जोपासणेसाठी त्याने प्रयत्न करणे आवश्यक आहे. याची जाणीव असणारा, स्वतः मध्ये व समाजामधील व्यसनाधिनता, अंधश्रद्धा दूर करण्यासाठी वचनबद्ध असणारा विद्यार्थी असावा या उदात्त हेतूनी ही आश्रमशाळा स्वतःच्या मुलाप्रमाणे बाबासाहेब वडगावकर आणि त्यांच्या पत्नी क्षमा वडगावकर सांभाळत आहेत, तिला वाढवत आहेत. शाळेतील कमालीची शिस्त आकर्षक गणवेश, नवनवीन उपक्रमांनी या शाळेने आपला दबदबा कायम ठेवला आहे.

#### समारोप:

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या नंतर कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये दलितांच्या अशा स्वतःच्या शैक्षणिक संस्था नव्हत्या. तसेच, द. मा. शिर्के, रंगराव मांडरे, नानासाहेब माने, जयवंतरावजी आवळे यासारखी काही मंडळी सोडली तर आजही कोल्हापुरमध्ये दलितांच्या स्वतंत्र शिक्षणसंस्था नाहीत. अशा कठीण प्रसंगात शिक्षणाचा प्रचार आणि प्रसार झाला पाहिजे यासाठी बाबासाहेब वडगावकरांनी शासनाकडून आश्रमशाळा मंजूर करून घेतली व ती नेटकेपणानी चालविली. यामुळे दलित मुलांच्या बरोबर अनुसूचित जमातीच्या मुलांनाही शिक्षण दिले जाते पालावरचं त्याचं जगणं संपवृन शाळेच्या ज्ञानाच्या मंदिरात त्यांच संगोपन सुरू केले. समाज नैतिक व्हावा, सम्यक व्हावा, सर्वांनी शिकावे सर्वांनी पढ़े जावे आणि समताधिष्ठित समाजिनीर्मेती व्हावी यासाठी बाबासाहेब वडगावकर यांची आश्रमशाळा संपूर्ण महाराष्ट्रासाठी दिपस्तंभ ठरत आहे.

#### निष्कर्ष:

- १. नामांतराच्या लढ्यामध्ये दलित नेत्यांचा सगळा बेळ खर्च झाला असला तरीही समाजाची गरज ओळखून बाबासाहेब वडगावकरांनी दलित मुलांच्या शिक्षणासाठी आश्रमशाळा सुरु केली.
- २. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची शैक्षणिक चळवळ कोल्हापूर जिल्ह्यात मोठ्या प्रमाणात यशस्वी झाली नाही, मात्र त्याची स्रवात मात्र झाली
- ३. बाबासाहेब वडगावकरांच्या आश्राम शाळेमध्ये शासनाच्या कार्यक्रमाशिवाय अनेकविध पुरोगामी कार्यक्रमांची रेलचेल आहे.
- ५. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांना अपेक्षित असणारा विज्ञानिष्ठ विद्यार्थी घडविण्याचे काम बाबासाहेब वडगावकर करीत आहेत.
- ६. शासन अनुदान वेळेवर मिळत नसतानाही आणि आर्थिक ओढाताण होत असतानाही ही आश्रमशाळा नेटाने सुरु आहे.
- ७. शाळेतील कमालीची शिस्त आकर्षक गणवेश, वार्षिक निकाल, नवनवीन उपक्रमांनी,

#### संदर्भ साधने:

- १. पीपल्स एज्युकेशन सोसायटीचा १९४५-४६ चा अहवाल,सिद्धार्थ कॉलेज,मुंबई
- २. डॉ.शिंदे श्रीधर भाऊसाहेब यांचा "आंबेडकरोत्तर काळातील दलितांच्या शिक्षणाचा अभ्यास: पश्चीम महाराष्ट्राच्या विशेष संदर्भात (इ.स. १९५६ ते २०००), शिवाजी विद्यापीठास सदर केलेला अप्रकाशित पी.एच.डी. प्रबंध, २०२१
- ३. बाबासाहेब वडगावकर यांची प्रत्यक्ष मुलाखत,क्रांतीभावन, विचारेमाळ,सदर बाजार, कोल्ह!पूर, दिनांक

| 13 | Mr. A. D. Pachore | Socio Educational Vision in 21st century as Reflected in Chetan |
|----|-------------------|---|
|    |                   | Bhagat's novel 'Five point someone                              |

# Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal ISSN 2349-638x Impact Factor 7.367 Website :- www.aiirjournal.com

# Theme of Special Issue

Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature

(Special Issue No.128)

### **Chief Editor**

Dr. Pramod P. Tandale

## **Executive Editor**

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

#### **Editors**

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)
Mr. Sudhakar Indi (Hindi)
Mr. Dipak Sarnobat (English)
Minaj Naikawadi

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc.; Without prior permission.

# Aayushi International Interdisciplinary Research Journal ISSN 2349-638x

Special Issue No.128 Sept. 2023

#### Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

# **Section Editors:**

- 1) Dr. Vitthal Naik (Hindi)
- 2) Mrs. Rameshwari Kudale (English)
- 3) Mr. Sandip Patil (English)
- 4) Mrs. Sunita Powar (English)
- 5) Dr. Priyanka Kumbhar (Marathi)
- 6) Mrs. Pratibha Pailwan (Marathi)

| Special Iss |   | 21st Century English, Hindi and Marathi Literature<br>2349-638x Impact Factor 7.367  | Sept. 202 |  |
|-------------|---|--|-----------|--|
| Sr.No.      | Author Name   | Research Paper / Article Name  | Page No   |  |
| 1           | Dr. Kalpana Girish Gangatirkar                          | Socio-cultural Context in Perumal Murugan's<br>One Part Woman: A Critique  | 1         |  |
| 2           | Dr. Sanjay Pandit Kamble                                | Gender Discrimination in Shobhan Bantwal's<br>The Forbidden Daughter   | 4         |  |
| 3           | Dr. Girijashankar Mane<br>Dr. Mahadev Mokashi           | Exploring the Interplay of Culture, Gender, Language, and Literature   | 7         |  |
| 4           | Arun Duryodhan Pachore                                  | Socio-Educational Vision in 21st Century as<br>Reflected in Chetan Bhagat's Novel "Five Point<br>Someone"                    | 10        |  |
| 5           | Dr. Suvarna Prakash Patil                               | Literature, Culture and Gender - 21st Century  |           |  |
| 6           | Dr. K. Hanumantha Reddy<br>Dr. K. Ravi Sankar           | Socio - Cultural Conflicts in the Novels of<br>Kamala Markandaya   | 16        |  |
| 7           | Dr. Siddeshwar Kamati                                   | Gender Dynamics in Dystopian Indian Web<br>Series  | 19        |  |
| 8           | Mr. Sandeep Sambhaji Dhore                              | Popular Culture in the Age of Globalization : A Comprehensive Analysis   |           |  |
| 9           | Mrs. Basawwa S. Bhagoji                                 | Reader Reception of Graphic Novels in India:<br>Exploring the Intersection of Visual Storytelling<br>and Cultural Context    | 27        |  |
| 10          | Dr. Manasi Gangadhar Swami                              | Understanding the Significance of Socio-cultural Values of Peace, Harmony and Tolerance in Sudha Murty's Old Man and His God | 32        |  |
| 11          | Mrs. Sunita J. Velhal                                   | Socio-cultural Approach to Language  |           |  |
| 12          | Anita Mukund Powar                                      | Kavita Kane's Karna's Wife: Self-discovery of<br>'her' Through Cultural Conflict   | 37        |  |
| 13          | Mr. Dipak Sitaram Sarnobat                              | Socio-Cultural Conflicts in Kiran Desai's Novel<br>'The Inheritance of Loss'   | 39        |  |
| 14          | Mr. Sandip Ananda Patil                                 | Socio-Cultural Diversities Reflected in Elif<br>Shafak's Honour & The Forty Rules of Love                                    | 43        |  |
| 15          | Mrs. Sarojini Bhupal Divekar                            | Chetan Bhagat's '2 States': Depiction of Strain in Diverse Cultures and Traditions   | 47        |  |
| 16          | Smt. Rameshwari Avinash<br>Kudale                       | Struggle of 'Self' in Traditional and Modern<br>Culture in One Arranged Marriage Murder: A<br>Psychoanalytical Exploration   | 51        |  |
| 17          | Dr. Pushpa Govindrao Patil                              | Cultural Hegemony in Shashi Deshpande's Roots and Shadows  |           |  |
| 18          | Mr. Dipak Chandrakant<br>Devkar                         | Racism in Paul Beatty's novel 'The Sellout'  |           |  |
|             | Aayushi International Interdis<br>Peer Reviewed Journal | ciplinary Research Journal (ISSN 2349-638x)<br>www.aiirjournal.com Mob. 8999250451   | А         |  |

Socio-Educational Vision in 21st Century as Reflected in Chetan Bhagat's Novel "Five Point Someone"

Arun Duryodhan Pachore, Assistant Professor, Miraj Mahavidyalaya, Miraj Budhgaonkar Mala, Near Govt. Milk Dairy, Miraj

#### Abstract:

Education has become a keystone in the life of modern youth as it shapes the future of any country. Indian youth has been passing through drastic changes in education right from time immemorial. The stakeholders of education have a neglected as it for a long time and its consequences results in unemployment and despair among youth. So they need to be aware of these changes or the future of any countries was roam in dark region. The true objective of education is to enable youth live a healthy and creative life. But this healthiness and creativity seem to be crushed under the parental pressure and stereotype education. The innovation and creativity are lost from the whole education system which Chetan Bhagat once, experienced. The present paper throws light on this social evil which might be harmful to generations to come. The prevalent education system in India is affecting the young generations and their future is hampered because of the absence of proper boots to innovation and creativity of youth. The stakeholders especially parents and teaching community need to enter language of the prevalent education system in India

Keywords: prevalent, dictorial, aspiration, creativity, innovation,

Chetan Bhagat's novel, "Five Point Someone" deals with a sincere attempt to bring one of the educational dimensions to the foreground. The novel is an authentic statement on the prevalent education system and its innocent victims. The novelist has tried to sensitize the stake holder in the education system. Through his writing he has dealt with number of social evils in our society. It can be seen that through his novels. He has discussed various problems being faced by the young generation who is going to decide the future of our country. Number of Indian novelists writing in English hasexperienced theirconcern about the problems being faced by Indian youth.

Chetan Bhagat, born on 22<sup>nd</sup>April 1974, an author, columnist and speaker, is one of the young Indian writers writing in English. So far he has written five novels namely Five Point Someone (2004), One Night at the Call-Center(2005), The Three Mistakes of My Life(2008), TwoStates(2009), Revolution 2020: and Love, Corruption and Ambition (2011). Three of his five novels have been made into movies. The New York Times called Bhagat and Three Idiots being the best "the biggest selling English language novelist in India's history." His novels are based on real life situations in India in modern times. He himself being a student of Indian institute and technology, Delhi and Indian Institute of Management Ahmadabad, has gone through the experience of our education system. His novels have made him a prominent literary figure on the scene of Indian writing in English. His novel 'Five Point Someone' makes an authentic statement on the education system prevalent in India and predicament of young generation due to the biased and non academic attitude of the teachers like Professor Cherian, the dictatorial Head of the department of Mechanical Engineering. In 'five point some' he throws light on what not to do at IIT. The novel is the story of three friends Hari, Ryan Oberoi and Alok Gupta. They are the students of Mechanical Engineering at IIT who struggle desperately but still fail to make upto the grading system of IIT. Of the three Ryan is bold, outspoken and daring while two others Alok and Hari are mildly cry babies. The three are grilled like anything by the IIT education system. They are compelled to respect the grades at the cost of everything in life. As young students don't find any space or scope for the creativity, they feel suffocated and smothered. They feel detached from their parents and the society at large. Their families suffer terribly. Following statements or utterances in the novel speak volumes about our educational institutes and educational system:

"I said you call this a life? Ryan asked, this time looking at me. I was sitting on the bed cross legged attempting the assignment on drawing board. I needed a break so I put my pen down. 'Call it what you want 'I said, words stifled like a titanic yawn but this is not going to change it. 'I think this is jail it really is damn jail.' Ryan said hitting the peeling wall with a fist. There are times in life you wish dinosaurs were not extinct and could be whistled to come and gulp you down. 'yeah we have to mug some dame Professors get this vicious joy driving students puts and further Ryan calls the whole IIT system as sick and says- this system of relative grading and over burdening the students. I mean I kill the best fun years of your life. But kills something else. Where is the room for the original thought? Where is the tonic for creativity? It is not fair.' Burden of study work. So students like Samir, who is Professor Cherian's son commits suicide due to the over burdening study and attitude of Professor Cherian. What happens with Ryan, Alok and Samir is happening everywhere in India. Persons like Prof. Cherian is behaving like Jackie in the horse race, least bothered about what happens to the horse, only

Agyushi International Interdisciplinary Research Journal (ISSN 2349-638x)

10

concentrating on winning the race. It's not that the horse wants to win but the Jackie sitting on it wants its horse to win.

This type of attitude among the parents is an issue to be considered by all the parents if they really want theirkids to live a healthy and creative life. It is really a big issue in our society which has become a problem of the young generation. Children are expected to fulfill the desires of the respective parents no matter what they really want to do. Least bothered are the ambitious parents about the aspiration of their son and daughter. They are treated like robots. Making them aware of their responsibilities is one thing but treating them like robots is totally unacceptable. It is inhuman and even murderous. When the parents themselves fail to understand them, how can they expect a proper understanding as their sons and daughters to have an understanding approach towards them? As you sow, so you reap.

The parents particularly of this type need to change their attitude towards their sons and daughters if at all they want them to achieve something in their lives. Ryan is calling the whole IIT system sick. It brings to surface the position of IIT education. When he says "this system of relative grading and over burdening the students. I mean it does not onlykillsthe best fun years of your life but kills something else". What is this "something else?" To what it refers? It is an alarming issue. This "something else" may mean that an individual lives for love and dies a peaceful death. This is very source and base of life and the present education system is striking at the very roots, the very foundation and demolishing the whole structure. Is it what education is meant for? Can education afford to be diabolic like sucking mechanism? Infact such system should be either discarded or atleast modified providing some space for creativity and humanity.

According to Don Berg "What truly makes a person educated is that they are able to perceive accurately to self-defined goals and aspiration. An educated person is also respectful of others regardless of their power of status, responsible for the results of their actions, and resourceful at getting what they needboth, personally and for their family, organization or society." In the light of the above definition the first thing that contrast with our present system of education is that "self-defined goals and aspiration". In our system the goals are not self defined and learner's aspirations are thwarted. Goals are defined and set by somebody else like jackies and their horses in the horse race giving value to the aspiration of the actually concerned students. An educated person is respectful of others regardless of his power and status. Where can we put in person like Prof. Cherian in this scheme? Who is so dominating and further an educated person is also aware of his responsibilities for results of his actions and if this is so where do we find Dr. Cherian who is responsible for pressure compiling his own solutions to pursue studies which results in the tragic suicidal death of his son Samir.

#### Conclusion

Besides this aspect the novelalso deals with other social evils in our society. The novel makes it necessary on the part of all the stake holders of education and particularly teaching community and parents to introspect the government policies to be reformed. To what extent can we go forming the young generations under the protests of the globalization? The present scenario demands a concern of the cultural values.

#### References:

- 1. Bhagat, Chetan (2004). Five Point Someone: What Not Do at HT, New Delhi: Rupa Publication India.
- 2. Gupta, Parul(2004)"IITian's campus capers are a hit". TIMES OF INDIA. 24/05/2004.
- Sahagal, Tara (2004). "Book Review: Chetan Bhagat's Five Point Someone". INDIATODAY. IN. Issue Date: June 7.2004
- Tukaram , JadhavArvind (2012). "Representing Metropolitan Youth Culture: An assessment of Chetan Bhagat's Five Point Someone and One Night@ the Call Center.

VOLUME - I



ISSN 2349 638x IMPACT FACTOR 7.367

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

# Smt. Akkatai Ramgonda Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji

Tal-Hatkanangale, Dist- Kolhapur, Maharashtra- 416115 Affiliated to Shivaji University, Kolhapur Reaccredited by NAAC with 'B+ Grade (2.57 CGPA)

ONE DAY NATIONAL MULTILINGUAL SEMINAR

'Socio-Cultural Context in 21<sup>st</sup> Century English, Hindi and Marathi Literature'

Saturday, 30<sup>th</sup> September, 2023

### ORGANISED BY

Departments of Marathi, Hindi, English and IQAC

# Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

# Executive Editor

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

# Editors

Prof. (Dr.) Subhash Jadhay (Marathi) Mr. Sudhakar Indi (Hindi) Mr. Dipak Sarnobat (English) Minaj Naikawadi

### Foreword



I feel proud that my institution is organizing a one day national multilingual Seminar on 'Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature' and the participants across the country have positively responded to it. I am extremely glad as you have decided to join your colleagues across the nation to explore 'Socio-Cultural' ideas. The present seminar received an overwhelming response from the participants in the form of 145 Research Papers.

The socio-cultural context often has a strong impact on a person's behavior and thoughts and shapes his codes, norms, practices and traditions. It refers to the idea that language is closely linked to the culture and society in which it is used. This means when language is learnt, the socio-cultural context in which it is used needs to be taken into consideration. The topic of the seminar is very interesting and reflective. It needs to be focused in the present time as we have completed two decades of the 21" century. All the aspects of life are greatly influenced by culture and now it is time to examine objectively how social aspects, culture and literature are related to one another. Globalization has given more importance to 'Connectivity', but the sensible man is concerned with the 'Sensitivity we are losing every day'. This sensitivity is always reflected in Literature in the form of socio-cultural aspects.

Now it is proper time for all the scholars in India to think about the socio-cultural aspects and their impact on literature. I hope the present national multilingual seminar will address some serious issues regarding the socio-cultural aspects in 21st century English, Hindi and Marathi Literature. The proceeding of this seminar will naturally assist the research guides and scholars to re-think and to look at it in the new perspective for the better Indian Society.

I thank all the contributors for their intellectual exercise on this challenging issue. I also thank the resource persons in the seminar for their scholarly guidance and inspiration.

Prof. (Dr.) Trishala Kadam, I/C Principal.

Smt. Akkatai Ramgonda Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji

| special is: |   | 21st Century English, Ilindi and Marathi Literature<br>V 2349-638x Impact Factor 7.367  | Sept. 202 |
|-------------|---|---|-----------|
| Sr.No.      | Author Name                                   | Research Paper / Article Name   | Page No   |
| Ī-          | Dr. Kalpana Girish Gangatirkar                | Socio-cultural Context in Perumal Murugan's<br>One Part Woman: A Critique   | 1         |
| 2           | Dr. Sanjay Pandit Kamble                      | Gender Discrimination in Shobhan Bantwal's<br>The Forbidden Daughter  | 4         |
| 3           | Dr. Girijashankar Mane<br>Dr. Mahadev Mokashi | Exploring the Interplay of Culture. Gender.<br>Language, and Literature   | 7.        |
| 4           | Arun Duryodhan Pachore                        | Socio-Educational Vision In 21st Century as<br>Reflected in Chetan Bhagat's Novel "Five Point<br>Someone"   | 10        |
| 5           | Dr. Suvarna Prakash Patil                     | Literature, Culture and Gender - 21st Century   | 12        |
| 6           | Dr. K. Hanumantha Reddy<br>Dr. K. Ravi Sankar | 지어의 경기에 보고 하는 그 이에 가게 하지만 내가 가장하는 것이 없는 것이 없는 것이 없는 것이 없는 것이 없는 것이 없는데 하는데 없는데 없어요? 그런데 나는 것이 없는데 없다면 없는데 없다면 사람이 없다면 |           |
| 7           | Dr. Siddeshwar Kamati                         | Gender Dynamics in Dystopian Indian Web<br>Series   | 19        |
| 8           | Mr. Sandeep Sambhaji Dhore                    | Popular Culture in the Age of Globalization : A<br>Comprehensive Analysis   | 24        |
| 9           | Mrs. Basawwa S. Bhagoji                       | Reader Reception of Graphic Novels In India:<br>Exploring the Intersection of Visual Storytelling<br>and Cultural Context                                 | 27        |
| 10          | Dr. Manasi Gangadhar Swami                    | Understanding the Significance of Socio-cultural<br>Values of Peace, Harmony and Tolerance in<br>Sudha Murty's Old Man and His God                        | 32        |
| 11          | Mrs. Sunita J. Velhal                         | Socio-cultural Approach to Language   | 35        |
| 12          | Anita Mukund Powar                            | Kavita Kane's Karna's Wife: Self-discovery of<br>'her' Through Cultural Conflict  | 37        |
| 13          | Mr. Dipak Sitaram Samobat                     | Socio-Cultural Conflicts in Kiran Desai's Novel<br>The Inheritance of Loss'   | 39        |
| 14          | Mr. Sandip Ananda Patil                       | Socio-Cultural Diversities Reflected in Elif<br>Shafak's Honour & The Forty Rules of Love   | 43        |
| 15          | Mrs. Sarojini Bhupal Divekar                  | Chetan Bhagat's '2 States': Depiction of Strain in Diverse Cultures and Traditions  |           |
| 16          | Smit. Rameshwari Avinash<br>Kudale            | Struggle of 'Self' in Traditional and Modern<br>Culture in One Arranged Marriage Murder: A<br>Psychoanalytical Exploration                                | 51        |
| 17          | Dr. Pushpa Govindrao Patil                    | Cultural Hegemony in Shashi Deshpande's<br>Roots and Shadows  | 54        |
| 18          | Mr. Dipak Chandrakant<br>Devkar               | Racism in Paul Beatty's novel 'The Selfout'   | 57        |
|             |   |   |           |

#### Literature, Culture and Gender - 21st Century

Dr. Suvarna Prakash Patil Head, Department of History Miraj Mahavidyalaya ,Miraj

#### Introduction

As India traverses the 21st century, the intricate relationship between literature, culture, and gender continues to evolve, reflecting the nation's dynamic societal shifts and the complexities of individual identities. The narratives woven by Indian writers in this era echo the diverse voices and perspectives that emerge from the intersections of gender, culture, and modernity. This article delves into the multifaceted interplay between literature, culture, and gender in the Indian context of the 21st century, exploring how these dimensions intersect, influence each other, and contribute to the ongoing transformation of Indian society.

#### Cultural Diversity and Gender Representation

India's cultural diversity is a cornerstone of its identity, and this diversity is mirrored in its literature. In the 21st century, literature reflects the rich tapestry of regional cultures and the changing nature of gender representation. With the advancement of digital platforms, writers from various linguistic and cultural backgrounds find new avenues to share their stories, fixtering a more inclusive literary landscape.

Authors like Arundhati Roy, through her novel like "The Ministry of Utmost Happiness," navigate intricate narratives encompassing gender diversity, cultural complexities, and Socio-Political contexts. Roy's work addresses not only the struggles women face in a patriarchal society but also engages with the experiences of transgender individuals, reflecting a more manced understanding of gender and identity.

#### Intersectional Feminism and Identity Narratives

The 21st century has seen a surge in intersectional feminism within Indian literature. Writers are delving into the multifaceted identifies that emerge at the intersections of gender, caste, class, religion, and sexuality. These narratives challenge conventional notions of gender and advocate for a more inclusive and equitable society.

Meenal Baghel's non-fictional work, "Death in Mumbai", explores the intersection of gender and class through the lens of the infamous ArushiTalwar murder case. By examining the complexities of power, privilege, and justice, Baghel engages with issues of gender, media sensationalism, and societal biases, highlighting the significance of intersectional feminism in modern Indian literature."

#### Digital Platforms and Voices of Resistance

The digital age has ushered in new opportunities for marginalised voices to be heard. Social media platforms, blogs, and online publications allow writers to address gender inequalities, cultural norms, and personal experiences. This digital realm provides for the amplification of previously marginalised narratives and the democratization of literary expression.

Through blogs, Instagram posts, and YouTube videos, writers like Savi Sharma and Rupi Kaur have gained immense popularity by exploring themes of self-discovery, empowerment, and relationships from a female perspective. Their work resonates with young readers, challenging traditional gender rules and offering a sense of connection and belonging.

#### Technological Advancements and Virtual Gender Spaces

The 21st century has brought about significant technological advancements that have transformed how literature is created and consumed and the exploration of gender dynamics. Virtual spaces and social media platforms have become forums for discussing gender identity, feminism, and LGBTQ+ rights, allowing individuals to connect and share their experiences globally.

The rise of blogs, podcasts, and YouTube channels dedicated to gender-related topics have created a virtual community where individuals can engage in open dialogues about gender norms, cultural expectations, and personal narratives. These platforms have contributed to democratising discourse, providing a space for unheard voices to challenge prevailing gender norms and advocate for greater inclusivity.

#### Artificial Intelligence and Gender Bias

The emergence of artificial intelligence (AI) has brought to the forefront issues related to gender bias and representation. Literature explores how AI algorithms, often developed with biases present in society, can perpetuate gender stereotypes and deepen inequalities.

RuchikaTomar's "A Prayer for Travelers" touches on the theme of Al and its impact on gender dynamics. 

The novel raises questions about the ethical implications of Al technology and its potential to reinforce gender

The 21st century Indian literature, at the intersection of culture, gender, and modernity, is a dynamic that reflects the over-evolving landscape of societal norms, identities, and narratives. From intersectional m to LGBTQ+ representation, digital platforms to cultural reconfigurations, writers are shaping ersations that challenge, celebrate, and redefine the roles and experiences of individuals across the gender Turn. As India continues to navigate its complex journey into the future. literature remains an invaluable through which to explore, critique, and shape the evolving dialogue around culture, gender, and identity.

#### Reference & End Note :-

- Roy Arandhati, The Ministry of Utmosi Happiness, Hamisha Hamilton, U.K. & India, 6 June 2017.
- BaghelMeenal, Death In Mumbai, RHL J Dec. 2011.
- TomarRuchika, A Prayer For Travelers, PenguilPutanamInc, July 2019.
- Doshi Tishani, Small Days And Nights, WW Norton & Company, 21 January 2020.
- Devi Mahasheta, Giribala, Routledge India, 2023.
- Banerjee Chitra, Queen of Dreams, Little, Brown Book Group, 14 September, 2004
- Lahiri, Ihumpa, The Lowland, Alfred A. Knopf & Random House, 23 september 2013.
- Backman Fredrik, A Man Called Ove, 27 August, 2012.
- GidlaSujatha, Ants AmongElephans, Farrar Straus and Giroux, 18 July 2017.
- Khanna Twinkle, Pyjamas Are Forgiving, Juggernaut Book, 7 September 2018.
- III. Irani Anosh, The Parcel, Harper Collins Publisher, October 2016.
- 12 HauthKancha, Buffalo Nationalism, SAGE Publications India Pvt. Limited, 1 Dec. 2028.
- 13. Doshik iran, Jinnah Often Came to Our House, Tranquebar, 28 Dec. 2015.
- 8. BhagaiChetan, Two States, Rupa Publication India, 1 January 2014.

| Indian Navy and contribution of |  |
|---------------------------------|--|
| Chhatrapati Shivaji Maharaj     |  |

Dr. Mrs. S. P.Patil

15

Education and Society (शिक्षण आणि समाज)

Special Issue UGC CARE Listed Journal ISSN 2278-6864

# Education and Society Since 1977

The Quarterly dedicated to Education through Social Development and Social Development through Education

July 2023

(Special Issue-1/ Volume-III)



INDIAN INSTITUTE OF EDUCATION

128/2, J. P. Naik Path, Kothrud, Pune - 411 038

#### Education and Society

| Content   |             |
|---|-------------|
| Poetic Creativity: A Creative, Personal Response to Poetry in ELT     Swatt Annasaheb Magdum  | 01          |
| 2. Socio- Legal Dimensions of Child Marriage and Legal Framework: An Overview   |             |
| Dr. Pooja Prashant Narwadkar  | 014         |
| 3. Comparative Study of Physical Fitness, Wellness and Academic Perform<br>of Female College Students of Science Faculty            | nance       |
| Dr_Mohini Sameer Patankar and Dr. Manohar Mane  | 020         |
| 4. Sectoral Distribution of NPA in Public and Private Banks with Special Reference to Agriculture Sector                            |             |
| Ananya Bhatia and Jagdeep Kumar   | 024         |
| 5. Indian Navy and Contribution Chh. Shivaji Maharaj<br>Dr. Suvarna Prakash Patil   | 0.20        |
|   | 039         |
| <ol> <li>Breaking Barriers: Empowering Women through Organizational Initiat<br/>Nita A. Sangale and Dr. Varsha N. Bhabad</li> </ol> | ives<br>044 |
| 7. Digital Innovations in Teaching and Learning of English Language and<br>Literature: Managing Change and Challenge                |             |
| Shila Santosh Chougule  | 050         |
| S. Norossity and Application of Distrational on Leaguing Leman State An<br>Example of Smartphones                                   |             |
| Vaishali Vasantrao Shinde   | 057         |
| D. An Analytical Study of Active Participation of Women Entrepreneurs in<br>Start-up Growth in India                                |             |
| Prof. Priyanka Jalindar Tambe   | 063         |
| 0. Voyage of Women from Vedas to Modern Society<br>0r. Shahikafa V. Javalakar   | 068         |
| 1. Women's Contribution to Indian Society   |             |
| oota S. Bonga la  | 073         |

#### Indian Navy and Contribution Chh. Shivaji Maharaj

Dr. Suvarna Prakash Patil

Head, Department of History Miraj Mahavidyalay Miraj, Dist, Sangli, Maharashira

#### Abstract:

Chh. Shivaji Maharaj is known as "The Father of Maratha Navy." No other ruler in medieval India attempted to establish or set up the Navy, but the National Navy was established by Chh. Shivaji Maharaj is the only example of his foresight and diplomacy. He conquered Konkan and then the borders of Swarajya reached the sea coast. At that time foreign powers such as Portuguese, British, and Siddi dominated the sea coast. Chh. Shivaji Maharaj realized that the biggest threat was foreign powers. So: Chh. Shivaji Maharaj tried to build a navy in 1958, and the shipbuilding industry started on the Konkan coast. Kalyaa, Bhiwandi, Panvel, Rajapur, and Malvan on the Konkan coast were shipbuilding and repair centers. He built forts like Vijaydang, Sindhudang, Suvarna Durg, etc to protect his territory from enemy attacks. He created an excellent administrative system for the Navy. Mai-Nnik and Dariya Sarang were the two principal officers.

The establishment of the Navy brought many benefits to the 'Swarajya'. Due to the Navy, the people of the Konkan coast got peace and security from foreign powers. The Navy protected the trade along the Konkan coast. Marathas established power over the Indian Ocean. The Navy's cooperation with ground forces was seen during the Marathas. Surat and Basrut Campaign. The establishment of the navy and shipbuilding industry employed the people of Konkan and also developed the science of shipbuilding. So Ramchandra pant Amarya says in 'Adnyapatra'- "arrun rend teats on the trade and also developed the science of shipbuilding. So Ramchandra pant Amarya says in 'Adnyapatra'- "arrun rend teats on the trade and also developed the science of shipbuilding. So Ramchandra pant Amarya says in 'Adnyapatra'- "arrun rend teats

On 2<sup>rd</sup> September 2022, while inducting Vikrant into The Indian Navy, Hon-Prime Minister Narendra Modi referred to Chh. Shivaji Maharaj as the 'Inspiration of the Indian Navy.' Due to the great contribution of Chhotrapati Shivaji Maharaj, the old flag of the Indian Navy was replaced by a new flag in the shape of Chh. Shivaji Maharaj's 'Rajamudra'.

#### Introduction:

The history of Chhatrapati Shivaji Maharaj is a golden era in Indian history. He was a good administrator in the military, judicial. Civil, and every field, In the 17th century, he founded 'Swarajya' in Maharashtra. It was known as 'Hindu Swarajya'. He brought people of all castes and religions together and inspired them for independence and self-government, while establishing Swarajya, he brought about changes in the Walfara of the inspired.

and suicidal probabition of sea traffic in Hinduism. It can be said that today all over the world Indians are creating dominance in various fields with the strength of their intelligence. It is only because of the Naval formation of the Chh. Shivaji Maharaj at that time.

#### Footnote and references:

#### Primary sources

#### Visits to historical places

L. Visit water Fort SindhuDurg, Vijaydurg, Janjira.

#### Primary written sources

- 1. Adnyapatra of Ramchandrapant Amatya.
- 2. Sabhasad Bakar of Krishnaji Anant sabhasad.

#### Footnote

#### Secondary Sources:

- L. Kamble B. R. (Ed) studies in Shryaji and His Tames, Kulhapur, 1982 II, page 28.
- Z. Dr. Balakrishna Shivaji the Great, edited by Dr. Jassingh Rao Passar, Volume 4, 2018, page
- 3 Steward Jordan, The Marathas, 1600-1818 Cambridge University, Press 1998, page 65.
- 4. Dr. Gavali P.A., Marsthyanchyalfiliaas, Kailash Publication, Aurangabad, 1999, page 111.
- 5. Puntambekar S. V. (Ed) A Royal Edict Translation of Amatya's Adityapatr. Madras, 1929. pages 48-52.
- 6. Raykumar, Marutho Military Systems, Commonwealth Publishers, 2004, pages 244-245.
- 7. Ibid, page 242
- 8. Joshi S. N. (Ed) SabhasadBakhar, Pune, 1966, page 65.
- 10. Ibid, page 95
- 11. Ibid, page 93
- 12. Dr. Pawar Jaisingh Rao, Shivaji v Shivakal, Phadke Prakashan Kolhapur, 1996, page 247.
- 13. De Balukrishna, op. cit., page 93.
- 14. Dr. Pawar, op. cit., page 257.
- 15. Dr. Balakrishna, op. cit., page 101.

and stricidal prohibition of sea traffic in Hinduism. It can be said that today all over the world Indians are creating dominance in various fields with the strength of their intelligence. It is only because of the Naval formation of the Chh. Shivaji Maharaj at that time.

#### Footnote and references:

#### Primary sources

#### Visits to historical places

I. Visit water Fort SindhuDurg, Vijaydurg, Janjira.

#### Primary written sources

- 1 Adnyapatra of Ramchandrapant Amatya
- 2. Sabhasad Bakar of Krishnaji Anant sabhasad

#### Footnote

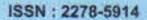
#### Secondary Sources:

- 1. Kamble B. R. (Ed) studies in Shiyaji and His Times, Kolbapur, 1982 II. page 28
- 2. Dr. Balakrishna Shwaji the Great, edited by Dr. Jaisingh Rao Powar, Volume 4, 2018, page 14.
- 3. Steward Jordan, The Marathas, 1600-1818 Cambridge University, Press 1998, page 65.
- 4. Dr. Gavali P.A., Marathyanchyaltihaas, Kailash Publication, Aurangabad, 1999, page 111.
- Pantambekar S. V. (Ed.) A Royal Edict Translation of Amatya's Adhyapatr, Madras, 1929, pages 48-52.
- 8. Rajkumar, Maratha Mibrary Systems, Communwealth Publishers, 2004, pages 244- 245.
- 7. Ibid, page 242
- 8. Joshi S. N. (Ed) SahhasudBakhar, Pune, 1960, page 65
- 10. Ibid, page 95
- 11 Ibid, page 93
- 12 Dr. Pawar Jaisingh Rao, Shivaji v Shivakal, Phadke Prakashan Kolhapur, 1996, page 247.
- 13. Dr. Balakrishna, op. cit., page 93.
- 4 Dr. Paner on all come 549

| Indian Freedom Movement and Role of |
|-------------------------------------|
| Miraj Princely State                |

Dr. Mrs. S. P.Patil

16



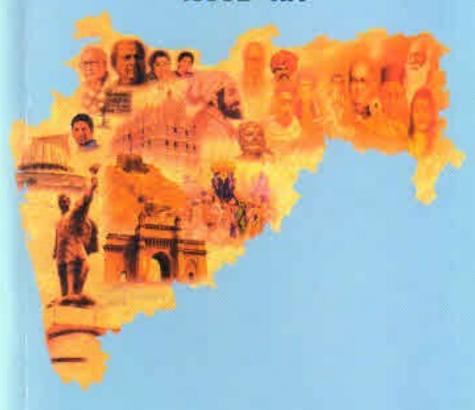
(Inst.Reg. No.Maharashtra/13482/Satara/2010) Email ID: sisms2010@gmail.com

## SATARA ITIHAS SANSHODHAN MANDAL, SATARA

## SANSHODHAN

PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

**ISSUE - XIV** 



October 2023

| 29. | डॉ. कदम चा्ग्ना विठ्ठल                      | एकोणिसाच्या शतकातील<br>स्त्रीजीवनविषयक सुधारणावादातील<br>वृत्तपत्राचे योगदान                 | 174 |
|-----|---|--|-----|
| 30. | डो, सुवर्गा प्रकाश गारील                    | Indian Freedom Movement  |     |
|     |   | and Role of Miraj Princely<br>State.   | 180 |
| 31. | डॉ.मधुरा राजेश कारडे                        | कोल्हापूरच्या कामगार<br>चळवळीमधील स्त्रियांचे वीगदान   | 186 |
| 32. | डॉ, हरिश पडितराव भैलुमे                     | राजपाँ शाहू महाराज व बहुजन<br>शिक्षण चळवळ  | 193 |
| 33. | प्रा. वटाणे कल्याम राजेंद्र                 | विद्वल रामजी शिंदे याचे अस्पृश्य<br>उद्धाराचे शैक्षणिक कार्य                                 | 196 |
| 34. | प्रा.श्रीमती रेश्मा काळल                    | माणदेशाच्या आर्थिक<br>स्थित्यंतरामध्ये राजेवाडी धरणाची<br>भूमिका                             | 199 |
| 35. | प्रा.डॉ.गाढवे किशोर गुलाब                   | स्वातत्र्यसैनिक श्री,विष्णू भाऊ<br>डोईफोडे यांचे भारतीय स्वातंत्र्याच्या<br>लड्यातील योगदान, | 205 |
| 36, | डॉ. पयार सुनील दिनकर                        | भाई प्रा, डॉ. एन. डी. पाटील यांच्या<br>नेतृत्वातील लंडे एक अभ्यास                            | 211 |
| 37/ | डॉ, घुले रामचंद्र गुरुलिंग                  | सत्यशोधकी वाटसरू व मावर्सवादी<br>योडा विचारवंत ; भाई प्रा.डॉ. एन<br>डी. पाटील                | 217 |
| 38. | संदीप बळवंत गुरव<br>डॉ. सुरेश मारुती चल्हाण | महाराष्ट्राच्या पुरोगामी चळवळीचे<br>तेजस्वी दीपस्तंभ : प्रा. डॉ. एन, डी<br>.पाटील            | 236 |
| 39. | डीं, चन्हाण सुरेश सास्ती                    | महाराष्ट्राच्या जन आंदोलनातील डॉ<br>एन.डी.पाटील  | 241 |
| 40. | प्रा.झोळे-पाटील प्रियाका<br>विलास           | महाराष्ट्रातील पुरोगामी चळवळीला<br>प्रतिष्ठा देणारे नेतृत्व -<br>प्रा.एन.डी.पाटील            | 245 |
| 41  | प्रा. डॉ. देवकाले बी.एन.                    | विसाल्या शतकातील मराठी<br>वृतपत्राचे लोकवागृतीतील योगदान                                     | 249 |
| 42  | डी. पाटील संगीता संपत                       | तुफान सेनेचे भारतीय स्वातंत्र्य<br>लढ्यातील कार्य  | 253 |

## 30. Indian Freedom Movement and Role of Miraj Princely State

Dr. Suvarna Prakash Patil. Miraj Mahavidyalaya Miraj

#### Introduction :-

Indian people's freedom struggl against the Britishers is an impressive eru in the history of modern India. The freedom fighters indeed secured independence un thereafter also contributed to the building of a new India. We feel proud of the movement for Indian Independence Movement.

The contribution made by today's Sangli district of Maharashtra State the freedom struggle is quite commendable. Some of the renowned personalism in this behalf were Padmbhushan Dr. Vasantdada Patil, Krantisinh Nana Patil Nagnathanna Naikavadi, G.D. Lad (Bapu), together with hundreds of ordinafreedom fighters who gave up the prospects of an easy life and some of the even paid with their life at a young age. It is not possible to deny the contribution of the sacrifices made by these unknown martyrs. Miraj is one of the significant Princely State. In the Indian freedom movement, lot of young men from Mirataluka have made a valuable contribution for overthrowing the British yoke. The young generation of our country should study their activities, sacrifices and love for mother land. They should take inspiration, motivation and do some concrete work for our nation. This is main objective of this paper.

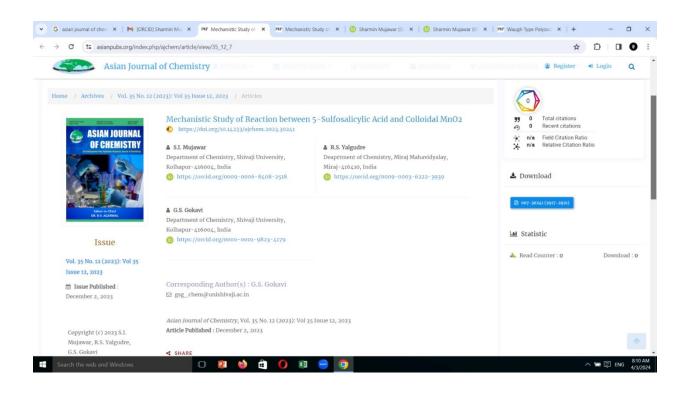
Brief History of Miraj Princely State - Nanasaheb Peshwe of Maratha Power had given Miraj fort as an expenditure of army in Karnataka to Patwardhan 1960. After that he had taken it from Shivaji Joshi given it to Patwardhan Govindrao Patwardhan helped Madhavero Peshwe against Nijam. In 1662 after the defeat of Madhavrao. Raghoba Dada took from Patwardhan and gave it Nana Kanher. In 1663 during the battle between Nijam and Maratha once agamiraj was given to Patwardhan for his great achievements during the battle. Since then till the modern time Miraj remained the Jahagiri of Patwardhan. The Patwardhan family after Gopalrao Varnan Govind, Pandurang Govind, Haring Pandurang and Chintaman Pandurang became Jahagirdars. During the period Chintaman Pandurang, there was a dispute between Chintaman Pandurang Gangadhar Govind for the sake of property. In 1801 – 1802, they get the property area divided and Miraj and Sangli came into existence as two centers.

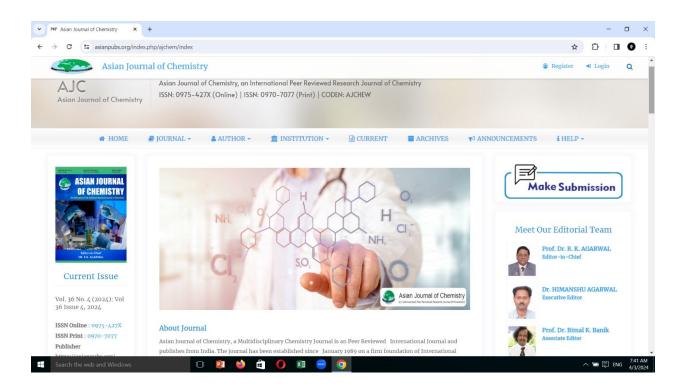
■ Wardhan V.A. Dakshin Maharashtratil Sansthananchya Vilinikarnatii Kathe 

15 Pune-4

Shikhare S.N. Sansthani Prajeche Tilak Tatya Shikhate Charitra Sashan, Pune 1980, Vol. 18

Agrawaal G. R., Miraj Sansthancha Parichay, Harijan Sevak Press, Miraj, 1929.

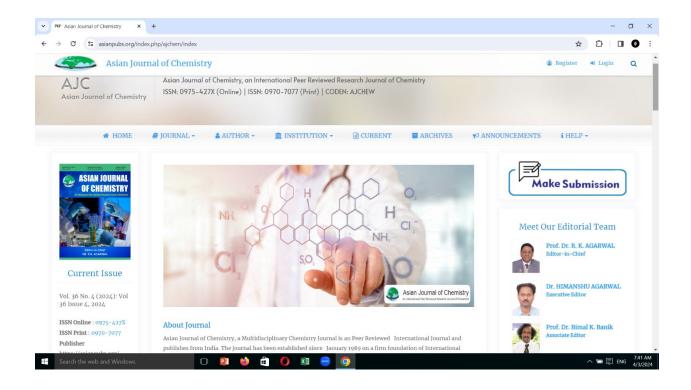


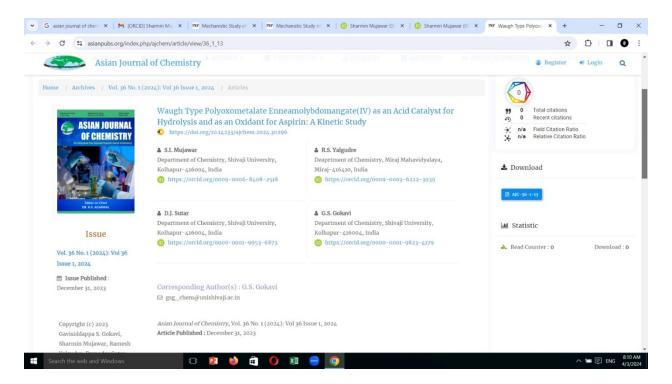


18

Dr. R. S. Yalgudre

Waugh type Polyoxometalate Enna Molybdomangate IV asAacid Catalyst for Hydrolysis and as an Oxidant for Aspirin: A Kinetic Study





Mrs. Shubhangi P. Patil

19

Cyanobacteria (BGA) a Boom of Multiple Resources

**IJCRT.ORG** 

ISSN: 2320-2882



## INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

#### Cyanobacteria (BGA), A Boom Of Multiple Resources

Shubhangi P. Patil a, Vinay V. Chougule b and Mohammad R. Naser a

<sup>a</sup> Department of Botany, Moulana Azad College of Arts, Science And Commerce, Dr. Rafiq Zakaria Campus, Rauza Bagh, Aurangabad,431001, M.S., India

<sup>b</sup> U.G and P.G. Department of Microbiology, Miraj Mahavidyalaya, Miraj, Dist. Sangli, 416410, M.S.,

#### Abstract

The ongoing rise in human population resulted in the depletion of energy resources which pose a threat to the environment's demands, food security, global warming as well as to the sustainable production of food and energy. The prokaryotic creature that has evolved and persisted the longest is the Cyanobacterium, often called as blue green algae. They are regarded as one of the earliest living organisms on Earth. They effectively convert radiative energy into chemical energy. As a by-product, this biological system creates oxygen. BGA are able to fix molecular nitrogen in to assimiable forms of nitrogen. These forms can be easily then absorbed by the plants for their growth and development. Thus BGA makes the soil more fertile. So they are used as biofertilizer. For the manufacturing of biofertilizer, "green technology," the most environmentally friendly method, has been used. Cyanobacteria also have the potential to be employed in a number of industries, including bioenergy, biotechnology, natural products, medicine, agriculture, and the environment, due to their remarkable pace of development. We have outlined the prospective uses of cyanobacteria in this review's several scientific and technological fields, with a focus on how they might be used to create biofuels and other useful by products.

Key words: BGA, green technology, biofuel, biotechnology, antibacterial, biofertilizer

#### 1. Introduction:

Cyanobacteria are an ancient class of algae. Cyan, which refers to the colour "turquoise blue," is how cyanobacteria got their name. They are also known to be blue green algae. Prokaryotic life forms include cyanobacteria. They are autotrophic, especially found in marine and fresh water. They prefer diverse environment to grow. Marine water is found to be richest source of nutrients for the cultivation of blue green algae [1-4]. BGA typically grow in vast colonies and are filamentous, unicellular, and tiny in size. Up to this point, 150 genera of BGA have been recognized. As they contribute to the current oxygen-rich atmosphere on the surface of the earth, they also have evolutionary significance. Their earliest fossil evidence is thought to be about 3.5 billion years ago. In 1985, a classification of BGA was presented, with three phyla—Chroococcales, Gloeobaterales, and Pleurocapsales—and four orders: Chroococcales, Nostocales, Oscillatoriales, and Stigonematales. They have a significant potential for fixing nitrogen in the atmosphere. For the production of commercially significant agricultural plants like rice and beans, they could therefore be utilized as biofertilizer.

#### **Declaration of competing interest**

The authors affirm that there were no business or financial ties that might be seen as a potential conflict of interest when the work was done.

#### Acknowledgements

The author, SPP is thankful to Department of Botany, Moulana Azad College of Arts, Science and Commerce, Dr. Rafiq Zakaria Campus, Rauza Bagh, Aurangabad and Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad for providing the necessary facilities during the course of study. This work was supported by Miraj Mahavidyalaya, Miraj affiliated to Shivaji University, Kolhapur.

#### References:

- [1] Pisciotta J.M, Zou Y, Baskakov I.V. Light-dependent electrogenic activity of cyanobacteria, PloS One 2010; 5:5 e10821, https://doi.org/10.1371/journal.pone.0010821.
- [2] Williams, P.J.B, Laurens, L.M.L. Microalgae as biodiesel and biomass feedstock: review and analysis of the biochemistry, energetic and economics, Energy Environ. Sci. 2010; 3 (5) 554-590, https://doi.org/10.1039/b924978h.
- [3] J.J. Milledge, Commercial application of microalgae other than as biofuels: a brief review, Rev. Environ. Sci. Biotechnol. 10 (1) (2011) 31–41, https://doi.org/10. 1007/s11157-010-9214-7.
- [4] S.K. Hoekman, A. Broch, C. Robbins, E. Ceniceros, M. Natarajan, Review of bio-diesel composition, properties, and specifications, Renew. Sustain. Energy Rev. 16 (1) (2012) 143-169, https://doi.org/10.1016/j.rser.2011.07.143.
- [5] F. R. Malik, S. Ahmed and Y. M. Rizki, Utilization of lignocellulosic waste for the preparation of nitrogenous biofertilizer. Pakistan Journal of Biological Sciences. (4) (2001) 1217-1220.
- [6] A. T. M. A. Choudhary and I. R. Kennedy, Nitrogen Biofertilizer losses from rice soils and control of environmental pollution problems. Communications in Soil Science and Plant Analysis, (36) (2005) 1625– 1639.
- [7] N. Board, The Complete Technology Book on Biofertilizer and Organic Farming, New Delhi. (2004).
- [8] T. Song, L. Martensson, T. Eriksson, W. Zheng and U. Rasmussen, Biodiversity and seasonal variation of the cyanobacterial assemblage in a rice paddy field in Fujian, China. The Federation of European Materials Societies Microbiology Ecology, (54) (2005) 131–140.
- [9] M. Koller, Cyanobacterial polyhydroxyalkanoate production: status quo and quo vadis? Curr. Biotechnol. 4 (4) (2015) 464-480. M. Meena, K. Divyanshu, S. Kumar, P. Swapnil, A. Zehra, V. Shukla, M. Yadav, R.S. Upadhyay, Regulation of L-proline biosynthesis, signal transduction, trans- port, accumulation and its vital role in plants during variable environmental conditions, Heliyon 5 (12) (2019) e02951, https://doi.org/10.1016/j.heliyon. 2019. e02952.
- [10] M. Meena, P. Swapnil, T. Barupal, K. Sharma, A review on infectious pathogens and mode of transmission, J. Plant Pathol. Microbiol. 10 (2019) 472, https://doi.org/10.4172/2157-7471.1000472.
- [11] D.A. Bryant, G. Guiglielmi, N. Tandeau de Marsac, A. Castets, G. Cohen-Bazire, The structure of cyanobacterial phycobilisomes: a model, Arch. Microbiol. 123 (1979) 113-127.
- [12] S.A. El-Sohaimy, Functional foods and nutraceuticals modern approach to food science, World Appl. Sci. J. 20 (5) (2012) 691-708.
- [13] T.E. Jensen, Electron microscopy of polyphosphate bodies in a blue-green alga, Nostoc pruniforme, Arch. Microbiol. 62 (1968) 144-152.
- [14] H.S. Pankratz, C.C. Bowen, Cytology of blue-green algae. I. The cells of Symploca muscorum, Int. J. Bot. 50 (1963) 387–399.

Dr. Mrs. S. C. Yadav

Study on density functional theory of MFe2O4( M=CO, Ni, Cu) for electro catalytic hydrogen and oxygen evolution reaction

Surfaces and Interfaces 41 (2023) 103249

Contents lists available at ScienceDirect

#### Surfaces and Interfaces

journal homepage: www.sciencedirect.com/journal/surfaces-and-interfaces



#### Study on density functional theory of MFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> (M=Co, Ni, Cu) for electrocatalytic hydrogen and oxygen evolution reaction

Guruprasad A. Bhinge a,d, Atul D. Teli a, Nilesh N. Kengar a, Siddhi S. Dakave a,b, A.K. Bhosale c, S.C. Yadav d, Chidanand M. Kanamadi a,

- Department of Physics, Devchand College, Arjunnagar, Shivaji University, Kolhapur 591237, India
- Department of Physics and Manotechnology, SRM Institute of Science and Technology, Kattankulathur, Tamilnadu 603203, India
   Department of Physics, Raje Ramrao Mahavidyalaya, Jath, Shivaji University, Kolhapur 416404, India
   Department of Physics, Miraj Mahavidyalaya Miraj, Shivaji University, Kolhapur 416410, India

#### ARTICLEINFO

DFT study Electrocatalyst MFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> Water splitting

#### ABSTRACT

The use of noble metals such as platinum (Pt) in electrocatalysts for oxygen and hydrogen evolution reactions has been studied for many years. However, the related electrocatalytic activity must be on par with Pt-based elec trodes because of their high cost. Therefore, an attempt is made to find a low-cost alternative material that can show good electrocatalytic performance. In this work, we focused on M-Fe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> (M = Co, Ni, and Cu) as a potential electrocatalyst for hydrogen evolution reaction (HER) and oxygen evolution reaction (OER) and theoretically studied it. As per our knowledge, no research regarding the theoretical investigation of an HER and OER electrocatalytic association with M-Fe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> is reported. This work is a simulation-based study on density functional theory to examine the combined electrocatalytic activity of M-Fe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> for HER and OER. The properties of the HER and OER processes, including the density of states, binding energies, band structure, charge transfer, and minimum-energy path, are studied and discussed. It is discovered that the energy barrier of the HER activity was computed lower in Ni-Fe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> is 0.046 eV, and the low computed energy barrier for OER in Co-Fe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> of 98 mV, irrespective of how it is set up. As a result, the study makes a detailed prediction that the suggested structure enhances MFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub>'s intrinsic electrocatalytic activity.

#### 1. Introduction

Oxygen and hydrogen evolution by water electrolysis is being attracting many researchers as it uses renewable energy resource [1] The scientific reason to choose this process is the global energy crisis and the environmental problem caused by CO2 emission from the use of fossil fuels [2-4]. Lot of work has been done to find renewable sources of energy that can be used for a long time [5]. Green energy harvestings, like fuel cells, solar cells, and wind energy, are one way to solve this new environmental problem [6]. The fuel cell is the most environmentally friendly, available day and night, and high-energy-density device, but it requires gases such as hydrogen and oxygen [7]. Hydrogen, which might be generated via electrocatalytic or photocatalytic water splitting, promises to be a potential sustainable energy carrier. Two of the half-operations associated with the water-splitting reaction are thought to be the cathodic HER and the anodic OER. When fuel cell reactions are carried out backwards, the water-splitting reaction takes place. Both of

these half-reactions are crucial for the overall viability of a water-splitting system [8,9]. While the most advanced electrocatalysts for the HER and OER are Pt-based materials [10,11] and Ru- or Ir-based compounds [12], their wide-ranging applications are constrained by their high price and unavailability. The development of active and stable transition metal-based alternative electrocatalysts for HER and OER, including metal oxides [13], carbides [14,15], nitrides [16], sulphides [17], and phosphides [18], has therefore been the focus of many studies. Further notably, because there aren't many different atomic configurations, it's very simple for us to grasp the structure and behaviour of the active sites on transition metal-based catalysts and pinpoint their inherent reaction mechanisms. To attain the desired sustainable and feasible water splitting, it is also important to look for electrocatalytic devices having bifunctional characteristics for both oxygen and hydrogen production [19,20]. It has been demonstrated that transition metal oxides, such as iron-based compounds, are effective electrocatalysts for water-splitting activities [21,22]. It was discovered that the

E-mail address: cmkanamadi@gmail.com (C.M. Kanamadi).

https://doi.org/10.1016/j.surfin.2023.103249

Received 3 May 2023; Received in revised form 22 July 2023; Accepted 2 August 2023 Available online 10 August 2023 2468-0230/© 2023 Elsevier B.V. All rights reserved.



<sup>\*</sup> Corresponding author.

electron transfer (Volmer reaction) that forms the intermediate species. This electron transfer process typically involves higher energy barriers and slower kinetics compared to the direct reactant reduction in the Volmer-Heyrovsky pathway. The Volmer-Heyrovsky pathway, on the other hand, directly reduces the reactant to form the intermediate species, bypassing the potentially slower electron transfer step. As a result, the Volmer-Heyrovsky pathway generally exhibits lower energy barriers and faster kinetics, making it a more favourable pathway for electrochemical reactions.

#### 3. Conclusion

In conclusion, we carried out an in-depth investigation of the activity sites present on M-Fe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> catalysts for both HER and OER processes by using DFT simulations to carry out the research. It has been shown that the energy level of the d band has a direct link not only with the immediate surroundings of the active centre of M-Fe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> but also with the catalytic activity of the material. The HER process states that a hydrogen radical is initially formed on the surface by the adsorption of a hydronium ion, and a hydrogen molecule is then created by the union of two hydrogen radicles. The Hevrovsky reaction has a higher energy barrier than the Volmer reaction, suggesting that it may be the RDS of the whole Volmer-Heyrovsky route. The HER process is caused by the Volmer-Heyrovsky process on the basal plane of MFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub>, which has a higher energy barrier than the Tafel reaction. When the electrode voltage V is higher than or equal to V (SHE)-G and the energy barriers for two neighbouring intermediate states are 1.23 eV for the ideal catalyst, an oxygen evolution reaction (OER) is a possibility. The largest energy gap between two successive steps is what determines the overpotential for OER. It has been discovered that the overpotential value for OER normally increases with cobalt, copper, and nickel, in that order.

#### CRediT authorship contribution statement

Guruprasad A. Bhinge: Conceptualization, Formal analysis, Writing review & editing. Atul D. Teli: Formal analysis, Writing - review & editing. Nilesh N. Kengar: Formal analysis, Writing - review & editing. Siddhi S. Dakave: Writing - original draft, Writing - review & editing. A.K. Bhosale: Writing - review & editing. S.C. Yadav: Writing - review & editing. Chidanand M. Kanamadi: Writing - review & editing.

#### **Declaration of Competing Interest**

The authors declare the following financial interests/personal relationships which may be considered as potential competing interests: Bhinge Guruprasad Ashok reports financial support was provided by Mahatma Jyotiba Phule Research and traning institute (MAHAJYOTI).

#### Data availability

No data was used for the research described in the article.

#### References

- [1] L. Zhang, et al., In-situ construction of 3D hetero-structured sulfur-doped nanoflower-like FeNi LDH decorated with NiCo Prussian blue analogue cubes as efficient electrocatalysts for boosting oxygen evolution reaction, J. Colloid Interface Sci. 611 (2022) 205–214, https://doi.org/10.1016/j.jcis.2021.12.066
- [2] Z. Yang, et al., Electrochemical energy storage for green grid, Chem. Rev. 111 (2011) 3577-3613, 0009-2665.
- [3] N.L. Panwar, S.C. Kaushik, S. Kothari, Role of renewable energy onmental protection: a review, Renew. Sustain. Energy Rev. 15 (2011) 1513-1524, 1364-0321.
- [4] G. Liu, et al., In situ photochemical activation of sulfate for enhanced degradation of organic pollutants in water, Environ. Sci. Technol. 51 (2017) 2339-2346, 0013-

- ering nanostructured spinel ferrites by co-substitu for total water electrolysis by preferential exposure of metal cations on the surface, Sustain. Energy Fuels 4 (2020) 3915-3925.

  [6] J.J. Duan, et al., Facile synthesis of nanoflower-like phosphorus-doped Ni3S2/
- CoFe2O4 arrays on nickel foam as a superior electrocatalyst for efficient oxygen
- evolution reaction, J. Colloid Interface Sci. 581 (2021) 774–782, 0021-9797.

  [7] J.J. Duan, et al., Iron, manganese co-doped Ni3S2 nanoflowers in situ assembled by ultrathin nanosheets as a robust electrocatalyst for oxygen evolution reaction, J. Colloid Interface Sci. 588 (2021) 248–256, https://doi.org/10.1016/J.
- [8] F. Jiao, H. Frei, Nanostructured cobalt oxide clusters in me cient oxygen-evolving catalysts, Angew. Chem. 121 (2009) 1873–1876, 0044-
- [9] D.M. Robinson, et al., Photochemical water oxidation by crystalline polym manganese oxides: structural requirements for catalysis, J. Am. Chem. Soc. 135 (2013) 3494-3501, 0002-7863,
- [10] S. Bai, et al., Surface polarization matters: Enhancing the hydrogen-evolution reaction by shrinking Pt shells in Pt-Pd-graphene stack structures, Angew. Chem. Int. Ed. 53 (2014) 12120-12124, 1433-7851.
- [11] Y. Shiraishi, et al., Platinum nanoparticles strongly associated with graphitic carbon nitride as efficient co-catalysts for photocatalytic hydrogen evolution under
- visible light, Chem. Commun. 50 (2014) 15255–15258.

  [12] T. Gao, et al., Ultra-fast preparing carbon nanotube-supported trimetallic Ni, Ru, Fe heterostructures as robust bifunctional electrocatalysts for overall water splitting,
- Chem. Eng. J. 424 (2021) 1385–8947, 130416.

  [13] R. Gao, et al., Structural variations of metal oxide-based electrocatalysts for oxygen
- evolution reaction, Small Methods 5 (2021) 2366–9608, 2100834,
  [14] M. Miao, et al., Molybdenum carbide-based electrocatalysts for hydroge reaction, Chem. A Eur. J. 23 (2017) 10947–10961, 0947-6539.
- [15] Y. Jiang, Y. Lu, Designing transition-metal-boride-based electrocatalysts for applications in electrochemical water splitting, Nanoscale 12 (2020) 9327–9351.
- [16] L. Yu, et al., Non-noble metal-nitride based electrocatalysts for highater electrolysis, Nat. Commun. 10 (2019) 5106, 2041-1723.
- [17] Y. Guo, et al., Nanoarchitectonics for transition-metal-sulfide-base
- electrocatalysts for water splitting, Adv. Mater. 31 (2019) 0935–9648, 1807134.

  [18] X. Li, J. Wang, Phosphorus-based electrocatalysts: black phosphorus, metal phosphides, and phosphates, Adv. Mater. Interfaces 7 (2020) 2196-7350,
- [19] H. Wang, et al., Bifunctional non-noble metal oxide nanoparticle electrocatalysts rough lithium-induced conversion for overall water splitting, Nat. Commun. 6 (2015), 7261 2041-1723.
- [20] E.A. Hernández-Pagán, et al., Resistance and polarization losses in aqueous buffer-membrane electrolytes for water-splitting photoelectrochemical cell Energy Environ. Sci. 5 (2012) 7582-7589.

  [21] D. Bianchi, et al., A novel iron-based catalyst for the biphasic oxidation of b
- phenol with hydrogen peroxide, Angew. Chem. 112 (2000) 4491-4493, 0044-
- [22] B. Singh, et al., Single-atom (iron-based) catalysts: synthesis and applications
- Chem. Rev. 121 (2021) 13620–13697, 0009-2665.

  [23] M.S. Thorum, J.M. Hankett, A.A. Gewirth, Poisoning the oxygen reduction reaction on carbon-supported Fe and Cu electrocatalysts: evidence for metal-centered activity, J. Phys. Chem. Lett. 2 (2011) 295-298, 1948-7185.
- [24] R. Jain, et al., Ligand-assisted metal-centered electrocatalytic hydrogen evolution upon reduction of a bis (thiosemicarbazonato) Ni (II) complex, Inorg. Chem. 57 (2018) 0020–1669, 13486-13493.
- [25] Z. Chen, et al., Recent advances in transition metal-based electrocatal alkaline hydrogen evolution, J. Mater. Chem. A 7 (2019) 14971–1500
- [26] A. Farhan, et al., Metal ferrites-based nanocomposites and nanohybrids for photocatalytic water treatment and electrocatalytic water splitting, Chemosphere 310 (2023), https://doi.org/10.1016/j.chemosphere.2022.136835, 136835. [27] G. Kresse, J. Furthmüller, Efficiency of ab-initio total energy calculations for metals
- nd semiconductors using a plane-wave basis set, Comput. Mater. Sci. 6 (1996)
- [28] G. Kresse, J. Furthmüller, Efficient iterative schemes for ab initio total-energy
- calculations using a plane-wave basis set, Phys. Rev. B 54 (1996) 11169.

  [29] B. Delley, An all-electron numerical method for solving the local density func
- for polyatomic molecules, J. Chem. Phys. 92 (1990) 508–517, 0021-9606.
  [30] B. Delley, From molecules to solids with the DMol 3 approach, J. Chem. Phys. 113 (2000) 7756-7764, 0021-9606,
- [31] J.P. Perdew, K. Burke, M. Ernzerhof, Generalized gradient approximation made simple, Phys. Rev. Lett. 77 (1996) 3865.
- [32] M.D. Segall, et al., First-principles simulation: ideas, illustrations and the CASTEP code, J. Phys. Condens. Matter 14 (2002) 0953–8984, 2717.
   [33] D. Vanderbilt, Soft self-consistent pseudopotentials in a generalized eigenvalue
- m Phys Rev B 41 (1990) 7892
- [34] M.M. Ansari, S. Khan, N. Ahmad, Influence of Dy3+ and Cu substitution on the structural, electrical and dielectric properties of CoFe2O4 nanoferrites, J. Mater. Sci. Mater. Electron. 30 (2019), https://doi.org/10.1007/s10854-019-02112-3.

  [35] W. Jiang, et al., Structural, electronic, and magnetic properties of tris(8-
- hydroxyquinoline)iron(III) molecules and their magnetic coupling with ferromagnetic surface: First-principles study, J. Phys. Condens. Matter 28 (2015), doi.org/10.1088/0953-8984/28/17/176004 an Institute of Physics
- [36] N.E. Schultz, Y. Zhao, D.G. Truhlar, Databases for transition element bonding: metal-metal bond energies and bond lengths and their use to test hybrid, hybrid

- meta, and meta density functionals and generalized gradient approximations,
  J. Phys. Chem. A 109 (2005) 4388-4403, https://doi.org/10.1021/jp0504468.
  [37] H. Perron, et al., Structural investigation and electronic properties of the nickel ferrite NiFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub>; a periodic density functional theory approach, J. Phys. Conde Matter 19 (2007) 0953–8984, 346219.
- [38] B.S. Hollnsworth, et al., Chemical tuning of the optical band gap in spinel ferrites: CoFe2O4 vs NiFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub>, Appl. Phys. Lett. 103 (2013) 0003–6951, 082406.
- [39] Y. Liu, et al., Insights into the interfacial carrier behaviour of copper ferrite (CuFe2O4) photoanodes for solar water oxidation, J. Mater. Chem. A 7 (2019) 1669–1677, https://doi.org/10.1039/C8TA11160J,
- [40] M. Meinert, G. Reiss, Electronic structure and optical band gap determination of NiFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub>, J. Phys. Condens. Matter 26 (2014), https://doi.org/10.1088/0953-8984/26/11/115503, 115503.
   [41] C. Faber, et al., Excited states properties of organic molecules: from density functional theory to the GW and Bethe-Salpeter Green's function formalisms, Philos. Trans. R. Soc. A 372 (2014), 20130271 1364-503X.
- [42] J. Xiao, et al., Anion regulating endows core@ shell structured hollow carbon spheres@ MoSxSe2- x with tunable and boosted microwave absorption performance, Nano Res. 16 (4) (2023) 5756-5766, https://doi.org/10.1007/

- [43] S. Sharifi, A. Yazdani, K. Rahimi, Incremental substitution of Ni with Mn in NiFe2O4 to largely enhance its supercapacitance properties, Sci. Rep. 10 (2020) 1-15, 2045-2322,
- N.M. Marković, B.N. Grgur, P.N. Ross, Temperature-dependent hydrogen electrochemistry on platinum low-index single-crystal surfaces in acid solutions, J. Phys. Chem. B 101 (1997) 5405-5413, 1520-6106.
   M.R.G. de Chialvo, A.C. Chialvo, Hydrogen evolution reaction: analysis of the
- [45] M.R.G. de Chialvo, A.C. Chialvo, Hydrogen evolution reaction: analysis of the volmer-heyrovsky-tafel mechanism with a generalized adsorption model, J. Electroanal. Chem. 372 (1994) 209-223, 1572-6657.
  [46] H. Belhadj, et al., A facile synthesis of metal ferrites (MFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub>, M= Co, Ni, Zn, Cu) as effective electrocatalysts toward electrochemical hydrogen evolution reaction, Int. J. Hydrog. Energy 47 (2022), 20129-20137 0360-3199.
  [47] F. Yuan, et al., Controlled synthesis of tubular ferrite MFe<sub>2</sub>O<sub>4</sub> (M= Fe, Co, Ni) microstructures with efficiently electrocatalytic activity for water splitting. Electrochim. Acta 324 (2019) 0013-4686, 134883.
  [48] J.K. Norskov, et al., Origin of the overpotential for oxygen reduction at a fuel-cell cathode, J. Phys. Chem. B 108 (2004) 17886-17892, 1520-6106.
  [49] G. Gao, E.R. Waclawik, A. Du, Computational screening of two-dimensional coordination polymers as efficient catalysts for oxygen evolution and reduction reaction, J. Catal. 352 (2017) 579-585, 0021-9517.
  [50] Å. Valdés, et al., Oxidation and photo-oxidation of water on TiO2 surface, J. Phys. Chem. C 112 (2008) 9872-9879, 1932-7447.

| 21 | Mrs.Shubhangi P. Patil | Screening of Blue Green Algae( Cyanobacteria) from different Water Sources and its Biotechnological Applications with reference to Bio sorption of Cr (VI) |
|----|------------------------|--|
|----|------------------------|--|

IJRAR.ORG

E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND
ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# Screening of Blue Green Algae (Cyanobacteria) From Different Water Sources And Its Biotechnological Applications With Reference To Biosorption of Cr (VI)

#### Shubhangi P. Patil

Department of Botany, Moulana Azad College of Arts, Science and Commerce, Dr. Rafiq Zakaria Campus, Rauza Bagh, Aurangabad, 431001, M.S., India

#### Mohammad Rafiuddin Naser

Department of Botany, Moulana Azad College of Arts, Science and Commerce, Dr. Rafiq Zakaria Campus, Rauza Bagh, Aurangabad, 431001, M.S., India

#### Vinay V. Chougule

U.G and P.G. Department of Microbiology, Miraj Mahavidyalaya, Miraj, Dist. Sangli, 416410, M.S., India.

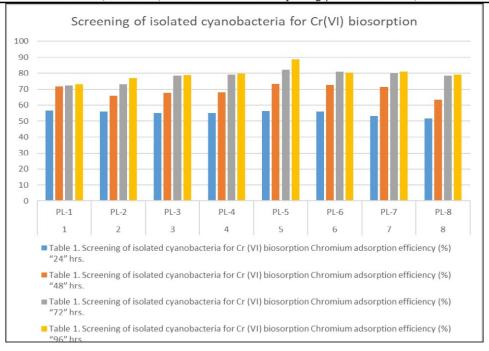
#### Abstract

Cyanobacteria, or blue-green algae, are prokaryotic, autotrophic, photosynthetic forms of algae that can fix atmospheric nitrogen into forms that can be assimilated. As a result, they serve as biofertilizers. To promote crop development and production at the same time, they maintain and improve soil fertility. BGA are utilised for bioremediation, aquaculture, food production, biofuel, and other applications. 20 water samples from various ponds, lakes, and rivers in various regions of Sangli, Miraj, Bedag, Bhose, and Digraj, Dist. Sangli, Maharashtra, India, were collected for the current study. Algal culture broth and urea broth both promote BGA growth. A total of 8 BGA, including Anabaena sp., were isolated and recognised in pure form from the 20 samples. *Nostoc species Calothrix species Plectonema species Gloeotheca species Aphanocapsa species sps. Tolypothrix Rivularia* species. The separated BGA were used to do additional research on chromium sorption bioremediation.

#### Key words: Cyanobacteria, prokaryotic, biofertilizers, bioremediation, biosorption

#### Introduction

Cyanobacteria are a group of ancient algae. The term "cyan," which refers to the colour "turquoise blue," is where the name "cyanobacteria" comes from. They also go by the moniker "blue green algae." They are found in marine as well as fresh water. But they are able to grow in a diverse environment where moisture and sunlight are available. Marine water is found to be richest source of nutrients for the cultivation of blue green algae. (J.M. Pisciotta et al.2010, P.J.B. Williams & L.M.L. Laurens, 2010, J.J. Milledge, 2011, S.K. Hoekman et al, 2012). They are found in paddy fields, as a symbiont with lichens and as an endophyte in coralloid roots of *Cycas*, thallus of *Anthoceros* and leaves of an aquatic fern, *Azolla*. (Peters et al, 1986; Rai, 1990; Stewart et al, 1980) They are oxygenic, photosynthetic prokaryotes found in soil and some of them are able to fix in atmospheric nitrogen (Malik et al., 2001). The specific algae prefer specific environment to



#### Conclusion

In the current study, eight distinct cyanobacterial cultures were purified and tested for their ability to biosorb heavy metals and cleanse waste water. Out of the eight investigated isolates, the PL-5 isolate has the highest chromium removal and biosorption efficiency, both of which are 88.5% at 30°C following 96 hours of incubation with shaking.

#### References

Abbes, I., Bedoui, K. and Srasra, E., (2008), 'Removal of cadmium (II) from aqueous solutions using pure Smectite and Lewatite S100: the effect of time and metal concentration Desalination 223 (2008), 269-273. Chougule, V. V, Deshmukh A.M., (2007), 'Biodiversity of Actinomycetes in Deep and Partial Saline Soils

of Sangli District, Maharashtra, India, Ecology Environment and Conservation 13 (4), 887

Gupta VK, Rastogi A, Saini VK, Jain N.J., 2006 Biosorption of copper (II) from aqueous solutions by Spirogyra species. Colloid Interface Sci. Apr 1; 296(1):59-63.

Hoekman, S.K., Broch, A., Robbins, C., Ceniceros, E., Natarajan, M. (2012), Review of bio-diesel composition, properties, and specifications, Renew. Sustain. Energy Rev. 16 (1) 143–169, https://doi.org/10.1016/j.rser.2011.07.143.

Malik, F. R., Ahmed, S. and Y. M. Rizki, (2001), Utilization of lignocellulosic waste for the preparation of nitrogenous biofertilizer. Pakistan Journal of Biological Sciences. (4) 1217-1220.

Milledge, J.J., (2011), Commercial application of microalgae other than as biofuels: a brief review, Rev. Environ. Sci. Biotechnol. 10 (1) 31–41, https://doi.org/10. 1007/s11157-010-9214-7.

Pisciotta, J.M. Zou, Y., Baskakov, I.V., Light-dependent electrogenic activity of cyanobacteria, PloS One 5 (5) (2010) e10821, <a href="https://doi.org/10.1371/journal">https://doi.org/10.1371/journal</a>. pone.0010821.

Peters G. A., Toia R. E. Jr, Calvert H. E., and Marsh B. H. (1986), Lichens to Gunnera - with emphasis on Azolla. Plant and Soil 90, 17–34.

Rai A. N., (1990) Handbook of Symbiotic Cyanobacteria. CRC Press, Boca Raton, FL. 253.

Stewart W. D. P., Rowell P. and Rai A. N., (1980), Symbiotic nitrogen-fixing cyanobacteria. In Nitrogen Fixation. Eds. W D P Stewart and J R Gallon, pp 239–277. Academic Press. New York.

Williams, P.J.B., Laurens, L.M.L., (2010), Microalgae as biodiesel and biomass feedstock: review and analysis of the biochemistry, energetic and economics, Energy Environ. Sci. 3 (5) 554–590, https://doi.org/10.1039/b924978h.



## THE ROLE OF TEACHERS' ORGANIZATIONS IN IMPLEMENTING NATIONAL EDUCATION POLICY 2020

#### Prof. Patil Ashokkumar Bapurao

Dept. of Statistics, Miraj Mahavidyalaya, Miraj. Dist. Sangli, (M.S.)
General Secretary, Shivaji University Teachers Association (SUTA), Kolhapur
E-mail:abpatilmmm@gmail.com

#### Abstract:

The present investigates the integral role played by teachers' organizations in the effective implementation of the National Education Policy (NEP) 2020. Through a qualitative research approach, including interviews, surveys, and document analysis, the study explores how teachers' organizations contribute to key aspects of the NEP, such as curriculum development, pedagogical innovation and policy advocacy.

Finding reveals that teachers' organizations act as crucial intermediaries, facilitating communication and collaboration between educators and policymakers. The paper highlights successful strategies employed by these organizations to overcome challenges including resource constraints and resistance to change. Additionally, it explores their influence on professional development initiatives, ensuring educators are equipped to align with the NEP's transformative vision.

This research underscores the indispensable role of teachers' organizations in driving educational reform. The insights provided serve as a valuable guide for policymakers and stakeholders committed to the successful implementation of the NEP 2020, emphasizing the collaborative efforts needed for a sustainable and impactful transformation of the education system.

#### Introduction:

The National Education Policy (NEP) 2020 is a comprehensive and transformative document that serves as a blueprint for the development of the education system in India. Approved by the Cabinet of India in July 2020, the NEP replaces the National Policy on Education of 1986. The policy aims to address the evolving socio-economic and technological landscape, ensuring that the education system is aligned with the needs of the 21st century.

In the context of the NEP 2020, the emphasis on the critical role of teachers in the execution of educational policies is pivotal. Teachers serve as the linchpin in translating policy aspirations into tangible outcomes within the classroom and educational institutions. Here are several points that underscore what role teachers' organizations play in facilitating and influencing the effective implementation of the National Education Policy 2020 in India. (Sharma2021).

This revised question incorporates key elements such as the facilitative role of teachers' organizations, their impact on implementation, and the specific context of the NEP 2020 in India. It allows for a nuanced exploration of the dynamics between teachers' organizations and the policy framework, enabling a comprehensive investigation into their involvement and effectiveness in shaping the educational landscape.

#### Literature Review:

The National Education Policy 2020 (NEP 2020) represents a transformative vision for the Indian education system, with ambitious goals aimed at fostering holistic development, inclusivity, and global competitiveness. The successful implementation of this policy relies significantly on the active involvement and collaboration of various stakeholders, among which teachers' organizations play a crucial role. This literature review explores existing research and scholarship surrounding the role of teachers' organizations in the effective implementation of the NEP 2020 (Patel &Khan, 2019).

# 1. The Nexus between Educational Policies and Teachers' Organizations:

Nexus between Educational Policies and Systemic change, and teachers' organizations actional policies serve as blueprints for systemic change, and teachers' organizations act as Educational policies serve as blueprints into actionable strategies. Existing literature underso Educational policies serve as blueprints for systems Educational policies serve as blueprints for systems Educational policies serve as blueprints for systems actionable strategies. Existing literature underscore underscore into actionable strategies. Existing literature underscore when the strategies in translating policy objectives into actionable strategies. Existing literature underscore and the role teachers' organizations play in mediations and the role teachers' organizations play in mediations. key intermediaries in translating policy objectives into additional and the role teachers' organizations play in medialing the symbiotic relationship between policy formulation and the role teachers' organizations play in medialing the symbiotic relationship between policy formulation and the role teachers' organizations play in medialing these policies at the grassroots level (Sharma, 2021). 2. Challenges Faced by Teachers' Organizations in Aligning with NEP 2020:

Despite their pivotal role, teachers' organizations encounter various challenges that impede Despite their pivotal role, teachers organization impede seamless alignment with the NEP 2020. Research has identified issues such as resistance to change seamless alignment with the NEP 2020. Research policy directives as significant hurdles (Gunta & Seamless). seamless alignment with the NEP 2020. Research had discretives as significant hurdles (Gupta & Patel, resource constraints, and divergent interpretations of policy directives as significant hurdles (Gupta & Patel, 2020).

## 3. Opportunities for Collaboration and Innovation:

The literature highlights numerous opportunities for collaboration between teachers' organizations. The literature nigningrits numerous oppositions. Initiatives such as professional development programs and policymakers to foster innovation in education. Initiatives such as professional development programs and policymakers to foster innovation in education showcase the potential for positive and policymakers to toster innovation in cadactaring showcase the potential for positive synergies collaborative curriculum design, and technology integration showcase the potential for positive synergies (Patel & Khan, 2019).

## 4. The Impact of Teachers' Organizations on Policy Outcomes:

Research suggests that the effectiveness of educational policies is intricately linked to the degree of engagement and influence wielded by teachers' organizations. Studies have explored the impact of engagement and initiation wisited by teachers' advocacy, negotiation, and feedback in shaping the outcomes of policy implementation (Kumar & Singh, 2018).

### 5. Best Practices and Lessons Learned:

The literature review concludes by examining best practices and lessons learned from instances where teachers' organizations have successfully aligned with and contributed to the implementation of education policies. Insights from these cases offer valuable guidance for enhancing the collaboration between teachers' organizations and policymakers in the context of the NEP 2020 (Smith, 2019).

#### Methodology:

The Relevant data and information is collected from Survey and interview techniques as well as secondary sources from research journals, books bulletins etc.

#### 1. Data Collection Methods:

- a. Surveys: Surveys will be distributed to teachers to gather quantitative data on their awareness, understanding, and experiences related to the NEP 2020 and the involvement of teachers' organizations. Likert scale questions, multiple-choice questions, and open-ended responses will be included.
- b. Interviews: Semi-structured interviews will be conducted with teachers, school administrators, and policymakers to gain in-depth insights into their perceptions, challenges faced, and strategies employed in the implementation process. Open-ended questions will encourage participants to share their experiences and perspectives.
- c. Document Analysis: Official documents such as NEP 2020 guidelines, school policies, and communications will be analyzed to understand the official stance and expectations regarding the involvement of teachers' organizations in policy implementation.

2. Data Analysis: a. Quantitative Analysis: - Survey data will be analyzed using statistical tools to identify trends, patterns, and correlations related to teachers! and correlations related to teachers' awareness, perceptions, and experiences in implementing NEP 2020. Descriptive statistics and inferential statistics will be employed as appropriate.

Furthermore, the results highlight the impact of teachers' advocacy and feedback, with 70% reporting tangible changes in policy outcomes influenced by their engagement. The findings underscore the successful implementation of NEP 2020 alliance with the successful implementation and support for teachers' organizations to overcome challenges and the need to successful implementation of NEP 2020, aligning with the policy's vision for holistic ensure and global competitiveness in the Indian education system.

conclusions:

ja ts

חנ

19

al

S.

is

hy

i

10

S, in

Dy

ey

al 3y

16

is

Cy

ge

at

ial

to 50 in η,

The role of teachers' organizations in implementing the National Education Policy 2020 (NEP 2020) paramount for the successful transformation of the Indian education system. As highlighted in the perature review, these organizations act as crucial intermediaries, translating policy objectives into actionable strategies at the grassroots level. The symbiotic relationship between educational policies and gachers' organizations underscores the significance of their active involvement in the implementation

process. Despite encountering challenges such as resistance to change and resource constraints, teachers' organizations are positioned to play a pivotal role in overcoming these hurdles through collaborative efforts and innovative initiatives. The literature emphasizes opportunities for collaboration between teachers' organizations and policymakers, including professional development programs and collaborative curriculum design, showcasing the potential for positive synergies.

Research suggests that the impact of educational policies, particularly the NEP 2020, is intricately inked to the degree of engagement and influence wielded by teachers' organizations. Their advocacy, negotiation, and feedback contribute significantly to shaping the outcomes of policy implementation. The review concludes by exploring best practices and lessons learned from successful instances of billaboration, providing valuable insights to guide and enhance the partnership between teachers' organizations and policymakers in the context of the NEP 2020. Overall, the active participation of eachers' organizations is instrumental in realizing the transformative vision outlined in the NEP 2020 for a holistic, inclusive, and globally competitive education system in India.

#### References:

- Gupta, S & Patel, M. (2020). Collaborative Ventures: Harnessing Opportunities for Innovation in Education through Teachers' Organizations. Educational Technology and Society, 23(3), 112-129.
- Government Reports and Policy Documents: Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education.
- Kumar, P., & Singh, R. (2018). Empowering Change: The Impact of Teachers' Organizations on Educational Policy Outcomes. Journal of Educational Research, 41(4), 567-589.
- Patel, A., & Khan, M. (2019). From Policy to Practice: Lessons Learned from Exemplary Cases of Teachers' Organizations in Educational Reform. International Journal of Educational Development, 36, 112-129
- Sharma, R. (2021). Navigating Change: Challenges Faced by Teachers' Organizations in Implementing Educational Reforms. International Journal of Educational Leadership, 8(1), 78
- Smith, A. (2019). Bridging Policy and Practice: The Mediating Role of Teachers' Organizations in Educational Reforms. Journal of Education Policy, 34(2), 145-167

| 23 | Prof. (Dr.) V.V. Chougule | Comparative Functional Genomics Studies for  |
|----|---------------------------|--|
|    |                           | understanding the Hypothetical Proteins in   |
|    |                           | Mycobacterium Tuberculosis Variant Microti 1 |





#### The Open Bioinformatics Journal

Content list available at https://openbioinformaticsjournal.com



#### RESEARCH ARTICLE

#### Comparative Functional Genomics Studies for Understanding the Hypothetical Proteins in *Mycobacterium Tuberculosis* Variant Microti 12

Tejaswini Vijay Shinde<sup>12</sup>, Tejas Gajanan Shinde<sup>12</sup>, Vinay Vasantrao Chougule<sup>2</sup>, Anagha Rajendra Ghorpade<sup>2</sup>, Geeta Vikas Utekar<sup>1</sup>, Amol Sheshrao Jadhav<sup>1</sup>, Bandu Shamlal Pawar<sup>1</sup> and Swapnil Ganesh Sanmukh<sup>2\*</sup>

#### Abstract:

#### Background.

The Mycobacterium tuberculosis complex (MTBC) bacteria include the slowly growing, host-associated bacteria Mycobacterium tuberculosis, Mycobacterium Bovis, Mycobacterium microti, Mycobacterium africanum, Mycobacterium pinnipedii.

#### Aim:

Comparative Functional Genomics Studies for understanding the Hypothetical Proteins in Mycobacterium tuberculosis variant microti 12

#### Objective:

A computational genomics study was performed to understand the 247 hypothetical protein genes. Functional annotation of virtual proteins was performed on different servers to maximize confidence level.

#### Methods

Sequence Retrieval. The whole genome sequences for the Mycobacterium tuberculosis micro variant 12 were retrieved from the KEGG database (http://www.genome.jp/kegg/) and were used for screening 247 hypothetical proteins (Fig. 1). Functional Annotation and Sub-cellular localization. The Mycobacterium tuberculosis micro variant 12 hypothetical proteins were screened and sorted out from the genome and were individually analyzed for the presence of conserved functional domains by using computational biology tools like CDD-BLAST (https://www.ncbi.nlm.nih.gov/Structure/cdd/wrpsb.cgi) ;Pfam (http://pfam.xfam.org/ncbiseq/398365647); The subcellular localization of hypothetical proteins was determined by CELLO2GO (http://cello.life.nctu.edu.tw). These web tools can search the defined conserved domains in the sequences available in the online servers or databases and assist in the classification of proteins in the appropriate families. Protein Structure Prediction. The in-silico structure predictions of the hypothetical protein sequences showing functional properties were carried out by using the PS2 Protein Structure Prediction Server (http://www.ps2.life.nctu.edu.tw/). The online server helps to generate the 3D structures of the hypothetical proteins. The server accepts the sequences in FASTA format as a query to generate resultant proteins 3D structures. The structure determination is completely based on the conserved template regions detected during functional annotations. Protein-protein interaction through String database: The interaction of each hypothetical protein analyzed for functional characteristics was subjected to a protein-protein interaction server for the prediction of a possible functional role in interaction amongst the available known proteins (https://string-db.org/). This information can help us to further validated the functional role of such hypothetical proteins and their possible role in the Mycobacterium Tuberculosis micro variant. Protein secondary structure prediction through JPred4. The secondary structure prediction of all the hypothetical proteins was determined through JPred4 (http://www.compbio.dundee.ac.uk/jpred4/index.html) and served to identify the available secondary structures in the unknown hypothetical protein sequences. These further help us to understand the available templates in the uncharacterized protein sequences for the prediction of novel functions associated with these proteins. The predictions were further characterized by the Phyre2 server for structural modeling and prediction of templates based on comparative analysis based on conserved domains. Protein modeling, prediction, and analysis through Phyre2. The hypothetical proteins which were identified to have functional properties were further characterized by the Phyre2 server (http://www.sbg.bio.ic.ac.uk/phyre2) for structural modeling and prediction of templates based on comparative analysis based on conserved domains.

#### Results

A computational genomics study was performed to understand the 247 hypothetical protein genes Functional annotation of virtual proteins, and was performed on different servers to maximize confidence level. The functional prediction was performed by CDD-Blast and Pfam. The gene sequences of proteins have probably been successfully functionally annotated, characterized, and their subcellular localization and 3-D structural

Department of Microbiology, Yashwantrao Chavan Institute of Science (Autonomous), Satara 415001, Maharashtra, India

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup>Department of Microbiology, Miraj Mahavidyalaya Miraj, (Affiliated to Shivaji University, Kolhapur), Shivaji Nagar, Sangli, Maharashtra 416410, India

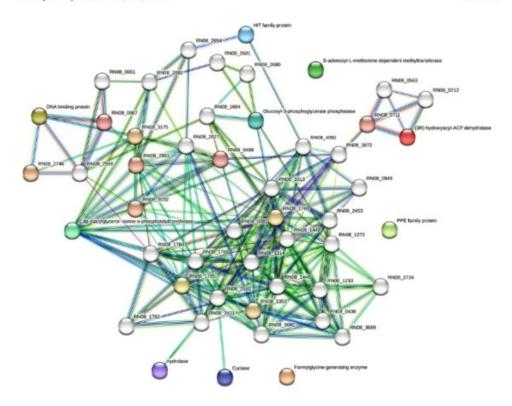


Fig. (3). The protein-protein interaction map of predicted funtional hypothetical proteins in Mycobacterium tuberculosis microvariant 12 with other known protein/enzyme families.

In conclusion, the study demonstrates the usefulness of bioinformatics tools such as CDD-Blast, Pfam, CELLO2GO, PS2-Server, Jpred 4, and PHYRE2 in predicting the structure and function of proteins. Similar studies have been reported for understanding hypothetical and unknown proteins in different microbial species [24]. These tools can be used to provide insights into the potential roles of hypothetical proteins in biological systems. However, it is important to validate these predictions through biological experiments. The study highlights the potential of bioinformatics in understanding the Mycobacterium tuberculosis complex and in developing drugs and inhibitors against different pathogens within this complex

#### CONCLUSION

Our all-inclusive bioinformatic study has provided a wealth of information about the functions, structures, and subcellular localization of 247 hypothetical proteins from Mycobacterium tuberculosis microvariant 12. This information is crucial for understanding the mechanisms by which these proteins function within the bacterium, how they contribute to its life cycle, and how they may be targeted for the development of new vaccines and drugs.

The functional annotation of these hypothetical proteins provides a deeper understanding of the functions and structures of this bacterium, which can further aid in the study of its evolution. Additionally, this information can be used to develop drugs and inhibitors against the causes of diseases caused by this micro variant. The prediction of protein-protein interactions and the 3D structure of these hypothetical proteins can be useful for future studies of proteomics and drug development. Furthermore, the information we have generated through our study can be used as a guide for experimental studies.

Overall, this study highlights the importance of bioinformatic analysis in advancing our understanding of bacterial pathogens and their associated diseases. By leveraging computational methods and tools, we were able to provide a comprehensive characterization of the hypothetical proteins in Mycobacterium tuberculosis micro variant 12, which can guide further experimental studies and help prioritize which proteins should be targeted for drug and vaccine development.

Furthermore, the results of this study shed light on the role of these hypothetical proteins in the life cycle of

- [http://dx.doi.org/10.5808/gi.21073] [PMID: 35399005] Sanmukh S, Goswami S, Swaminathan S, Paunikar W, Comparative functional genomics studies for understanding the hypothetical proteins in psycobacterium tuberculosis KZN 1435. Int J Comput Appl 2012; 60(1): 1-3. [http://dx.doi.org/10.5120/9653-3943]
- [12] Sanmukh SG, Paunikar WN. Understanding mycobacteriophages through their unrevealed proteins. Fuzzy Syst 2012; 4: 195-231. Kanehisa M. Toward understanding the origin and evolution of
- [13] cellular organisms. Protein Sci 2019; 28(11): 1947-51.
- [http://dx.doi.org/10.1002/pro.3715]
  Kanehisa M, Furamichi M, Sato Y, Kawashima M, Ishiguro-Watanabe M. KEGG for taxonomy-based analysis of pathways and genomes. Nucleic Acids Res 2022; 51(D1): gkac963. [http://dx.doi.org/10.1093/nar/gkac963] [PMID: 36300620]
  Marchler-Bauer A, Lu S, Anderson JB, et al. CDD: A conserved
- demain database for the functional annotation of proteins. Nucleic Acids Res 2011; 39(Database): D225-9. [http://dx.doi.org/10.1093/nar/gkq1189] [PMID: 21109532]
- Wang J, Chitsaz F, Derbyshire MK, et al. The conserved domain database in 2023. Nucleic Acids Res 2022; gkac1096. [http://dx.doi.org/10.1093/nar/gkac1096] [PMID: 36477806]
- Mistry J, Chuguransky S, Williams L, et al. Pfam: The protein families [17] database in 2021. Nucleic Acids Res 2021; 49(D1): D412-9.
- http://dx.doi.org/10.1093/nat/gload/13] [PMID: 33125078] Yu CS, Cheng CW, Su WC, et al. CELLO2GO: A web server for protein subcellular localization prediction with functional gene ontology annotation. PLoS One 2014; 9(6): e99368.

- [http://dx.doi.org/10.1371/journal.pone.0099368] [PMID: 24911789] Chen CC, Hwang JK, Yang JM. (PS)2: Protein structure prediction server. Nucleic Acids Res 2006; 34(Web Server issue): W152-7. [http://dx.doi.org/10.1093/nat/gkl187]
- Szklarczyk D, Gable AL, Nastou KC, et al. The STRING database in 2021: Customizable protein–protein networks, and functional characterization of user-uploaded gene/measurement sets. Nucleic Acids Res 2021; 49(D1): D605-12.
- [http://dx.doi.org/10.1093/nat/gkaa1074] [PMID: 33237311]
  Szklarczyk D, Goble AL, Lyon D, et al. STRING v11: Protein–protein association networks with increased coverage, supporting functional discovery in genome-wide experimental datasets. Nucleic Acids Res 2019; 47(D1): D607-13. [http://dx.doi.org/10.1093/nat/gky1131] [PMID: 30476243]
- Drozdetskiy A, Cole C, Procter J, Barton GJ. JPred4: A protein secondary structure prediction server. Nucleic Acids Res 2015; 43(W1): W389-94. [http://dx.doi.org/10.1093/nat/gkv332] [PMID: 25883141]
- Kelley LA. Mezulis S. Yates CM. Wass MN. Sternberg MJF. The Phyre2 web portal for protein modeling, prediction and analysis. Nat Protoc 2015; 10(6): 845-58.
- http://dx.doi.org/10.1038/npret.2015.053] [PMID: 25950237]
  Thakare HS, Meshram DB, Jangam CM, Labhasetwar P, Roychoudhary K, Ingle AB. Comparative genomics for understanding the structure, function and sub-cellular localization of hypothetical proteins in Thermanerovibrio acidaminovorans DSM 6589 (tai). Comput Biol Chem 2016; 61: 226-8. [http://dx.doi.org/10.1016/j.compbiolchem.2016.02.018] [PMID: 26930563]

#### © 2023 The Author(s). Published by Bentham Science Publisher.



This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International Public License (CC-BY 4.0), a copy of which is available at: https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/legalcode. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the

| 24 | Dr. Mrs. S. P. Patil | स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्रीमुक्ती सुधारक<br>पुष्पा भावे |
|----|----------------------|---|
|----|----------------------|---|

Impact Factor-8.632, (SJIF)

ISSN-2278-9308

# B. Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

**Multidisciplinary International Research Journal** 



# October -2023

ISSUE No - (CDXXXI) 431 -C

"Contribution of Pre-Independence & Post-Independence Reformers & Reform Movements to Indian Renaissance (1818 AD to 2020 AD)"





# Chief Editor Prof. Virag S. Gawande Director

Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

#### Dr. S. M. Jogdand (1/C Principal) Shri Shivaji College of Art's, Comm. & Sci., Kandhar, Dist.Nanded

## Dr. Vijaya K. Sakhare

Dept. of History (UG,PG & Research Centre) Shri Shivaji College of Art's, Comm. & Sci., Kandhar, Dist.Nanded



#### This Journal is indexed in:

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To: www.aadharsocial.com

Aadhar Publications



# Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXXXI) 431-C

## INDEX

| No. | Title of the Paper   | Authors' Name                             | Page<br>No. |
|-----|--|---|-------------|
| 1   | १९ व्या शतकातील समाजसुधारणा चळवळी                                    | प्रा. आदित्य भांगे                        | 1           |
| 2   | विधवा पुनर्विवाह चळवळीची मीमांसा                                     | बिपीनकुमार रामलू कर्णे                    | 7           |
| 3   | सत्यशोधक चळवळीतील प्रमुख खिया व त्यांचे कार्य                        | धैर्यशील मारुती जाधव                      | 11          |
| 4   | स्वातंत्र्यपूर्व काळातील सुधारक ; महात्मा ज्योतिराव फुले<br>प्रा.    | डॉ.आनंदा पांडुरंग कांबळे                  | 15          |
| 5   | महाराष्ट्रातील स्त्रीमुक्ती चळवळीतील प्रमुख महिला नेतृत्व            | डॉ. डी. एस. पटवारी                        | 18          |
| 6   | अखिल भारतीय मराठा शिक्षण परिचदेची भूमिका                             | डॉ.ए.बी. जाधव                             | 24          |
| 7   | स्वातंत्रपूर्व काळातील स्त्री सुधारणा चळवळीचे स्वरुप                 | डॉ. एन. आर. वर्मा                         | 27          |
| 8   | म. फुलेंच्या सत्यशोधक समाजाचा विसाव्या शतकात पडले                    | ला प्रभाव<br>डॉ.महेंद्र मोतीराम इंगळे     | 31          |
| 9   | जानार्य बाळशासी जामेकर   | डॉ. नामदेव कृष्णा मोळे                    | 35          |
| 10  | भारतीय महिलांच्या उत्यातात महाराज संयाजीराव गायव<br>डॉ               | बाड यांचे योगदान<br>निशांत भिमरावजी शेंडे | 39          |
| 11  | पंडिता रमाबाई यांचे सामाजिक सुधारणेतील योगदान एक<br>प्रा.डॉ.         | अभ्यास<br>रामभाऊ देवराव काशीद             | 44          |
| 12  | हैदराबाद मुक्तिसंग्राम आणि स्वातंत्र्यसेनानी श्री.मल्लिकार्जुः<br>डा | त चाकोते<br>.सचिन उत्तमराव हंचाटे         | 48          |
| 13  | महाराष्ट्रातील समाज सुधारणा चळवळ - 'सुधारक' वर्तमान<br>डॉ.संतो       | पत्राचे योगदान<br>प सुधाकरराव कोटुरवार    | 52          |
| 14  | स्वातंत्र्यपूर्व काळातील स्त्री मुक्ती सुधारक डॉ.                    | .शिवाजी सोमला पवार                        | 55          |
| 15  | समाजसुधारक पंडिता रमाबाई डॉ.स  | पुचिता निवृत्ती किडीले                    | 67          |
| 16  | स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्री मुक्ती सुधारक - पुष्पा भावे ।        | तें सुवर्णा प्रकाश पाटील                  | 69          |
| 17  | म. ज्योतीराव फुले यांचे शेतकरी आणि शेती विषयक विचार                  |   | 72          |
| 18  | महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे कार्य                                    | डॉ.वसंत निवृत्ती बंडे                     | 76          |
| 19  | महात्मा जोतिबा फुले यांचे सामाजिक कार्य हाँ. तांबारे ि               | वेजयकुमार गणपतराव                         | 80          |



Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXXXI) 431-C

# स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्री मुक्ती सुधारक - पुष्पा भावे डॉ सुवर्णा प्रकाश पाटील

इतिहास विभाग प्रमुख मिरज महाविद्यालय, मिरज , ९८२२०२०२२५

प्रस्तावना -

महाराष्ट्रामध्ये ज्या काळात स्त्रीवाद अथवा स्त्रीमुक्ती हे आधुनिक शब्द वापरले जात नव्हते त्या काळात क्रांतीज्योती साविजीवाई फुले आणि महात्मा ज्योतिराव फुले यांनी स्त्रीमुधारक चळवळीस प्रारंभ केला होता. स्त्री शिक्षण, विधवा विवाह, सती प्रतिबंध, स्त्रीपुरुष समानता अशा अनेक ज्वलंत प्रश्नावर कृतिशील चळवळ उभारली होती. हे त्यांचे कार्य फक्त महाराष्ट्रास दिशादर्शक ठरले नव्हते तर ते अखंड भारतातील स्त्री मुक्तीचा आरंभविंदू होता. या विंदूतूनच स्त्रीमुक्ती आणि मुधारणा चळवळीचा प्रवाह गतिमान झाला. या प्रवाहामध्ये स्वातंत्र्योत्तर काळात अनेक सुधारकांनी स्त्री सुधारणा विषय हाताळून या प्रश्नाला त्याय देण्याचा प्रयत्र केला. त्या अनुष्याने सामाजिक, राजकीय, आर्थिक,धार्मिक ई. क्षेत्रामध्ये स्त्री पुरुष समानतेसाठी अनेक आंदोलने छेडली. सन 1975 हे वर्ष आंतरराष्ट्रीय स्त्री वर्ष म्हणून घोषित केले. मन 1975 ते 85 हे दशक स्त्री दशक म्हणून घोषित केले. पण याने स्त्रियांचे प्रश्न सुटले असे झाले नाही, फार तर जाणीव जागृती झाली असे म्हणता येईल. या चळवळीमध्ये स्त्रिया व पुरुषही कार्यरत होते. उदा. राम मनोहर लोहिया, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इत्यादी पण प्रामुख्याने काही महिलांचा मी येथे उल्लेख करेल त्या म्हणजे अहिल्याबाई रांगणेकर, पुष्पा भावे, मृणाल गोरे, विद्या बाल, प्रतिमा परदेशी, वंदना भागवत इत्यादी. ही यादी बरीच वादवता येईल पण उदाहरणार्थ एवळ्यांचा उल्लेख पुरेमा आहे.

 स्थातंत्र्योत्तर काळातील खी मुक्ती सुधारक म्हणून पुण्या भावे यांच्या कार्याचा अभ्यास करणे.

२ पुष्पा भावे यांच्या स्त्री मुक्ती विषयक विचारांचा चिकित्सक अभ्यास करणे.

मंशोधन पद्धती -

सवर शोध निबंधासाठी ऐतिहासिक संशोधन पद्धती वापरली आहे. अभ्यास विषय आधुनिक व समकालीन असल्यामुळे विश्वित मुलाखती, भाषणे, वर्तमानपत्रातील लेख या प्राथमिक संदर्भ साधनांचा अभ्यास केला आहे. पच्या भावे -

पुष्पा भावे या आधुनिक भारतातील स्त्रीवादी चळवळीच्या प्रमुख कार्यकर्त्यांपैकी एक अग्रेसर कार्यकर्त्या होत्या. स्त्रीवादाचा आणि स्त्रीमुक्तीच्या अनुषंगाने त्यांनी सामाजिक, राजकीय आणि साहित्य क्षेत्रात आपले योगदान दिले आहे. मराठी विषयाच्या प्राध्यापक म्हणून सिडन हम महाविद्यालय, दयानंद कॉलेज म.ल. डहाणूकर वाणिज्य महाविद्यालय, चिनाय महाविद्यालय, राध्यापक म्हणून कार्यरत असतानाच त्यांनी विविध क्षेत्रात आपल्या कार्याचा ठमा उठवला होता. साहित्य क्षेत्राशी जवळचा संबंध असल्याने त्यांनी आपल्या लिखाणातून, भाषणातून आपल्या विचारांची चळवळ दृढ केल्याचे दिसून येते. पुष्पा भावे यांना मुंबईची 'आयर्न लेडी' म्हणून ओळखले जात होते. त्यांनी संयुक्त महाराष्ट्र आणि गोवा मुक्ती चळवळीमध्ये भाग घेतला होता. आणिबाणीच्या काळात मृणाल गोरे यांच्यासारख्यांना आश्रय मुद्धा दिलेला होता.विचारांबरोवरच विविध संघटनेची स्वतःला जोडून संघटनात्मक पातळीवर ही कृतीशील कार्यकर्ते म्हणून त्यांची सर्वसामान्यांना ओळख आहे.

वैचारिक जडणघडण व प्रारंभीचे कार्य-

पुष्पाताईच्या घरात म्हणजे मुंबई येथील माहेरील सरकार घराण्यातील वातावरण संमिश्र होते. आजोबा प्रार्थना समाजाचे कट्टर समर्थक तर वडील परिस्थितीने देव धर्मात गुंतलेले होते. वडील धार्मिक असले तरी वाचनाचे प्रचंड वेड असलेले होते.आई शिक्षिका होत्या. त्यामुळे वैचारिक वारसा होताच. महाविद्यालयातील जीवनात साहित्यक व सांस्कृतिक विचारांना चालना मिळाली. नाटक, साहित्य, भाषाविज्ञान हे आवडीचे विषय होते. नाटककार रवाकर मतकरी, कुमुदवेन मेहता,डाँ. थीराम लागू, बाबा आडाब, आणीबाणीची वेळी पन्नालाल सुराणा, मृणालताई गोरे, दुर्गाबाई आगवत, नानासाहेब गोरे, माधव साठे यांच्या बरोबर विविध क्षेत्रात काम केल्याने पुष्पाताईच्या विचार कथा विस्तृत होत गेल्या. त्या अनुभव संपन्न होत होत्या. पुष्पाताईनी साहित्यक, सामाजिक, राजकीय वर्त्रळात



# Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXXXI) 431-C

आज 'खी पुरुष समानता' यामधील समते विषयी खी आणि पुरुष गोंधळलेले आहेत. समता म्हणजे खियांनी पुरुषांसारखा वेष परिधान करणे, बाईक चालवणे, दुर्गाशक्ती अशा शब्दात तिचे वर्णन करणे हे सुद्धा जाणीवपूर्वक केले जात आहे. यातून स्थियांनी बाहेर पडणं महत्त्वाचं आहे. स्थी चळवळीत एक बदल झाला आहे. बाईला 'गरीब बिचारी' व 'बळी' मानण्याचा काळ मार्ग पडला असून गेल्या पन्नाम साठ वर्षात स्त्री वेगवेगळ्या क्षेत्रात निर्भयपणे वावरते आहे. आत्मविश्वासाने सावरलेली दिसते. बाईचे सार्वजनिक क्षेत्रातील आयुष्य समृद्ध आहे. तरीही बलात्कार, घरगुती हिंसाचार, ऑनर किलिंग, स्त्रीभूणहत्या, असे अनेक घटना घडत आहेत. या गोष्टीकडे जाणीवपूर्वक लक्ष देण्याची गरज आहे. स्त्री चळवळीत सन १९८० चे 'मधुरा बलात्कार' प्रकरण महत्त्वाचे होते, असे पुष्पा भावे महणतात. कारण एका आदिवासी मुलीवर एका पोलीस व त्याच्या मित्रांनी बलात्कार केला. ज्यांनी संरक्षण करायचं त्यांनीच अत्याचार करणे,म्हणजे 'कष्टोडियल रेप' ही कल्पना पुढे आली.त्यामुळे स्त्री कायद्यात सुधारणा करणे गरजेचे आहे हा मुद्दा सुद्धा पुढे आला. सन १९७५ नंतर युनोच्या पातळीवर स्त्री संरक्षणासाठी जे जे ठराव मांडले त्यात भारतीय शासन सहीनिशी सामील झाले होते. सन १९९३ CEDAW हा स्त्रियांवर होणाऱ्या हिंसाचाराचा निर्मूलन करणारा ठराव होता. बीजिंग आंतरराष्ट्रीय महिला परिषदेच्या निमित्ताने UNSCR 1325 च्या निमित्ताने असा मुद्दा पुढे आला की, सर्व देशातील संरक्षणविषयक भूमिकेञ्चा चर्चेत श्वियांना सहभागी करून च्या, कारण राष्ट्राराष्ट्रातील संघर्ष, युद्ध यामध्ये खियांवरसुद्धा अत्याचार होतात त्यामुळे अशा चर्चेत खियां सहभागी होणे आवश्यक आहे. या प्रश्नाला उचलून धरण्यासाठी ही चर्चा महत्त्वाची होती. उपसंहार -

पुष्पा भावे या मराठीच्या अभ्यासाक व प्राध्यापक असल्यामुळे भाषेवर उत्तम पकड होती. त्या उत्तम वक्ते होत्या, परिवर्तनवादी विचारांचा जागर व प्रसार करण्याचं काम त्यांनी उत्तमरीत्या केल आहे. स्त्रीवादी चळवळ त्याची दिशा व दिशा या अनुषंगाने त्यांनी केलेले कार्य उल्लेखनीय आहे. त्यांच्या विचारांमध्ये साक्षीभाव, तटस्थता, विश्लेषण आणि चिकित्सकता दिसून येते. त्यांनी आयुष्यभर कोणना तरी एकच विषय घेऊन व्यापक लढा उभारला नाही पण अनेक क्षेत्रात शोषित समाजाच्या बाजूने टामपणे उभ्या राहिनेल्या विसून येतात. पुण्यातील श्रीमती शिला किणी सारक्ष्या प्रसंगातून हे दिसून येते. कामाठीपुरातील शरीर विक्रय करणाऱ्या खियांशी संवक्षित प्रकल्पामध्ये त्यांनी काम केलेले आहे. अश्री अनेक उदाहरणे देता येतील. स्त्री कळवळीचे त्यांनी केलेले विवेचन तर एकूण त्<mark>यांच्या कार्यकर्तृत्वाचे</mark> तत्त्वज्ञानाच असल्याचे जाणवते सुस्पष्ट दैचारिक भूमिका, लोकशाही आणि समानतेच्या मूल्यांचा वारसा, प्रभावी वकृत्व आणि त्याला सुसंगत प्रत्यक्ष कृतीची जोड असणाऱ्या पुष्पा भावे यांचे स्वातंत्र्य स्त्री मुक्ती सुधारकांच्या यादीतील स्थान निश्चितच वरचे आहे. हेच त्यांच्या विचार व कार्यांच्या अभ्यासांती लक्षात येते. संदर्भ आणि टिपा -

- \* मेघा कुलकर्णी यांनी पुष्पा भावे यांची दीर्घ मुलाखत घेऊन 'लढे आणि तिढे' हा ग्रंथ प्रकाशित केला असल्यामुळे हा ग्रंथ एक प्राथमिक अस्सल संदर्भ आहे.
- १.कुलकणी मेधा, लढे आणि तिडे, मुलाखत, मनोविकास प्रकाशन पुणे, १ सप्टेंबर २०२०, पृष्ट क्र.२७.
- ३. कुलकर्णी हेरंब, Max Maharashtra YOU TUBE
- ४, उपरोक्त, पृष्ट क्र.१५०,
- ५. किता, पृष्ट क.१५० ते १५६.
- ६. किता, पृष्ट क्र.१६१.
- ७, किता, पृष्ट क्र.१६१.



ISSN NO. 2231-4342

#### संस्था नोंदणी क्र-१९९१/जीबीबीएसडी/४२६

## त्रिमूर्ती पावन प्रतिष्ठाण शिक्षण संस्थेचे

त्रिमूर्ती कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,त्रिमूर्ती नगर,

नेवासा फाटा,ता.नेवासा,जि.अहमदनगर Multi Disciplinary International Research Journal Peer Reviewed January 2024 Special Issue

शोधनिबंध सग्रह २०२४

# अखिल महाराष्ट्र इतिहास परिषद

३१ वे राष्ट्रीय अधिवेशन दि:- १९ व २० जानेवारी २०२४

## -: प्रमुख संपादक :-डॉ.अरुणा मोरे

अध्यक्षा

अखिल महाराष्ट्र इतिहास परिषद

#### प्रकाशक

प्राचार्य डॉ.सी .एस.आरसुळे

त्रिमूर्ती कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,त्रिमूर्ती नगर, नेवासा फाटा.जि.अहमदनगर

Multi-Disciplinary International Reserach Journal Peer Reviewed January 2024 Special Issue



## प्राचार्य डॉ.सी .एस.आरसुळे

### त्रिमूर्ती कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,त्रिमूर्ती नगर, नेवासा फाटा.जि.अहमदनगर



Multi-Disciplinary International Reserach Journal Peer Reviewed January 2024 Special Issue

ISSN NO. 2231

## शोधनिबंध संग्रह २०२४

Peer Reviewed Multi Disciplinary International Research Journal January 2024 Special Issue

### प्रमुख संपादक

डॉ.अरुणा मोरे

अध्यक्षा

अखिल महाराष्ट्र इतिहास परिषद

#### प्रकाशक

प्राचार्य डॉ.सी .एस.आरसुळे

त्रिमूर्ती कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,त्रिमूर्ती नगर,

नेवासा फाटा.जि.अहमदनगर

मुद्रक :- गणेश आर्ट, अहमदनगर

आवृत्ती :- प्रथम

दि. :- १९/०१/२०२४

 या शोधनिबंध संग्रहात प्रकाशित झालेल्या शोधनिबंधातील मतांशी संपादक व प्रकाशक सहमत अस असे नाही. ती मते त्या-त्या संशोधकाचीच समजावीत.

Multi-Disciplinary International Reserach Journal Peer Reviewed January 2024 Special Issue

| अ.नं. | संशोधक                                  | शोधनिपंबंधाचे नांव   | पृष्ठ क्रं |
|-------|---|--|------------|
| 38.   | श्री,संदीप बळवंत गुरव                   | संत महात्मा बसवेश्वरांचा खोविषयक दृष्टिकोन   | 538-580    |
| 34    | घुगे उञ्चला पुंडलीकराव                  | औरंगाबाद जिल्ह्यातील ऐतिहासिक स्थळांचे महत्त्व                                     | 288-284    |
| 35    | डॉ. सुवर्णा प्रकाश पाटील                | स्वराज्य संरक्षक महाराणी येसूबाई   | 284-540    |
| \$19  | प्रा. सोपान नवधर                        | मराठवाड्यातील निजाम राजवट : 'सर्फं- इ- खास' जमील महसूल पद्धत                       | २५१-२५६    |
| 36    | संजय पाईकराव                            | शिवकालीन चलन ब्यवस्था : नवीन दृष्टीक्षेप   | २५७-२६१    |
| 39    | डॉ बी.टी. पाटील                         | नागपुरकर भोसल्यांच्या राज्यातील उदयोग धंदे   | २६२-२७१    |
| 80    | डॉ.नवनाथ दत्तात्रय वाजगे                | पेशवेकालीन श्रीगोंदा परगण्यातील जमीन महसूल पद्धती                                  | २७२-२७७    |
| 88    | आदित्य माधव चौंडे<br>अमोघ रवींद्र वैद्य | उमा महेश्वर मंदिर,वाई येथील मराठाकालीन भित्तीचित्रे                                | 408-303    |
| ४२    | डॉ. बाळासाहेब आमगोंडा<br>कोटलगी         | कोल्हापूरातील गुळ व्यापाराचा ऐतिहासिक आढावा  | 308-366    |
| 83    | रविंद्र शंकरराव फटींग                   | मालोजीराजे भोसले यांचे कार्य आणि कर्तृत्व  | 399-399    |
| 88    | प्रा. डॉ. ठक्सेन जी. राजगुरे            | त्रिकालाबाधित प्रेरणादायी व एक कुशल मुत्सद्दी छत्रपती शिवाजी<br>महाराज:एक अभ्यास   | \$23-\$30  |
| 84    | प्रा. सागर शंकर राजेभोसले               | श्रीमंत खेळोजी राजे भोसले यांचे जीवन कार्य आणि त्यांची वार्वीची<br>वंशजशाखा- भाग १ | \$\$4-\$80 |
| ४६    | डॉ किरण प्रकाश काळे                     | औरंगाबाद या शहराच्या नावाचे (खडकी ते औरंगाबाद)                                     | 386-388    |
| 89    | प्रो, त्रंबक रामराव पाटील               | इतिहासाचे मूक साक्षीदार : वीरगळ जतन व संवर्धन                                      | 384-386    |
| 28    | प्रियांका विनायक पाटील                  | सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील किल्ले स्मारके पर्यटन स्थळे                                 | 340-348    |
| 88    | प्रा.सीमा हडकर                          | संत रोहिदास यांचे लेखन आणि त्यातील विचार   | 344-346    |
| 40    | प्रा. नागोराव मधुकर तारू                | खालापूर तालुक्यातील इर्शाळगड : एक रचनात्मक स्थापत्यशास्त्रीय अभ्यास                | 344-363    |
| 41    | हॉ. गुंजन ललेश गरूड                     | अखिल महाराष्ट्र इतिहास परिषद अधिवेशन, नेवासा                                       | 348-346    |
| ५२    | डॉ. निकम राजश्री दिलीप                  | संत साहित्यातील स्त्री प्रतिमा   | 349-308    |
| 43    | सोनवणे अंक्ट्रा भागवत                   | वारकऱ्यांचा भक्ती मार्ग  | ३७२-३७६    |
| 48    | प्रा. नाजीर पठाण                        | मराठा इतिहास लेखनातील राष्ट्रवादी आणि धर्मनिरपेक्ष इतिहासलेखन<br>प्रवाह            | 399-368    |
| 44    | डॉ. कल्पना मोतीराम सांगोडे              | पेशवे निजाम संघर्ष – उरळीची कोंडी  | 363-366    |
| ५६    | डॉ. नरेश सदाशिवराव जाधवराव<br>उमरदकर    | छत्रपती संभाजी महाराज यांच्या तृतीय राणी चंपाबाईसाहेब                              | 3८९-३९७    |
| 40    | गणेश नरसिंग साातालोल्                   | रामप्या मंदिर एक अदभुत मंदिर स्थापत्य  | 396-803    |
| 46    | शेख समरीनबेगम इब्राहिम                  | मध्ययुगीन खुलदाबाद शहरातील निवडक शिलालेख : एक नवा प्रकाश                           | 803-860    |
| 38    | शेख इस्माईल महेबुब                      | मीर कमरुद्दीन चीन कीलीच खान उर्फ निजाम उल मूलक आणि दख्खन प्रांत                    | 866-868    |
| ĘO    | जबश्री सुभाष दाभाडे                     | बारकरी पंधातील संत स्त्रिया : स्वत्वाची जाणीव एक अभ्यास                            | 864-866    |
| Ęŧ    | प्रा. डॉ. अनिल भीमराव कुंभार            | मराठ्यांच्या इतिहासाचा मूक साक्षीदार मंगळवेड्याचा भुईकोट किल्ला                    | X50-X5X    |
| Ęą    | प्रा. राजकुमार ज्ञानोबा चाटे            | मालवा कालीन कला स्थापत्य: एक अध्ययन  | 884-886    |
| Ęą    | प्रा. डॉ. रामभाऊ देवराव काशिद           | नाथ संतों का संत - साहित्य और समाज पर प्रभाव - एक अध्ययन                           | 856-835    |
| é8    | Dr. Aneesa Iqbal Sabir                  | PROJECTION OF MORAL AND SPIRITUAL VALUES IN<br>THE KHAIR-UL-MAJALIS                | 833-880    |
| ६५    | Dr. G. K. Mane                          | Khandeshwar Temple At Nandgaon Khandeshwar - A Critical<br>Study                   | 884-880    |
| ĘĘ    | Dr Nalini Waghmare                      | Neglected Vachanakaras   | 888-848    |

#### स्वराज्य संरक्षक महाराणी येसुबाई

डॉ. सुवर्णा प्रकाश पाटील इतिहास विभाग प्रमुख मिरज महाविद्यालय, मिरज ता. मिरज, जि. सांगली, महाराष्ट्र. Mob.No. ९८२२०२०२५,

email - suvarnapatil3302@gmail.com

## मराठाकालीन कर्तृत्ववान स्त्रिया - विशेष संदर्भ स्वराज्य संरक्षक महाराणी येसुबाई

प्रस्तावना — मध्ययुगीन महाराष्ट्राच्या इतिहासामध्ये मराठ्यांचा इतिहास हा जाज्वल्य इतिहास आहे. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी सतराव्या शतकात महाराष्ट्रात स्वराज्य स्थापन केले. महाराष्ट्रात नवचैतन्य निर्माण झाले. जनतेला 'जाणता राजा', रयतेचा राजा मिळाला. महाराजांनी रयतेवर राज्य करत असताना सर्वांना समान संधी, समानता अशा तत्वावर आधारित राज्यव्यवस्था निर्माण केली. या स्वराज्य निर्मितीपाठीमागे प्रेरणा, मार्गदर्शन करणाऱ्या राष्ट्रमाता जिजाऊ होत्या. खियांसाठीचा सन्मान आणी आदर जिजाऊकडूनच महाराजांच्याकडे आला होता. त्यामुळे महाराजांनी खियांना संधी त्यांच्या कर्तुत्वावर विश्वास ठेवून दिली. त्यांच्यावर जबाबदारी देण्याची परंपरा सुरू केली .जिजाऊंनी स्वतः ती सुरू केली होती. त्यामुळे मराठा कालखंडात अनेक कर्तव्यनिष्ठ खिया होऊन गेल्या. मराठी सत्तेचे दोन कालखंड आहेत. त्यापैकी ज्याला आपण शिवशाही म्हणतो त्या कालखंडामध्ये जिजाऊंच्या नंतर महाराणी सईबाई, सोयराबाई, येसूबाई, ताराबाई, दुसऱ्या जिजाऊ अशा अनेक कर्तृत्ववान खियांची परंपरा आपल्याला पाहायला मिळते.

#### उद्देश –

- १. मराठे कालीन कर्तृत्ववान स्त्री म्हणून येसूबाई यांच्या चरित्राचा अभ्यास करणे.
- २. महाराणी येसूबाई यांच्या चरित्राची मांडणी करून वर्तमानकालीन स्त्रियांपुढे पुन्हा नव्याने मांडणी करणे संशोधन पद्धती —

प्राथमिक व दुय्यम साधने चिकित्सक पद्धतीने अभ्यासले असून येणारे निष्कर्ष मांडले आहेत. ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीचा वापर केला आहे

## महाराणी येसूबाई -

age 246

#### 2/0/404

#### ISSN No. 2231-4342

येसूबाई जेव्हा स्वराज्यात आल्या तेव्हा त्यांचे वय साठ वर्षाचे होते या वयातील शाहूच्या कारकिर्दीत राजकीय न्याय निवाडाची कामे केली असल्याचे पुरावे उपलब्ध आहेत. वाटणीचे तंटेही त्यांनी सोडवल्याचे दिसते.

#### येसूबाईच्या कार्याचे मूल्यमापन-

येसूबाईंच्या कार्यांचे मूल्यमापन करताना साधारण तीन टप्पे पाडता येतात. पहिला म्हणजे छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या कारकीर्दीत येसुबाईंच्यावर संस्कार घडले. महाराजांचे म्हणजे सासरे व सून यांचे संबंध अतिशय जवळचे विश्वासाचे होते. महाराजांच्या मृत्यूनंतर औरंगजेगासारखा बलाढ्य शत्रू स्वराज्यावर आला होता. तेव्हा येसूबाईंनी संभाजींच्या पराक्रमी वृत्तीला आव्हान दिले. स्वराज्य संरक्षणास सिद्ध केले. संभाजीराजांच्या मृत्यूनंतर येसूबाईंच्या अनेक मृत्सद्दी गुणांना संधी मिळाल्याचे दिसते. स्वराज्य रक्षणासाठी राजारामाला सर्व राज्याधिकार दिले रायगड दहा मिन लढवला आणि स्वतःच्या मुलासह मोगलांच्या स्वाधीन झाले हे कार्य स्वराज्य रक्षणाच्या अनुषंगाने अत्यंत महत्त्वाचे आहे. औरंगजेबाच्या मृत्यूनंतर मोघलांनी शाहूची सुटका केली पण येसुबाईंना ओलीस ठेवून दिल्लीला नेले. सन १७१९ मध्ये बाळाजी विश्वनाथाने येसूबाईंना स्वराज्यात आणले.येसूबाई एकूण आठरा वर्षे कैदेत होत्या . कैदेत असताना सुद्धा सदवर्तन व सौजन्य पूर्ण वागणूकीने आपली छाप पाडल्याचे दिसून येते. प्रत्यक्षात तलवार घेऊन येसूबाईने रणांगण गाजवले नसेल पण मुस्सदेगिरी आणी शहाणपणाने मराठी राज्याची शकले होऊ न देता ते एक संघ स्वयंपूर्ण ठेवण्यात यश मिळवले हे ऐतिहासिक सत्य आहे.

### संदर्भ –

- अ. डॉ. मिराशी मीना, महाराणी येसूबाई, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन पुणे ३०, १९९९ पृष्ट क्र. ३४ ब. वाडा सनदापत्रे, पृष्ठ क्र. २१७.
- २. चोरमुले विजय, कर्तुत्वान मराठा स्त्रिया विजीगिष प्रकाशन, कोल्हापूर, २०२० पृष्ठ ४२.
- ३. डॉ. मिराशी मीना, उपरोक्त , पृष्ठ क्र.४२
- ४. बेंद्रे वा. शी., छत्रपती संभाजी महाराज, पृष्ठ ५१२
- ५. सरदेसाई गो. स. उग्र प्रकृती संभाजी, पृष्ठ ९७





UGC CARE LISTED

## इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे या संस्थेचे त्रैमासिक

# ॥ संशोधक ॥

पुरवणी अंक ५ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष: ९१
- पुरवणी अंक : ५

#### संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

#### अतिथी संपादक

- प्राचार्य डॉ. आर. एस. मोरे प्रो. डॉ. ए. के. वावरे डॉ. ए. व्ही. पोरे
  - प्रकाशक \*

## श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१ दूष्ट्यनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०

> Email ID: rajwademandaldhulel@gmail.com rajwademandaldhule2@gmail.com

#### कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

अंक मूल्य रु. १००/-

वार्षिक वर्गणी (फक्त अंक) रु. ५००/-, लेख सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना: संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप: या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

| 38. | कोपेश्वरचे मंदिर (खिद्रापूर)-एक चिकित्सक अभ्यास        |     |
|-----|--|-----|
|     | - श्रीमती अर्चना महादेव भोसले, प्रा. सांळूखे यू. ए     |     |
| 80. | भारतीय आणि पाश्चात्य राजकीय नवतत्त्वप्रणाली            |     |
|     | (Indian and Western New Political Ideologies)          |     |
|     | - डॉ. उर्मिला महेश चव्हाण                              |     |
| ४१. | श्री मोहनराव कदम यांच्या राजकीय सामाजिकरणाचे मूल्यमापन |     |
|     | – सौ. वैशाली शांताराम कदम                              | २१३ |
| ४२. | स्यतंत्र भारत में हुयी नारी आंन्दोलन का अध्ययन         |     |
|     | – श्रीमती संध्या अरूण पौडमल                            | २१६ |





## भारतीय आणि पाश्चात्य राजकीय नवतत्त्वप्रणाली (Indian and Western New Political Ideologies)

डॉ. उर्मिला महेश चव्हाण सहयोगी प्राध्यापक, राज्यशास विभाग मिरज महाविदयालय, मिरज drumchavan@gmail.com

#### सारांश :

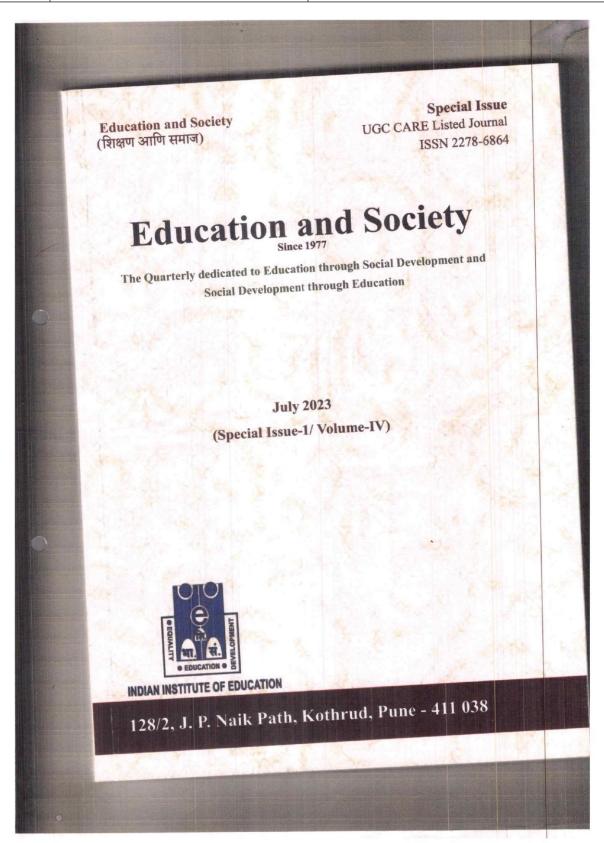
प्रस्तुत शोधनिबंधःचा विषय भारतीय व पाश्चात्य राजकीय नव तत्त्वप्रणाली असा असून प्रस्तुत संशोधनात राजेशाही हकुमशाही सरंजामशाहीकडून नव विचार प्रणालीकडे समाजाची वाटचाल कशी झाली. लोकशाही, साम्यवाद, गांधीवाद, उपयुक्तवाद अशा अनेक नवतत्त्वप्रणालीचा उदय कसा झाला. भारतीय व पाश्चात्य राजकीय तत्त्ववेत्यांनी याबावत आपले विचार कसे मांडले आहेत. याविषयी मॅकियाव्हेली, जॉन स्टअर्ट मिल, राजाराम मोहन रॉय, नामदार गोखले, महात्मा ज्योतिराव फुले, महात्मा गांधी आणि साम्यवादाचा पुरस्कर्ता कार्ल मार्क्स आणि ॲन्टोनी ग्रामसी या राजकीय विचारवंतानी आपल्या विचारांनी समाजात क्रांती कशी घडवून आणली याविषयी विचार मांडलेले आहेत. त्यांच्या नवतत्त्वप्रणालीचा अभ्यास प्रस्तुत शोधनिबंधात करण्यात आला आहे. प्रस्तुत संशोधनातून भारतीय च पाश्चात्य राजकीय नव तत्त्वप्रणालीचा अभ्यास केला असता लोकशाही, उपयुक्ततावाद, गांधीवाद, मार्क्सवाद, नव मार्क्सवाद विषयक विचार समजून येतात. भारतीय व पाधात्य राजकीय विचारवंतांनी मांडलेले विचार आधुनिक समाजाला अत्यंत उपयुक्त व मार्गदर्शक ठरत आहेत. जे. एस. मिलने प श्रळलर्शीॉू मध्ये मांडलेले स्वातंत्र्यविषयक विचार महत्त्वाचे आहेत. आधुनिक राज्यशासाचा जनक निकोलो मॅकियाव्हेलीने मांडलेले धर्मनिरपेक्षतेचे विचार राष्ट्रराज्याच्या संकल्पनेसाठी उपयुक्त आहेत. भारतीय राजकीय विचारवंतात राजाराम मोहन रॉय, नामदार गोखले, महात्मा फुले यांच्या नव विचारांचा अभ्यास संशोधनात्मक दृष्टीकोनातून केलेला आहे. हिंसा, राजकारणातील गुन्हेगारीकरण, राष्ट्र राष्ट्रातील स्पर्धा, युद्धे यासाठी महात्मा गांधीजीचे विचार कसे महत्त्वपूर्ण आहेत. महात्मा गांधीजीच्या राजकीय तत्त्वज्ञानाची गरज आधुनिक जगाला नितांत आहे. कारण हिंसा, राजकारणातील गुन्हेगारीकरण, राष्ट्र राज्यातील स्पर्धा, युद्धे याबाबी समाजात अस्थिरता अराजकता निर्माण करीत आहेत. तेव्हा गांधीचादातील सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह हीच तत्त्वे जगाला तारुण नेणार आहेत. भांडवलामुळे राज्यकत्यांना व्यक्ती स्वातंत्र्यवाद, उदारमतवाद, समाजवाद यांचा सवांना विसर पडू लागला आहे. तेव्हा आर्थिक समता व सामाजिक न्याय प्रस्थापित करण्यासाठी मार्क्सवादच उपयुक्त ठरलेला आहे. एकंदरीत भारतीय पाधात्य नव तत्त्वप्रणालीचा प्रभाव संपूर्ण जगावर प्रभाव पडलेला आहे.

#### प्रस्तावना :

भारतीय समाजव्यवस्थेत आणि पाश्चात्यसमाजव्यवस्थेत जे आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन घडून आले आणि अखिल मानव जातीला ज्यामुळे सुखी आणि स्थिर जीवन उपलब्ध होईल याबद्दलशाश्वत:ता वाटू लागली. प्राचीन व मध्ययुगीन कालखंडातून समाजआधुनिकतेकडे मार्गक्रमण करू लागला. तेव्हा राजेशाही, ह्कुमशाही सरंजामाशाहीकड्न नव विचारप्रणालीकडे समाजाची वाटचाल सुरू झाली. लोकशाही, समाजवाद, साम्यवाद, गांधीवाद, उपयुक्ततावादअशा अनेक नवतत्त्वप्रणालीचा उदय झाला. भारतीय आणि पाश्चिमात्य राजकीय तत्त्ववेत्यांनी याबाबत आपले विचार मांडून समाजाची पुर्नरचना करण्यासाठी सामाजिक, राजकीय व आर्थिक दृष्टीकोणातून मांडणी केली. तेव्हा ज्या राजकीयपविचारवंतानी आपल्या विचारांनी समाजातक्रांती घडवून आणली. पारंपारिक समाजव्यवस्थेतील अनिष्ट परंपरा दर करून आधृनिक विचारांनी राजकीय, सामजिक व आर्थिक समाजपरिवर्तन घडवून आणले. अशा भारतीय आणि पाश्चात्य तत्त्ववेत्यांच्या नव विचार प्रणालीचा अभ्यास प्रस्तुत शोधनिबंधात करण्याचा प्रयत्न करण्यात आला आहे.

### संशोधनाची उद्दिष्टे :

- १) भारतीय राजकीय नव विचारप्रणाली व पाश्चात्य राजकीय नव विचार प्रणालीचे स्वरूप समजुन घेणे.
- भारतीय राजकीय नव तत्त्वप्रणालीमुळे समाजात परिवर्तन कसे घडून आले याचा अभ्यास करणे.



**Education and Society** 

Special Issue UGC CARE Listed Journal ISSN 2278-6864

# **Education and Society**

Since 1977

The Quarterly dedicated to Education through Social Development and Social Development through Education

> Special Issue on the theme of "Emerging Issues in Commerce, Management, Economics, Social Sciences and Languages" July 2023

> > (Special Issue-1/ Volume-IV)



Indian Institute of Education J. P. Naik Path, Kothrud, Pune- 38

| ३२. प्राचीन भारतीय तत्वज्ञान<br>सौ. मीनाक्षी कुमार भगाटे   | 167    |
|--|--------|
|  | 173    |
| ३४. भारतीय लोकशाहीतील राष्ट्रीय भारतीय लोकशाहीतील राष्ट्रीय पक्षांची वाटचाल<br>श्री. ठोकळ रमेश गणपत, प्रा. डॉ. काळे संजय अंकुश   | 177    |
| 35. आदिवासी लोकसाहित्य आणि समाजजीवन यांचा अनुबंध<br>प्रा. डॉ. कृष्णा महादू भवारी   | 186    |
| ३६. आजची शिक्षण प्रणाली व युवक<br>प्रा. डॉ. हरिश्चंद्र गोविंदा बोरकर   | 192    |
| ३७. भारतीय राज्यघटना आणि संयुक्त राष्ट्रांचा आर्थिक सामाजिक, व सांकृतिक हक्कांच<br>करारनामा १९६६ यातील साम्य - एक समाजशास्त्रीय अभ्यास<br>प्रा. डॉ. अशोक शामराव चव्हाण | भा 195 |
| ३८. पं. मिथिलेश शर्मा यांचे आधुनिक संस्कृत साहित्य प्रकारातील योगदान<br>डॉ. मृणालिनी आबासाहेब शिंदे  | 198    |
| ,३९. भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य<br>डॉ. उर्मिला महेश चव्हाण   | 205    |
| ४०. भारतीय लोक साहित्य<br>डॉ. मनीषा आझाद नायकवडी   | 209    |
| ४१. पंडित जत्राहरलाल नेहरू आणि भारतीय लोकशाही<br>प्रा. ए. बी. मोहिते   | 216    |
|  |        |

1270

IN.

(III)

1000

300

1

L.P.

२०१४ , प्रथमावृत्ती

१२५००१

#### भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य

डॉ, उर्मिला महेश चव्हाण मिरज महाविदयालय, मिरज

#### प्रस्तावनाः

भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य किंवा भविष्याचा विचार करताना लोकशाही शब्दाचा अर्थ समजावून घेतला पाहिजे. लोकशाही (Democracy) म्हणजे लोकांची सत्ता, लोकांनी चालविलेली प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष सत्ता होय. Democracy हा शब्द ग्रीक भाषेतील Demos व kratia या शब्दापासून बनला. Demos म्हणजे लोक किंवा जनता होय. Kratia म्हणजे शक्ती होय. जनतेची शक्ती किंवा शासन असे प्राचीन काळी मानले जात होते. पूर्वी लोकशाहीत लोकच प्रत्यक्ष भाग घेत असत. लोकांची संमती आणि लोकांची टीका या प्रक्रियेतून लोकशाहीचा कारभार चालतो. लोकांचा बहुमताचा निर्णय मान्य करणारी आणि लोकांना समान संधी देणारी शासनपद्धती म्हणजे लोकशाही होय.भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य या प्रस्तुत शोधनिबंधा विषयी संशोधन करताना पुढील काही बाबी महत्वाच्या वाटतात. प्रस्तुत शोधनिबंधाचा उद्देश पुढीलग्रमाणे आहे.

- १. लोकशाही विषयी विविध विचारवंतानी स्पष्ट केलेल्या व्याख्या अभ्यासणे.
- २. भारतीय लोकशाही ची मुल्ये समजून घेणे.
- 3. लोकशाही यशस्वी करण्यासाठी येणाऱ्या अडथळ्याचा (समस्यांचा) अभ्यास करणे.
- ४. भारताच्या सदृढ लोकशाहीसाठी उपाय सुचविणे.

#### संशोधन पद्धती:

प्रस्तुत संशोधनासाठी ऐतिहासिक पद्धती वर्णनात्मक पद्धतीचा वापर करण्यात आला आहे. अब्राहम लिंकन यांनी लोकशाहीची व्याख्या पुढीलप्रमाणे केलेली आहे. लोकशाही म्हणजे लोकांचे लोकांसाठी लोकांनी चालविलेले शासन होय. सर स्टफर्ड क्रिप्स यांच्या मते ज्या शासनपद्धतीत प्रत्येक प्रौढ नागरिकाला आपके मत, इच्छा प्रकट करण्याचा आणि बहुमताच्या जोरावर इतरांवर वर्चस्व प्रस्थापित करण्याचा स्वतंत्र अधिकार प्राप्त होतोती व्यवस्था म्हणजे लोकशाही होय. हर्नशॉम यांच्या मते लोकशाही म्हणजे अशी शासनपद्धतीज्यामध्ये सार्वभौम सत्ता जनतेच्या ठिकाणी असते आणि राज्यशासनावर जनतेचे संपूर्ण नियंत्रण असते.

लॉर्ड ब्राईस यांनी आपल्या Modern Democracies नावाच्या ग्रंधात लोकशाही म्हणजे शासनसंस्थेचा एक प्रकार असे वर्णन केलेले आहे. त्यांचा मते राज्याची शासनसत्ता कोणत्याही एका विशिष्ट वर्गाच्या हातात नसून समाजातील सर्व लोकांकडे असते ते शासन म्हणजे लोकशाही होय.(Brice: Modern Democracies, Vol. 1 Page-20) जे. एस. मिल यांच्या मते "लोकशाही हा शासनाचा असा प्रकार आहे की ज्यामध्ये संपूर्ण किंवा बहुताशी लोक आपण निवडून दिलेल्या प्रतिनिधीमार्फत शासकीय सत्ता उपभोगतात. महात्मा गांधी यांच्यामते लोकशाही हा जीवनमार्ग होय.

वरील विविध व्याख्यांचा अभ्यास केला असता असे म्हणता येईल की लोकशाही ही शासनाची अशी पद्धती आहे की ज्यामध्ये व्यक्तीस्वातंत्र, व्यक्तीविकास जोपासण्यासाठी जनतेच्या सार्वभौमत्वाचा अग्रक्रमदिला

| Mr. Shinde Balkrishna Anil and Mr.Dolas A.V. | An Overview of Tourism in India 2022 |
|--|--------------------------------------|
|--|--------------------------------------|

Interdisciplinaary Journal Registration No. 3341/2010

Vol. No. 31 December -2023 ISSN 2277-4858 Impact Factor (IIFS) 7.125

# THE KONKAN GEOGRAPHER

Interdiciplinary Peer Reviewed Refereed National Research Journal

**Half Yearly** 



CO-EDITOR Dr. S. A. Thakur CHIEF EDITOR Dr. R. B. Patil

KONKAN GEOGRAPHERS ASSOCIATION OF INDIA SINDHUDURG - MAHARASHTRA - 416602



## THE KONKAN GEOGRAPHER

Interdisciplinary Peer Reviewed (Refereed) Research Journal, Registration No. 3341/2010 EDITORIAL BOARD (2020-2025)

| Chief Editor | Dr. Rajaram Patil     | HOD Geography, Arts & Commerce College,                        |
|--------------|-----------------------|--|
|              |                       | Phondaghat, Dist : Sindhudurg,                                 |
|              | D 01: TI I            | University of Mumbai, MS, India                                |
| Associate    | Dr. Shivaram Thakur   | HOD Geography, S. P. K. College, Sawantwadi                    |
| Editor       |                       | Dist: Sindhudurg,  |
| Advisors     | Dr. Hemant            | University of Mumbai, MS India                                 |
| Advisors     | Pednekar              | Ex. Senate Member, University of Mumbai,<br>Maharashtra, India |
|              |                       |  |
|              | Dr. Praveen Saptarshi | Visiting Faculty, Salisbury University, Maryland, USA          |
|              | Dr. L. Manawadu       | Professor, Department of Geography,                            |
|              | Di. L. Manawada       | University of Colombo, Sri Lanka.                              |
|              | Dr. Darikhan Kamble   | Assistant Registrar, Ranni Chanamma                            |
|              | Dir Damaran Kambio    | Uni.Belgavi, Karnatak, India                                   |
| Panel of     | Dr. Sunil Kumar De    | Professor, Dept. of Geography, North-Eastern                   |
| Experts      |                       | Hill University, Shillong, Meghalaya, India                    |
|              | Prof. Dr. Mohamed     | Geography Department, Faculty of Arts,                         |
|              | Alkhuzamy Aziz        | Fayoum University Fayoum City, Egypt                           |
|              | Dr. Inibehe Ukpong    | Dept. of Agriculture Extension &                               |
|              |                       | Management,  |
|              |                       | Federal Polytechnic University.                                |
|              |                       | Ekowe Bayelsa State, Nigeria                                   |
|              | Dr. Nandkumar         | Prof.in Geog., Parvatibai Chougule College,                    |
|              | Sawant                | Madgaon, Goa University, Goa, India                            |
|              | Prof. Deepak          | HOD Dept. of Geography, G. H. College,                         |
|              | Kolhapure             | Haveri,  |
|              |                       | Karnatak University Dharwad, Karnatak, India                   |

The Statement and opinions expressed in various articles are those of the authors and do not necessarily reflect the view of the Society or Editorial Board. Any part of the Article published in the journal can not be reproduced without prior permission of the Secretary of the Society.

Copy Right: Konkan Geographers' Association of India.

Address for Communication

Dr. S. A. Thakur - President, Konkan Geographers' Association of India At/Post. Bhatwadi, Tal: Sawantwadi, Dist: Sindhudurg.

Maharashtra, INDIA E-mail: drsathakur@gmail.com M+919168561569



#### Journal Volume No. 31/Dec., 2023 THE KONKAN GEOGRAPHER

ISSN 2277-4858, Impact Factor IIFS 7.125
National Interdisciplinary Peer Reviewed Referred Research Journal of the KONKAN GEOGRAPHERS' ASSOCIATION OF INDIA

#### INDEX

| S.N. | Title of the Research Paper  | Author   | P. No. |
|------|--|--|--------|
| 1    | Traditional Environmental Wisdom, Belief System and<br>Perception about Environment Conservation in Bishnoi<br>community                     | Kirpa Ram<br>Prof. Vijay Kumar Baraik  | 01     |
| 2    | Traditional Methods of Water Conservation in Rajasthan   | Alok Chauhan   | 05     |
| 3    | Depletion of Ground Water A Challenge to Sustainable<br>Development in Haryana   | Neeraj<br>Sarita Devi  | 13     |
| 4    | HSC Vocational Courses : Remedy on unemployment in<br>Sindhudurg District  | Dr. Maruti I. Kumbhar  | 22     |
| 5    | The Geological and Physiographic study of Nilwande Left<br>Bank Canal Command Area for Application of<br>Gravitational Pipeline Canal System | Dr. Anil A. Landge   | 29     |
| 6    | Application of Remote Sensing and Gis in Agriculture   | Dr. Kamlesh R Kamble   | 34     |
| 7    | Analysis of Education Status in the Villages Ghaderni,<br>Parsha and Baror, Kullu District (Himachal Pradesh)                                | Dev Karan  | 39     |
| 8    | An Overview of Tourism in India 2022   | Mr. Balkrishna Shinde,<br>Mr. Anieket Dolas                                    | 45     |
| 9    | Karnataka is The Major Tourist Destination: A<br>Geographical Analysis   | Dr. Prakash B. Holer   | 52     |
| 10   | An Analytical Study of Problems and Prospects of<br>Pomegranate Farming in South Maharashtra   | Prof. S. B. Gaikwad<br>Prof. S. A. Kharat<br>Prof. Waingade, Prof. A. B. Patil | 62     |
| 11   | Impact of Urban Growth on Land Use Changes A Case<br>Study of the Rajpur Sonarpur Municipality of West Bengal                                | Soma Naskar<br>Dr. Subhasis Mondal   | 69     |
| 12   | Economic Impact of Tourism on Residents of Devgad Town in Sindhudurg District  | Dr. Prakash J. Hajare  | 77     |
| 13   | रामगढ़ जिला में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या वृद्धि के<br>बदलते प्रतिरूप: एक भौगोलिक अध्ययन  | डॉ. हेमलाल कुमार मेहता   | 82     |
| 14   | नवीन शैक्षणिक धोरण 2020 मध्ये ग्रंथालयाची भूमिका   | डॉ. विद्या शरद मोदी  | 89     |
| 15   | दुग्ध व्यवसाय - एक शेतीवर आधारित उद्योग  | डॉ. बाजीराव इंगवले   | 96     |



#### THE KONKAN GEOGRAPHER

Vol. No. 31 Nov/Dec. 2023 ISSN No. 2277-4858 Impact Factor (IIFS) 7.125 (Interdisciplinary Peer Review Refreed Research Journal)

#### An Overview of Tourism in India 2020

#### Mr. Balkrishna Anil Shinde, Mr. Anieket Vaku Dolas

Assistant Professor in Geogrpahy, Miraj Mhavidyalaya, Miraj, District Sangli

Research Paper Received on 20-12-2023 Edited & Accepted on 30-12-2023

#### Introduction

India, a tourism hotspot in the world, has a large bouquet of tourist attractions to boast of. Its widespread diversity has always attracted both foreigners as well as its' own citizens alike, to explore its mirth and gaiety that it has to offer the world. The World Tourism Organization defines Tourism as, it is social, cultural and economic phenomenon which entails the movement of people to countries or places outside their usual environment for personal or business purpose.

The growing influence of the tourism sector as an economic powerhouse and potential as a tool for development are irrefutable. Not only does the tourism sector spearhead growth, it also improves the quality of people's lives with its capacity to create large scale employment of diverse kind. It supports environmental protection, champion's diverse cultural heritage and strengthens peace in the world. (India, 2023)

Tourism sector is one of the fastest growing economic sectors with a significant impact on employment and accelerates regional development with a multiplying effect on the activity of related sectors. Among economically advanced states, domestic tourism has become a springboard to the development of tourism. It can generate resources for conservation of cultural and natural heritage and has huge potential to make positive contribution to sustainable development goals. (Tourism, 2023)

#### Objective:

To study an overview of Tourism in India in the year 2022.

#### Data & Methodology:

The current study was based on secondary sources. The data required for the study was taken from the website and reports of Ministry of Tourism. The received data compiled in the form of graphs and tables. Line graphs, bar graphs and maps were used for showing the data. The data of the foreign tourist and domestic tourist is for time period from 2011 to 2022 on which methodology were applied. The Methodology, Estimation Procedure and the survey instruments were developed by the Market Research Division of Ministry of tourism, Government of India.

50

Impact Factor-8.632 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# B. Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

September, -2023
ISSUE No - (CDXXVI) 426







Chief Editor Prof. Virag S. Gawande Director

Andhar Social

Research & Development

Training Institute Amravati

Editor: Dr.Dinesh W.Nichit Principal Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.

**Executive Editor:** Dr.Sanjay J. Kothari Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm.Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati



This Journal is indexed in : Scientific Journal Impact Factor (SJIF) Cosmos Impact Factor (CIF)

For Details Visit To:

Aadhar Publications

Impact Factor - (SJIF) -8.632

ISSN - 2278-9308

# **B.**Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

September, -2023

ISSUE No - (CDXXVI) 426

Sciences, Social Sciences, Commerce, **Education, Language & Law** 

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr.Dinesh W.Nichit

Editor

Principal.

Sant Gadge Maharaj Art's Comm, Sci Collage, Walgaon. Dist. Amravati.

Dr.Sanjay J. Kothari

**Executive-Editors** 

Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati

# **Aadhar International Publication**

For Details Visit To : www.aadharsocial.com © All rights reserved with the authors & publisher Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXXVI) 426

# स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी लघुकथाओं में दहेज प्रथा

Dr. Shaheen Ajaj Jamadar

Head, Dept of Hindi, Miraj Mahavidyalaya, Miraj

9850588435 jamadarshaheen79@yahoo.com

.. लघुकथा का प्रारंभ छठे दशक के आस-पास माना जाता है। पिछले चार दशकों में लघुकथा के विकास ने इस विधा को न मान्यता दिलायी बल्कि अन्य विधाओं के समकक्ष लाकर खड़ा किया है। जितनी लोकप्रियता इस विधा को मिली हो। आज इस विधा का विकास बढ़ता ही चला जा रहा है। कहने का मतलब यह है इस विधा का जन्म छठे दशक में सातवें में विकास और आठवें दशक में साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा और नौवे दशक में अन्य विधाओं की पंक्ति में बैठ जाना। यहाँ इस विधा की बढ़ती हुयी ख्याति नजर आती है आज लघुकथा लिखनेवालों की संख्या ज्यादा है। यह देखकर अनेक विश्वविद्यालयों में इस विधा पर अनुसंधान करने की अनुमति दे जा रही है तो कुछ प्रकाशकों ने इस की महत्ता को जान कर लघुकथा-संग्रह प्रकाशित भी किये है। तो कुछ पत्र पत्रिकाओं ने इस पर विशेष अंक भी निकाले हैं।

लघुकथा आम आदमी के जीवन से जुड़ी हुई है इसलिए इस का महत्व बढ़ता जा रहा है। कहना यह है कि "लघुकथाएँ वास्तव में 'सतसैयाँ' के 'दोहरे' की तरह हैं जो छोटी होकर भी अति गंभीर प्रभाव डालती है।" आज की लघुकथाएँ समाज में पनपनेवाली समस्याओं, मान्यताओं, राजनीतिक विसंगतियों और नयी मानसिकता की ओर इंगित करती नजर आ रही हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटीत घटनाओं का लेखाजोखा साहित्य में होता है। आज सामाजिक विघटन के कारण पारिवारिक समस्याएँ बढ़ गई हैं। आज का युवक अपने नाते-रिश्ते सब भूलता जा रहा है। मात-पिता के प्रति उसका उत्तर दायित्व, पित-पित्नी में विखराव, गरिवी, भूख, वेरोजगारी, बलत्कार और वेश्यावृत्ति, कर्ज की समस्या, आत्महत्याएँ इस प्रकार अनेक पारिवारिक समस्याएँ बढ़ती चली जा रही हैं। हम यहाँ पर हिन्दी लघुकथाओं में दहेज प्रथा का विवेचन करने का प्रयास करेंगे।

आज समाज में दहेज प्रथा का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। इस प्रथा की वजह से अनेक बालाओं की जिंदगी दुष्वार हुई है। अनेक युवतीयाँ आत्महत्याएँ कर रही है। कुछएक को जलाया जा रहा है। इन घटनाओं का वर्णन अनेक लघुकथाकारों ने अपनी कथाओं में किया है। दहेज का अर्थ उन उपहारों से है जो एक पिता या अभिभावक द्वारा उसकी बेटी को उसकी शादी के समय में दिए जाते हैं। प्राचीन काल में अपने स्वयं के घर को स्थापित करने के लिए नववधू को एक प्रकार की सहायता के रूप में दिया जाता था। आज दहेज घरेलु सामान देकर दहेज की रस्म पूरी कर रहे हैं। आज बिना दहेज के लड़की की शादी करना बेहद मुश्किल हो गया है। आज एक गरीब बाप अपनी जवान बेटी की खुशहाली के लिए अपनी जीवन भर की पुंजी खर्च करता है। अब यह प्रथा एक समाज में कई बुराईयों का कारण बन रही हैं। जिस में सैकड़ों निर्दोष महिलाओं की जान चली जा रही है। औरहमारा भारतीय समाज खोखला बन रहा है। हिन्दी साहित्य के लघुकथाकारों ने इस समस्या पर अनेक लघुकथाएँ लिख कर समाज को सुधारने का काम किया है।

विणा वल्लभ की 'दहेज' इस लघुकथा में एक भिखारी दिल्ली के जामा मस्जिद के नीचे भीख माँगता है। रोज कोई न कोई उसकी टोपी में भीख के रूप में पैसे जमा होते है। उसकी एक जवान बेटी है। वह भी अपनी बेटी की शादी करना चाहता है। एक दिन उसे अच्छा नवजवान भिखारी मिलता है। वह उस जवान से अपनी बेटी की शादी करने को कहता है तब वह भिखारी उससे कहता है कि, "अगर आप अपनी मस्जिदवाली जगह मुझे दे दें तो .....।" इस प्रकार बड़े मियाँ की रोटी वह नवजवान दहेज में हड़प लेता है और उसकी वेटी से शादी करता है। शादी के बाद बड़े मियाँ फिर कभी उस शहर में दिखाई नहीं देते। यहाँ युवा भिखारी का सारा व्यवहार समाज व्यवस्था और विवाह संस्था पर किया गया व्यंग्य है। आज भिखारी भी दहेज लेना जरुरी समज रहे है। उसी प्रकार ब्रजेश परसाई ने अपनी लघुकथा 'तीसरा प्रश्न' में दहेज के विषय में अलग दृष्टि से विचार किया है। इस लघुकथा में एक युवक तीन प्रश्न लोगों के सामने रखता है। उन्होंने यह बताया है कि समाज में उपरी तौर पर दहेज का विरोध करने वाले लोग हैं। लेकिन सब भीतर से दहेज प्रथा के समर्थक ही है। यही समाज का खोखलापन दिखाई देता है।



Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXXVI) 426

यश खन्ना ने अपनी लघुकथा 'चिंता' में एक गरीब बाप के मजबुरी का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है। एक रेल हादसे में मरे लोगों के परिवार वालों को सरकार पाँच-पाँच हजार की सहाय्यता घोषित करती है। तो वही बैठा गरीब यात्री आह भरते हुये कहता है कि मेरा भी एक्सीडंट होता तो सभी उसे डाँटते हैं, लेकिन वह कहता है कि, "जान की चिंता तुम्हें होगी बाबू मुझ गरीब को तो अपनी बेटी की चिंता है, अब तक कुँआरी बैठी है।" इससे स्पष्ट होता है कि गरीब यात्री अपने मरने के बाद उन पैसोंसे दहेज अदा हो जाए। इस देश में मरने के बाद भी एक बाप को चिंता है कि उसकी बेटी को दहेज दे। उभी तरह वीरेंद्र जैन ने 'पुछताछ' नामक अपनी कथा में दहेज न देने के कारण आये दिन जलायी जानेवाली महिलाओं की दृष्टि में यह कथा लिखी है। इसमें लेखक सिर्फ इतना जानना चाहता है कि "आपको तेल नहीं मिल रहा है। लेकिन किसी अबला को दहेज प्रथा के खातिर जलाने के लिए तेल मिल जाता है। उसीप्रकार राजकुमारी डोगरा ने 'हाथी के दाँत' लघुकथा में एक छात्र संगठन का क्रांतिकारी युवक अपनी पत्नी को दहेज के खातिर सताता है, अखिर में उसकी बीवी मिट्टी के तेल कि मदद से अपने आप को खत्म करती है। लेखिका यह कहना चाहती है कि आज कुछ ऐसे युवक है जो हाथी के दाँत के समान होते है। जो खाने के और, और दिखाने के और होते है।

आज की पीढ़ी कुछ समझदार नजर आ रही है। उसी प्रकार हिर्शिकर परसाईजी ने दहेज से मुक्ति दिलवाने वाली 'सुशीला' लघुकथा लिखकर बहुत से पिताओं की चिंता को मिटाया है। इस लघुकथा की नायिका सुशीला को परेशानी को समझती थी। इसलिए सुशीला एक कायस्थ इंजीनियर के साथ भाग जाती है। उस की चिट्टी जब पिता को मिलती है तो उस में लिखा होता है, मेरी शादी अगर आप करते तो सारा प्राविडेंट फंड चला जाता और कर्ज भी हो जाता। आपका दुःख में समझती हुँ। लोग ताने भी देते होंगे, पर आप कह सकते हैं कि बेटी हो तो सुशीला जैसी, जो पिता का प्राविडेंट फंड चला जाता और कर्ज भी हो का प्राविडेंट फंड चला दे। इस प्रकार सुशीला ने अपने पिता की चिंता मिटा दी। कमलेश भारतीय की कथा 'तस्सली' में दहेज के कुछ अनसोचे-समझे पहलुओं पर विचार किया है। कुछ लोग पड़ोसियों एवं रिश्तेदारों को दिखाने खातिर भी कारण बहेज लेते भी है और देते हैं। इसका वर्णन चित्रा सुशुल ने अपनी लघुकथा 'ऐस होते हैं। अपने वेटी या वेटे के एव के कारण बहेज की समस्या जारी है। उपा अग्रवाल 'पारस' की लघुकथा 'लक्ष्मी के रूप इस में घर की लक्ष्मी को लातों से मारा जाता है। लेकिन उसी बहु का पैर झाड़ू को लगता है तो उसे डांट पड़ती हैं कि झाड़ू घर की लक्ष्मी को लातों लेखिकाने यह बताने की कोशीश की है कि आज जीवित से अधिक अजीवित वस्तु का ख्वाप रखा जाता है। इसप्रकार कारित कर्ज, डर, औकात, क्लर्क की बेटी, बेदखल, लालसा इत्यादि कथाओं में दहेज प्रथा का चित्रण देखने मिलता है।

सारांश रूप से यह कह सकते है कि उपरोक्त सभी लघुकथाओं में दहेज पर करारा व्यंग्य है। आज दहेज प्रथा ने पुरे समाज को खोकला कर दिया है। एक बाप अपनी जवान होती बेटी को देखकर खुश होने के बजय चिंतित है। क्योंकि उसे यह फिकर लगी रहती है कि उसका दहेज कैसे जमाये। आज इस प्रथा को हम सभी खत्म करना जरुरी है।

चंद पैसों के लिए जिन्दा जला दिया अरमानों को। ये लड़ाई है हम सब की मारो उन दहेज के दिवानों को ॥

#### संदर्भ ग्रंथ सूची-

- १) सारिका, जून १९७३, कमलेश्वर पृ. १५
- २) दहेज, बीणा वल्लभ, सारिका १९७१ पृ. ४५
- ३) चिंता, यश खन्ना सारिका फरवरी १९८० पृ. ६४
- ४) पुछताछ, वीरेंद्र जैन, सारिका १९८० पृ. २४
- ५) सुशीला, हरिशंकर परसाई- १९८० पृ. ३३
- ६) गगनांचल- अंक ६, नवंबर-दिसम्बर, २०१८



UGC CARE LISTED ISSN No. 2394-5990

# इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे या संस्थेचे त्रैमासिक

# ।। संशोधक।।

पुरवणी अंक १४ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष: ९२
- पुरवणी अंक : १४

### संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

#### अतिथी संपादक

- डॉ. संदीप तडखे डॉ. प्रशांत फडणीस डॉ. राम कांबळे
  - \* प्रकाशक \*

## श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१ दुरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०

> Email ID: rajwademandaldhule1@gmail.com rajwademandaldhule2@gmail.com

#### कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

अंक मूल्य रु. १००/-

वार्षिक वर्गणी (फक्त अंक) रु. ५००/-, लेख सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना: संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.



# भारताच्या शाश्वत विकासातील महिला सबलीकरणाची दिशा: महाराष्ट्राच्या विशेष संदर्भात

### डॉ. सुवर्णा प्रकाश पाटील

इतिहास विभाग प्रमुख मिरज महाविद्यालय, मिरज ता.मिरज , जि.सांगली, महाराष्ट्र .

मोब.नं.९८२२०२०२५, इमेल - suvarnapatil3302@gmail.com

#### प्रस्तावना :

इतिहास हा वर्तमान काळात जगण्यासाठी आणि भविष्यकाळात नियोजन करण्यासाठी दीपस्तंभाचे काम करतो म्हणून थुसिदिदीज सारखा इतिहासकार 'इतिहास म्हणजे अनुभवाचा दीपस्तंभ' असे म्हणतो. इतिहासामध्ये अभ्यास विषयाचा विचार केला तर त्यामध्ये फक्त 'HIS' STORY होती. आधुनिक युगात किंवा कालखंडात स्त्रीचा समावेश होत गेला विशेषता अठराव्या शतकाच्या उत्तरार्धात इतिहास विषय राजाकडून जनतेकडे प्रवाहित होण्यास सुरुवात झाली तरी देखील प्रारंभीच्या कालखंडात कामगार, शेतकरी, गुलाम, अस्पृश्य अशी पुरुषप्रधान विशेषणांनीच इतिहासाची मांडणी होत होती. औद्योगिक क्रांती झाल्यानंतर पुरुषांबरोबर स्त्रियाही कामगार विश्वात दिसू लागल्या स्त्रिया कामगार म्हणून बाहेर पडल्या आहेत. स्त्रियांचे विश्व 'चूल आणि मूल' याशिवाय नव्हे तर याबरोबर औद्योगिक परिसरातही डोकावू लागले इथून स्वियांच्या आचार विचार कक्षा रुंदावण्यास प्रारंभ झाला सुरुवातीच्या काळात स्त्रियांना पुरुषां बरोबरीचे स्थान नव्हते. सर्व क्षेत्रात तेव्हा स्त्रीचा होणारा अपमान, अत्याचार, पक्षपातीपणा आणि यातून तिची होणाररी घुसमट कुचंबणा, पुरुषव्यवस्थेवरचा संताप, आक्रोश, असंतृष्टपणा डोकावू लागला, स्त्रीची ही अवस्था म्हणजे स्त्रीवाद म्हणता येणार नाही. ही एक समस्त मानवी स्वभाव वैशिष्ट्यातून प्रत्यावर्तीत होणारी नैसर्गिक प्रतिक्रिया होती. अठराव्या शतकात उदयास आलेल्या उदारमतवादी विचारसरणीचा एकोणीसाव्या शतकात आणखीन विस्तार झाला. त्यातून व्यक्तिस्वातंत्र्य व व्यक्ती प्रतिष्ठा या मूल्यांना महत्त्व आले. जॉन स्टुअर्ट मिलने या विचारसरणीतूनच 'सब्जेक्शन ऑफ वुमेन' (१८६९) हा ग्रंथ लिहिला. स्त्रियांना मिळणाऱ्या दुय्यम वागणुकीचा प्रश्न ऐरणीवर आला. स्त्रियांना कुटुंबात किंवा कामाच्या ठिकाणी प्रथम दर्जाची महत्त्वाची जबाबदारी पार पाडली तरी तीलाद्य्यम स्थान दिले जाते याला जबाबदार

विवाह संस्था व कुटुंब संस्था आहे हा विचार पुढे येऊ लागला. उलट पक्षी मार्क्सवादाने श्लियांच्या शोषणाला व दुय्यमत्वाला कुटुंब जबाबदार आहे पण त्याचबरोबर समाजातील आर्थिक व्यवस्था ही कारणीभूत असल्याचा उद्गोचार केला. विसाव्या शतकापर्यंत औद्योगिक काळापासून झपाट्याने लागलेले वैज्ञानिक व तांत्रिक शोध, यातून समस्त मानव जातीचे झालेले गतिमान जीवन, समाजाचा बदललेला भौतिक चेहरा या सर्वांमधून श्ली विषयक विचारालाही गती मिळाली यातूनच श्लीवादाचा उदय झाला. म्हणजेच विज्ञान तंत्रज्ञानाची गती आणि श्लीवादाची गती यांच्यात एक धागा आहे. विज्ञानाच्या हिंदोळ्यावर श्लीवादाची अंतरंग बदलताना दिसतात या सूत्राचा धागा पकडून विज्ञान आणि भारतीय श्लीवाद अशा पद्धतीची मांडणी प्रस्तुत शोध निबंधात केली आहे.

#### उद्दिष्टे :

- भारताच्या शाश्वत विकासातील महिला सबलीकरणाची महाराष्ट्राच्या विशेष संदर्भात मांडणी करणे.
- सांस्कृतिक व परंपरा पुनर्रस्थापनेच्या प्रयत्नात मूळ स्त्रीवादी चळवळ विज्ञानवादापासून दूर होत चालली आहे की काय याचा अभ्यास करणे.

#### संशोधन पद्धती :

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीचा अवलंब केला आहे. प्राथमिक दुय्यम संदर्भ साधने वापरून अन्वयार्थ लावून निष्कर्ष काढले आहेत.

#### एकोणीसाव्या शतकातील स्त्री जीवन आणि चळवळ :

महाराष्ट्रातील पेशव्यांचे राज्य ब्रिटिश कंपनीने सन १८१८ मध्ये संपुष्टात आणले. त्या काळात महाराष्ट्रातील स्त्री जीवनाने आधुनिक कालखंडात प्रवेश केला नव्हता. अजून ते मध्ययुगातच होते. स्त्रीची गुलामगिरी, बालविवाह, जरठ विवाह, बहुपत्नीत्व,



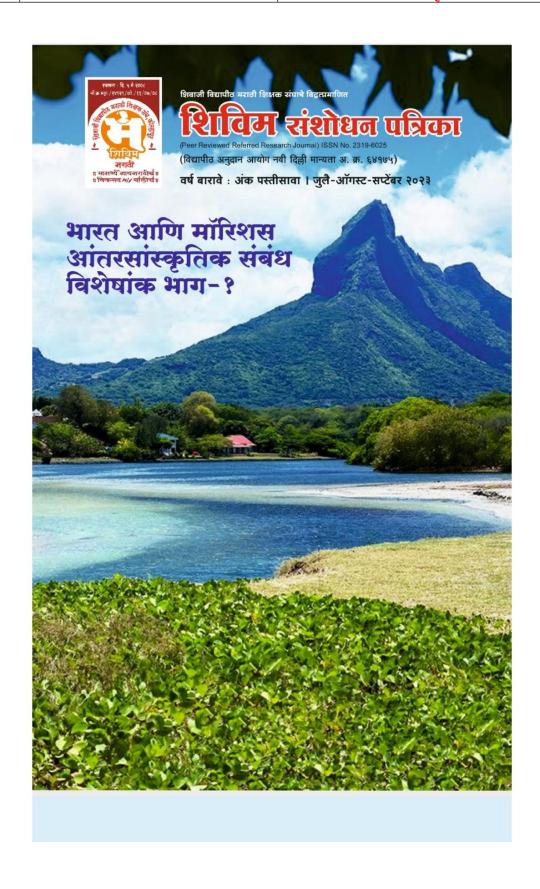
व्यावसायिक, उद्योजक म्हणून स्त्रियांचा टक्का वाढत आहे. पण याच क्षेत्रातील बहुसंख्य स्त्रिया सांस्कृतिक पातळीवर प्रगल्भ, विज्ञाननिष्ठ, निरपेक्षवादी नाहीत एखादी भौतिक शास्त्रातील पीए.चडी. धारक स्त्री चंद्र पाहन संकष्टीचा उपवास सोडते. यामध्ये श्रद्धा आणि अंधश्रद्धा यातील अंतर फार पुसट असते. मॉल, कॉल सेंटर, प्रक्रिया उद्योगात काम करणाऱ्या स्त्रियाचा टका वाढतोय पण त्याचा अर्थ त्या सबल झाल्या असा होत नाही कारण त्याचवेळी दुसरीकडे अर्थ व संस्कृतिक व्यवस्थेने स्त्रियांचे शरीर नव्या प्रकारे विक्रीय वस्तू म्हणून पुढे आणले आहे. यामधून चंगलवादी व सांस्कृतिक भनंगपणा दिसून येतो. स्त्रियांना मिळणारे सांस्कृतिक अवकाश बाजारपेठ व नफा भांडवल याच्या भोवती फिरते आहे त्यामुळे स्त्रियांवरील प्रत्यक्ष हिंसेत वाढ होताना दिस दिसत आहे. अशा हिंसाचाराला विरोध करणाऱ्या आंदोलने मोर्चाला जाताना सुद्धा चमकत्या साड्या किंवा लफ्फेदार दागिने परिधान केलेल्या किंवा कारण नसताना पुरष पेहराव परिधान केल्या स्त्रिया दिसतात. याचाच अर्थ बहुजन स्त्रीला स्त्रीवाद व स्त्री चळवळीच्या संकल्पनेचा पुरस्कार बोध झालेला नाही.

#### निष्कर्ष :

महिलांनी आधुनिक विज्ञान तंत्रज्ञानाचा वापर करून स्वतःची भौतिक प्रगती साधली आहे त्या आधारे यशाची अतिउच्च शिखरे सहजरित्या गाठलेली आहेत. अगदी शिपाई पासून वैमानिक, अण्वस्न संशोधक पदापर्यंत पोहोचले आहेत पण सांस्कृतिक, पारंपरिक प्रथा परंपरेतून मुक्त झालेली नाही तसेच आधुनिक माध्यम व व्यवस्था यांच्या प्रभावामुळे पुन्हा सांस्कृतिक, पारंपरिक प्रथा परंपरेत अडकत आहे. पुरुषप्रधान व्यवस्थेची बळी ठरलेलीसुद्धा दिसून येते. सदर या बाबी स्त्रीवादी चळवळीला आणि महिला सबलीकरण प्रक्रियेतील आडथळा आहेत असे म्हणावे लागते. यासाठी पुन्हा चळवळीने प्रयत्नशील होणे क्रमप्राप्त आहे.

#### संदर्भ :

- संपा. भागवत वंदना, सपकाळ गीताली, संदर्भासहित स्त्रीवाद, स्त्रीवादाची समकालीन चर्चा , शब्द पब्लिकेशन, बोरीवली, मुंबई, दुसरी आवृत्ती २०१७, पृष्ठ क्रमांक १५५, १५७.
- डॉ. कठारे अनिल, भारतीय स्त्री चळवळीचा इतिहास, एज्युकेशनल पब्लिशर्स औरंगाबाद, २०१३. पृष्ठ क्रमांक २१.
- ३. किता , पृष्ठ क्रमांक , २७.
- डॉ.शरद सिंह, डॉ. आंबेडकर का स्त्री विमर्श , भारत बुक सेंटर, लखनऊ २०१३. पृष्ठ क्रमांक. ७८.
- मून मीनाक्षी, फुले आंबेडकर स्त्री चळवळ, समता प्रकाशन नागपूर, २०१४ पृष्ठ क्रमांक ७८.
- ६. डॉ. कठारे अनिल,उपरोक्त , पृष्ठ क्रमांक २४ .
- ७. संपा. भागवत वंदना, उपरोक्त पृष्ठ क्रमांक ४५.
- ८. कित्ता , पृष्ठ क्रमांक , २१.





## शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघाचे विद्वत्प्रमाणित

# शिविम संशोधन पत्रिका

(Peer Reviewed Referred Research Journal) ISSN No. 2319-6025

(विद्यापीठ अनुदान आयोग नवी दिल्ली मान्यता अ. क्र. ६४१७५)

वर्ष बारावे : अंक पस्तीसावा जुलै-ऑगस्ट-सप्टेंबर २०२३

# भारत आणि मॉरिशस आंतरसांस्कृतिक संबंध विशेषांक भाग १

- संपादक नंदकुमार मोरे
- अतिथी संपादक •

प्रकाश दुकळे । भरत जाधव । मांतेश हिरेमठ

• संपादक मंडळ •

जयवंत दळवी । देवानंद सोनटके । सुभाष पाटील । बळवंत मगद्म

• प्रकाशक •

#### भरत जाधव

अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर द्वारा : द्वारकाधिश, साईनगरी, नागठाणे, ता. जि. सातारा ४१५५१९

#### • मुद्रक •

भारती मुद्रणालय ८३२, ई वॉर्ड, शाह्पुरी ४थी गल्ली, कोल्हापूर. फोन नं.: ०२३१-२६५४३२९

ही संशोधन पत्रिका प्रकाशक डॉ. भरत जाधव, यांनी शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर यासाठी भारती मुद्रणालय, कोल्हापूर येथे छापून द्वारकाधिश, साईनगरी, नागठाणे,ता. जि. सातारा ४१५५१९येथे प्रकाशित केली. या पत्रिकेत प्रकट झालेल्या मतांशी संपादक, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

# अनुक्रमणिका

| ۶.  | मॉरिशस, शेतमजूर आणि महात्मा गांधी :  | ०४  |
|-----|--|-----|
|     | प्राचार्य डॉ. संजय पाटील   |     |
| ٦.  | महात्मा गांधीजींचे वर्धा शिक्षण योजनेतील योगदान:   | 88  |
|     | डॉ. राजश्री निकम   |     |
| ₹.  | गांधीविचार : प्रभाव आणि सद्यस्थिती : डॉ. विजयश्री गवळी                                   | 38  |
| ٧.  | मॉरिशसमधील मराठी भाषिक संघाचे मराठी भाषेच्या   | 28  |
|     | वृद्धीसाठीचे कार्य : डॉ. लक्ष्मण शिंदे   | , - |
| ۴.  | विपश्यना आणि मॉरिशस : प्राचार्य डॉ. अशोक दौंड  | 38  |
| ε.  | संत तुकारामांचा अभंग व गांधीजींच्या तीन माकडांची कथा :                                   | 38  |
|     | प्रा. (डॉ.) सुभाष आहेर   | 40  |
| 9.  | अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबरीतील पर्यावरणाची विविध रूपे :                               | 38  |
| ٠.  | प्रा. विपिन वैराट  | 52  |
| ,   |  |     |
| ۷.  | निराला के काव्य में प्रकृति चित्रण : डॉ. लक्ष्मी झमन                                     | ४६  |
| 9.  | मॉरिशस में हस्तलिखित 'दुर्गा पत्रिका' (१९३५) के  | 43  |
|     | सामाजिक सांस्कृतिक पहलू : डॉ. अलका धनपत  |     |
| 90. | वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी उपन्यास : प्रा. (डॉ.) संजय चिंदगे                    | 46  |
| ??. | मॉरिशस में बसता है मिनी भारत! : डॉ. चंदा सोनकर   | ६४  |
| 12. | Equivalence of Festivals in India and Mauritius With                                     | 69  |
|     | Special Reference to Maha Shivratri, Ganesh Festival                                     |     |
|     | and Dipawali : Prof. Dr. Savita Vhatkar  |     |
| 13. | A Socio Cultural Study of India and Mauritius :  | 75  |
|     | Dr. Hemangini Mane   |     |
| 14. | Interpreting Gandhi's Ideal Polity in Hind Swaraj:                                       | 79  |
| 15  | Dr. Ankush Belwatkar   | 0=  |
| 15. | Foursite of Mahatma Gandhi in Bringing Women in  | 85  |
| 16. | India's freedom struggle: Dr. Sunanda Shelke   | 01  |
| 10. | Indo-Mauritian Cast System Reflection in<br>Nagaraj Manjule's Sairat : Dr. Mangal Londhe | 91  |
| 17. | Sinking Borders Expanding Identities Intercultural                                       | 95  |
| 17. | Narratives from Mauritius : Mrs. Vedika Hurdoyal   | )5  |
| 18. | A Study of Mahatma Gandhi's Autobiography:   | 101 |
|     | My Experiments with Truth : Dr. Neeta Jokhe  | 202 |
| 19. | A comparative Analysis of Indian Stock Market  | 105 |
|     | With Mauritius Stock Market: Dr. RajeshKumar Chetiwal                                    |     |
| 20. | Bridging Continents: Comparative Insights Into   | 111 |
|     | Indo-Mauritian Dalit Literary Discourse  |     |
|     | Mr. Mansing Vitthal Thombare   |     |
| 28. | राज्यस्तरीय चर्चासत्राचा अहवाल   | ११६ |

# मॉरिशियसमधील मराठी भाषक संघाचे मराठी भाषेच्या वृद्धीसाठीचे कार्य

## डॉ. लक्ष्मण सर्जेराव शिंदे

जगभरातील अनेक देशावरती इंग्लंड, फ्रान्स सारख्या युरोपियन साम्राज्यवादी देशांची सत्ता वर्षानुवर्षे होती. आपल्या सत्तेच्या सोयीसाठी या साम्राज्यवादी देशांनी त्या त्या वसाहतिक देशातील सामान्य लोकांचा उपयोग करून घेतला. सत्ता टिकावी म्हणून कधी एखाद्या वसाहतिक देशातील लोकांना सैनिक म्हणून आपल्या बाजूने दूरदूरच्या देशात नेऊन लढवले, तर कधी कष्टाची दुय्यम दर्जाची कामे करण्यासाठी गुलाम म्हणून वेगवेगळ्या देशात नेले. व्यापाराच्या सोयीसाठीही हे झालेले दिसते. भारत आणि मॉरिशियस हे दोन्ही देशही युरोपियन राष्ट्रांच्या अधिपत्याखाली होते. मॉरिशियस या हिंद महासागरात दूरवर असणाऱ्या बेटावरती लोकसंख्येची कमतरता होती. त्यामुळे या साम्राज्यवादी सत्ताधाऱ्यांना मॉरिशियसमध्ये मनुष्यबळाची प्रचंड कमतरता भासत होती.

१९व्या शतकाच्या सुरुवातीला हजारो भारतीयांना ऊसशेतीवर मजुरीसाठी येथे आणले गेले. तेव्हाच युरोपियन साम्राज्यशाही देशातील सत्ताधाऱ्यांनी कोकण किनारपट्टीवरील जंगलात दुर्गम भागात राहाणाऱ्या रोजगार नसणाऱ्या गरीब मराठी भाषिक भारतीयांना मॉरिशियसला नेण्यासाठी प्रवृत्त केले. अर्थात, आपली मायभूमी मातृभाषा हे सगळं सोडून कितीही प्रतिकूल परिस्थिती असली तरी दूरदेशी जाण्यास हे भारतीय लोक तयार नव्हते त्यावेळी मॉरिशियसमधील दगडांखाली सोने सापडते, अशी खोटी प्रलोभने दाखवून भारतातून विशेषतः महाराष्ट्रातील कोकणातून मराठी माणसाला मॉरिशियसला नेले गेले.

त्या काळात मुंबई हे मोठे व्यापारी बंदर होते. व्यापाराचे केंद्र होते. जहाजांची ये –जा तिथून सतत चालू असायची. अशाच एका जहाजातून १८३५ सालच्या दरम्यान सदर मराठी लोकांना मॉरिशसला नेले गेले.

भारतातून मॉरिशियसला पोहोचलेल्या लोकांना तिथे अर्थातच अनपेक्षित अनुभव आला. माघारी जाण्याचा कोणताही मार्ग शिल्लक नव्हता. तेव्हा तिथे पोहोचलेल्या मूळ भारतीयांच्या पहिल्या पिढीने प्रतिकूल परिस्थितीत कष्टाने आपले स्वतःचे अस्तित्व हळूहळू निर्माण केले. आपली मराठी संस्कृती, मराठी भाषा जमेल तशी टिकवून ठेवली. भाषा व संस्कृतीच्या माध्यमातून आपला इतिहास शेकडो वर्षे पिढ्यान्पिढ्या

स्पर्धा, निबंध स्पर्धांचा समावेश असतो. मॉरिशियन मराठी भाषिक कवींचे काव्यवाचन कार्यक्रमही घेतले जातात. ऑनलाइन फेसबुक कार्यक्रमही घेतले गेलेले आहेत. वर्षभर घेतलेल्या विविध कार्यक्रमांचा, स्पर्धांचा वार्षिक बक्षीस वितरण समारंभही होतो. हा मराठी भाषेच्या विकासासाठी प्रोत्साहन देणारा दर्जेदार कार्यक्रम आहे.

येणाऱ्या काळामध्ये एम. एस. यु. ला मराठीतील उत्तम उत्तम पुस्तकांचे संग्रह असणारे उत्कृष्ट ग्रंथालय तयार करायचे आहे. तसेच सुसज्ज अशी लॅंग्वेज लॅबही उभी करायची आहे.

. .

## Maharashtra Political Science and Public Administration Conference

Reg.No. MAH / 12-83 / Aurangabad F - 985

Volume - 12

No - 3

Issue - 40

Jan-April 2024

ISSN-2347-9639



# VICHAR MANTHAN



National Research Journal of Political Science and Public Administration (Peer Reviewed Journal)



महाराष्ट्र राज्यशास्त्र व लोकप्रशासन परिषदेची संशोधन पत्रिका



अथर्व।

मार्गदर्शक प्राचार्य डॉ. पी. डी. देवरे

संपादक प्राचार्य डॉ. प्रमोद पवार

प्राचार्य डॉ. मनोहर पाटील । प्राचार्य डॉ. बाळ कांबळे । डॉ. लियाकत खान । डॉ. विठ्ठल दिहफळे प्राचार्य डॉ. विलास आघाव । डॉ. संजय वाघ । डॉ. संभाजी पाटील । डॉ. वकार शेख Maharashtra Political Science & Public Administration Conference's

# VICHAR MANTHAN

National Research Journal of Political Science and Public Administration
(A Peer Reviewed Journal)

#### Peer Reviewed Committee

Prin. Dr. Pramod Pawar (Amalner) Email: pramodpawar1761@gmail.com

Prin. Dr. Manohar Patil (Dhule) Email: manoharpatil 123@gmail.com

Dr. Vitthal Dahiphale (Nanded)
Email: vithaldahiphale8@gmail.com

Dr. Sanjay Wagh (Kalyan) Email: smwagh2009@gmail.com

Dr. Viqar Shaikh (Jalgaon) Email: skviqar@rediffmail.com Prof. Dr. Ravindra Bhanage (Kolhapur) Email: ravindrabhanage@gmail.com

Prin. Dr. Bal Kamble (Karjat - Pune) Email: bal.kamble@yahoo.in

Dr. Liaqat Khan (Mumbai) Email: liyaqatkhan69@gmail.com

Dr. Sambhaji Patil (Shindkheda) Email : sspatil2011@gmail.com

Dr. Gautam Bhalerao (Jalgaon) Email: gdb5579@gmail.com

Dr. Sandip Nerkar (Amalner) Email: sbnpca@gmail.com

#### Guided by

#### Prin. Dr. P. D. Deore

 Shri Samarth Appartment, Chitrangan Soc., Savarkar Nagar, Gangapur Road, Nashik-13

Mob: 9423980457

#### **Managing Editor**

Mr. Yuvraj Mali (Jalgaon)

♦ Publishers ♦

#### Atharva Publications

#### Head Office:

Shop No. 2, 'Nakshtra' Apartment, Housing Society, Shahunagar, Jalgaon - 425001. Ph.No. 0257-2239666
- Branches -

New Delhi - 213, Vardan House, 7/28, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110002. Mob. 07503171077 Mumbai - Ashirwad Building, 1007, 10th floor, N.M. Nagar, Behind Tardeo Police Station, Tardeo, Mumbai - 400034. Mob. 9969392245

Pune - Dhayri, Benkar Nagar, Pune - 411041. Mob. 9834032015

'विचारमंथन' या संशोधनपत्रिकेत प्रसिद्ध झालेली मते संपादक, सहसंपादक, कार्यकारी संपादक आणि सल्लागार मंडळ यांना मान्य असतीलच असे नाही. या संशोधनपत्रिकेत प्रसिद्ध करण्यात आलेल्या लेखांतील लेखकांची मते ही त्यांची वैयक्तिक मते आहेत, तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी ज्या-त्या लेखकावर राहील.

मेमर्स अथर्व पब्लिकेशन्स्च्या वतीने कार्यकारी संपादक श्री. युवराज माळी यांनी शॉप नं. २, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाह्नगर हौिसंग सोसायटी, तेली समाज मंगल कार्यालयासमोर, जळगाव - ४२५ ००१ (महाराष्ट्र) येथे प्रकाशित केले व आविष्कार प्रिंटर्स, अयोध्यानगर, जळगाव येथे मुद्रित केले. मोबाइल : ९४०५२०६२३०. फोन : ०२५७-२२३९६६६.

| Vict | ar Manthan (A Peer Reviewed Journal) ISSN - 2347-9639 Vol- 12 No-3 Issue-40 JanApril 2024    |
|------|--|
| 38.  | जी-२० आणि भारत यांच्यातील सहसंबंधाचा अभ्यास१६३<br>- प्रा. समाधान नारायण दराडे                |
|      | विवेकाधिष्ठित लोकनिवड अधिकार आणि लोकशाही : एक निरीक्षण१६९<br>- डॉ. रेखा गंगाधरराव हिंगोले    |
| 34.  | भारतीय लोकशाही पुढील आव्हाने १६०<br>- प्रा. डॉ. प्रदीप जगताप                                 |
| ₹७.  | २१ व्या शतकातील भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन १७०<br>- डॉ. प्रशांत विधे |
| ₹८.  | बहुसांस्कृतिक आणि भारत   |
| 39.  | अनुसूचित जाती आरक्षणाचे उप-वर्गीकरण आणि फुले-आंबेडकरी परिप्रेक्ष्य१८७<br>- राहूल नरंगलकर     |
| 80.  | मराठा आरक्षण आंदोलनात मनोज जरांगे पाटील यांची भूमिका   |
|      | – डॉ. विलास एस. टाले   |
| ४१.  | प्रशासकीय नेतृत्वाचा अभ्यास२०५<br>- प्रा. डॉ. संभाजी संतोष पाटील                             |
| 82.  | भारत भाणि शेजारील राष्ट्रे (पाकिस्तान व चीन)२१८  |
|      | - डॉ. उर्मिला महेश चव्हाण  |
| 83.  | जी-२० परिषदेची वाटचाल आणि भारताची भूमिका   |
|      | - प्रा.डॉ.दत्ता कुंचेलवाड  |
| 88.  | भारतीय संविधान : अल्पसंख्याकांचे हक्क आणि सद्य परिस्थिती                                     |
|      | - प्रा.पंकज लक्ष्मण सोनवणे   |
| 84.  | भारतीय अर्थव्यवस्थेचा इतिहास२२:  |
|      | - प्रा. डॉ. जगदीश देशमुख   |
| ४६.  | म. गांधीजींचे ग्रामीण विकासासंदर्भातील विचार २२७   |
|      | - प्रा.डॉ. सचिन महादेव पाटील   |
| 86.  | भारताचे 'लुक ईस्ट ते ॲक्ट ईस्ट' धोरण२३३  |
|      | - प्रा.डॉ. राक्षसे सिद्धार्थ गुणाजी  |
| 86.  | समाजातील वंचित वर्ग आणि सर्व समावेशक लोकशाहीपुढील आव्हाने२४८                                 |
|      | - प्रा. सुनील लक्ष्मण नेवकर  |
| 89.  | The Role of Civil Society in Indian Democracy  |
| 40.  | Nature of Populaton in India : Changing Landscapes   |
| 48.  | Changing Nature of Political Elites and Economic Background:                                 |
|      | Case Study of Western Maharashtra  |
|      | and sugadevappa Neela  |

# भारत भाणि शेजारील राष्ट्रे (पाकिस्तान व चीन)

हाँ, उर्मिला महेश चव्हाण सहयोगी प्राप्ट्यापक, गुज्यशास्त्र विभाग, भिरज महाविद्यालय, मिरज

#### प्रस्तावना:

भारताच्या शेजारील राष्ट्रामध्ये पाकिस्तान, चीन, नेपाळ, बांगलादेश, म्यानमार, श्रीलंका, अफगाणिस्तान ही सात राष्ट्रे येतात. भारत आणि शेजारील राष्ट्रांचा अध्यास हा प्रस्तुत संशोधनाचा विषय असून या राष्ट्रांच्या धोरणांचा आणि कृतीचा अध्यास करणे त्याचबरोबर भारताचे या राष्ट्रांशी असणारे संबंध अध्यासणे हा प्रमुख उद्देश आहे. शोधनिबंधाची मर्यादा लक्षात घेता भारताच्या शेजारील पाकिस्तान व चीन या दोन राष्ट्रांचा अध्यास प्रस्तुत शोधनिबंधात करण्यात आला आहे.

## भारत आणि पाकिस्तान यांचे संबंध भारत पाकिस्तान मौगोलिक रचनाः

१९४७ साली ब्रिटिश अंमलाखालील हिंदुस्थानचे विभाजन होवून भारत व पाकिस्तान अशी दोन स्वतंत्रराष्ट्रे जगाच्या पटलावर उदयास आली. भारत हे एक धर्मनिरपेक्षप्रजासत्ताक राज्य म्हणून उदयास आले परंतु मुस्लिम अल्प संख्यांकासह ते निर्माण झाले. तर पाकिस्तान हे हिंदू अल्पसंख्य जनतेसह निर्माण झाले. याच पाकिस्तानातूनपुढे ३ डिसे. १९७१ साली बांगला देशाली निर्मिती झाली. भारत व पाकिस्तान ही दोन स्वतंत्र राष्ट्रे मुलतः धार्मिक आधारावर ब्रिटिशांनी निर्माण केली. फाळणी झाल्यानंतर हिंदू व मुस्लीम लोकांची देवाण -घेवाण झाली. फाळणी दरम्यान १० लाख लोक मारले गेले आणि दोन कोटी लोक आपआपल्या धर्मासाठी विखुरले गेले. भारत-पाकिस्तानची सीमारेषा इंग्लंडमधील विकल सर सिरील रैंड क्लीफ यांनीनिश्चित केली. १९४७ साली भारतात असलेली ५६५ संस्थाने संघराज्यात विलिन झाली. यातील जुनागढ, हैद्राबाद, काश्मीर ही संस्थाने सोड्न भारतात ५६२ संस्थाने सामिल झाली. भारताचे उपपंतप्रधान आणि गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल यांनी आणि व्हि. पी. मेनन यांच्या प्रयत्नाने भारतात अनेक राज्ये सामिल झाली. त्यावेळी काश्मीरचे राजे हरिसिंग तसेच जम्मू काश्मिरूचे नेते शेख अब्दुला आणि तेथील जनता यांच्यामळे काश्मिरचे

भारतात विलिनीकरण झाले. भारतीय राज्यघटनेच्या ३७० व्या कलमात जम्मू- काश्मीरला विशेष राज्याचा दर्जा देण्यात आला. परंतु पाकिस्तानने जम्मू-कारमीर प्रदेश हा आपल्याच प्रदेशाचा भाग आहे असा दावा मांडला काश्मीर मधील बहुसंख्य लोक मुस्लिम आहेत. भारत पाकिस्तान ही सीमारेषा सुमारे ४००० कि. मी. लांबीची असून काश्मीर, पंजाब, राजस्थान व गुजरात या राज्यांच्या सीमांना लागून आहे. १९४८ साली पाकिस्तानने कारिन खोऱ्यातील काही आक्रमण करून आपल्या भागात घेतला आज तो भाग पाकव्याप्त काश्मिर म्हणून ओळखतात पाकिस्तानने धर्मांधता व स्वार्थीवृत्तीने भारतावर १९४८ १९६५, १९६७ आणि १९७१ साली भारतावर आक्रमणे केली. भारताने प्रत्येक वेळी शांततेचे धोरण स्विकारले होते. भारत-पाकिस्तानच्या बाबतीतील नैसर्गिक घटकाचा विचार करता पाणी वाटपाच्या बाबतीतील मुद्दा अध्यासणे गरजेचे आहे. सिंधू नदी मानस सरोवर व कैलास पर्वताच्या उत्तरेस ५१८० मीटर्स उंचीवर उगम पावते. ती भारताच्या जम्मू-काश्मिर लडाख मधून वाहत जावून त्यानंतर पाकिस्तानात प्रवेश करते. भारताकडून येणाऱ्या झेलम, चिनाब, रावी, बियास, सतलज नदया पश्चिमेकडून मिळतात. इ.स. १९४७ साली स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर सिंधू नदीचा मोठा प्रदेश पाकिस्तानला मिळाला. परंतु सिंधू नद्याच्या मुख्य प्रवाहाचा भाग व झेलम, रावी, चिनाब या उपनद्याचा भाग भारताकडे आला त्यामुळे भारताने त्यावर विविध योजना उभारल्या व त्याचा परिणाम म्हणजे भारत पाकिस्तान वादउफाळून आला व १९ सप्टें. १९६० रोजी भारत- पाकिस्तान जलसंधी करार होवून पाकिस्ताननेहा आपल्या क्षेत्रात बांधकामे करावीत व त्यासाठी भारताने ६ कोटी २० लाख रु. दयावे असे ठरले.

भारत-पाक युद्ध सप्टें. १९६५ पासून मार्च १९६५ पर्यंत झाले. यात हजारो जवान मारले गेले. संयुक्त राष्ट्रसंघटना आणि अमेरिका यांच्या मध्यस्थीने या युद्धाला पूर्णविराम मिळाला त्यांनंतर १९६६ साली ताश्कंद करार त्याचबरोबर भारताने चीनच्या बाबतीत ठाम भूमिका पुढील बाबतीत घेतलेली दिसते त्यामध्ये चीन-पाकिस्तान आर्थिक महामार्गाला विरोध, चीनच्या बेल्ट अँड रोड इनिशिएटिव्ह प्रकल्पासाठी आयोजित जागतिक परिषदेला असलेली अनुपस्थिती, डोकलाम तिढयामध्ये बजावलेली ठोस भूमिका, हिंदी महासागरातील भारताच्या नौदलाची भूमिका महत्वाची आहे. चीनच्या 'वन बेल्ट वनरोड' ला विरोध करणारा एकमेव देश भारत आहे.

#### निष्कर्ष

भारताचे शेजारील देशामध्ये प्रामुख्याने पाकिस्तान व चीन या दोन राष्ट्रांचा अध्यास प्रस्तुत संशोधनातून केला असता पुढील निष्कर्ष मांडता येतील.

भारत-पाक संबंध मित्रत्वापेक्षा शत्रुत्वाचे अधिक वाटतात. भारताने सातत्याने पाकिस्तानशी सहकार्याची भूमिका घेतलेली दिसते. भारत-पाक संबंध सुधारण्यासाठी भारतातील पंतप्रधानांनी वेळोवेळी पाकिस्तानी नेतृत्वाशी करार केले परंतु पाकिस्तानने कारिगल युद्ध, जम्मू काश्मिरमधील दहशतवादी कारवाया यातून भारताला सातत्याने त्रासच दिलेला आहे. सध्या जम्मू काश्मिर आणि ३७० कलम रद्द करून भारताने जम्मू-काश्मिर बाबतीत घेतलेल्या भूमिकेवर पाकिस्तानने विरोध प्रकट केलेला आहे. तेव्हा एक शेजारील राष्ट्र म्हणून पाकिस्तानने भारताबाबत सलोख्याचे मित्रत्वाचे संबंध ठेवले पाहिजेत. दोन्ही राष्ट्रे एकमेकांशी संघर्ष करीत राहीले तर त्याच्यातील परराष्ट्र संबंध अधिकच बिघडत जातील

भारताचा दुसरे शेजारील राष्ट्र चीन अध्यासताना भारत चीन बाबत अनेक वेळा वाटाघाटी, करार आले पत् परिस्थीतीन रूप चीन स्वार्थीपणाने आपली भूमिका बदलत राहीला. चीन व भारत हे दोन्ही राष्ट्रे, प्रमुख प्रादेशिक गर्की असून जगातील सर्वात जास्त लोकसंख्या असलेली गर्ने आहेत. व्यापाराबाबत २००८ ते २०२१ या कालखंडात चीन हा भारताचा सर्वात मोठा भागीदार आहे. आतापर्यंत सातत्याने भारत व चीन याच्यातील सीमासंघर्षाबाबत झालेल्या वाटाघाटी, चर्चा अयशस्वी ठरल्या आहेत.

#### संदर्भ

- भराठी विश्वकोश भारत-चीन संघर्ष vishwakosh marathigov.in
- २) रायपूरकर वसंत-आंतरराष्ट्रीय संबंध
- कदम य. ना. -विसाव्या शतकातील जगाचा इतिहास फडके प्रकाशन, कोल्हापूर
- पाटील बी. बी. भारताचे परराष्ट्रीय घोरण, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर
- पहाराष्ट्र टाईम्स २० मे २०१८, वास्तववादातील भारत-चीन संबंध
- महाराष्ट्र टाईम्स पळसोकर आर. आर., भारत-पाकिस्तान संबंध अडथळ्याची शर्यत

# नुतन पीएच.डी. धारक परिचय

राज्यशास्त्र आणि लोकप्रशासन विषयांमध्ये विविध विद्यापीठात पीएच.डी. साठी संशोधन कार्य केले जाते. यातील ज्यांना पीएच.डी. प्राप्त होते त्यांच्या संशोधनाचा विषय, मार्गदर्शक, संशोधन क्षेत्र याविषयी विचारमंथनाच्या अंकात प्रसिध्दी देण्यात येईल. तरी २०२३ या वर्षातील पीएच. डी. धारकांनी आपली सविस्तर माहिती व सोबत विद्यापीठाच्या नोटीफिकेशनची सत्यप्रत विचारमंथनकडे पाठवावी.

Email :- vicharmanthanjournal@gmail.com